बिहार-रिसर्च-सोसायटी (पटना) द्वारा खोज में उपलब्ध

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

(छठा खण्ड)



प्रधान सम्पादक

आचार्य श्रीनलिनविलोचन शर्मा

सहायक सम्पादक

श्रीरामनारायण शास्त्री

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्
पटना

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना-४

बिहार-रिसर्च-सोसायटी (पटना) द्वारा खोज में उपलब्ध

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

(छठा खण्ड)

प्रधान सम्पादक

आचार्य श्रीनलिनविलोचन शर्मा

सहायक सम्पादक

श्रीरामनारायण शास्त्री

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना-४

प्रकाशक:
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना-४

© बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

प्रथम संस्करण,
विक्रमाब्द २०२१: शकाब्द १८८६; खृष्टाब्द १९६४
द्वितीय संस्करण,
मूल्य : १००/- रुपये मात्र

मुद्रक:
राष्ट्रीय प्रेस
नयाटोला, पटना-४

वक्तव्य

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के खोज-विवरण के इस छठे खण्ड के द्वितीय संस्करण को प्रस्तुत करते हुए हमें अतिशय प्रसन्नता हो रही है । जैसा कि इसके प्रथम खण्ड की भूमिका में उल्लिखित है कि परिषद् के उद्देश्यों में प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का प्रकाशन उस काल के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को समझने के लिए होना था जिसमें रामजन्म, हरिचरित, दरियाग्रन्थावली आदि का प्रकाशन हुआ । इनके अतिरिक्त अन्य स्थानों से भी हस्तलिखित पोथियों के विवरण संकलित कर उनका प्रकाशन कई खण्डों में हुआ जो शोधार्थियों के लिए आज भी उतना ही अनिवार्य है ।

हस्तलिखित पोथियों का यह विवरण छठे खण्ड के रूप में प्रकाशित होनेवाला द्वितीय संस्करण है । इसकी उपयोगिता स्वत: प्रमाणित है । तत्कालीन निदेशक डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र माधव ने अपने वक्तव्य में ग्रन्थ के विषय की विस्तृत जानकारी दे दी है ।

इसका पुनर्मुद्रण शीध्र और व्यवस्थित कर पाने में मुद्रक हमारा प्रकाशन विभाग, प्रूफ संशोधक तथा शोध विभाग का पूर्ण सहयोग रहा मैं उन सबको अपना आभार व्यक्त करता हूँ । मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इसका संस्करण का उपयोग अधिकाधिक शोधार्थियों द्वारा किया जायेगा । अस्तु

डॉ० जयकृष्ण मेहता
निदेशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

वक्तव्य

"वन्द्य: कोऽपि सुधास्यन्दास्कन्दी स सुकवेर्गुणा:।
येनायाति यश:काय: स्थैर्य स्वस्य परस्य च।।

x x

ग्रपारे काव्यसंसारें कविरेक: प्रजापति:।
यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्त्तते।।"

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के खोज-विवरण के इस छठे खण्ड को ग्रनुसन्धित्सु विद्वज्जनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें ग्रतिशय प्रसन्नता हो रही है। परिषद् के प्रारम्भ-काल से ही इसके उद्देश्यों में 'महत्त्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित पोथियों ग्रौर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व की दुर्लभ प्रकाशित पुस्तकों के ग्रन्वेषण तथा प्रकाशन की समुचित व्यवस्था करना' रहा है। ग्रतएव, परिषद् के स्थापना-काल से ही प्राचीन हस्तलिखित पोथियों, दुर्लभं मुद्रित पुस्तकों तथा ग्रलभ्य पत्र पत्रिकाग्रों के ग्रन्वेषण, संकलन, ग्रन्थ विवरण प्रकाशन और ग्रन्थानुसंधान का महत्त्वपूर्ण कार्य प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग के तत्त्वावधान में होता रहा है।

भारत में प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के संकलन, खीज-विवरण-प्रकाशन ग्रौर विवरणात्मक सूची-सम्पादन का श्रीगणेश पाश्चात्य देश-निवासी कीलहार्न, बूलर, पीटर्सन, बरनेल ग्रादि तथा भारतदेशवासीं भंडारकर प्रभृति ग्रनुसन्धानप्रवण विद्वानों के सम्पर्क से हुग्रा। पूना, गायकबाड़, मद्रास, बंगाल ग्रौर राजस्थान के शोध-संस्थानों, एशियाटिक सोसायटी जैसे शोध-प्रतिष्ठानों द्वारा विहित ख़ोज के ग्राधार पर संग्रह प्रकाशित किये गये। ग्राफ्रेख्त साहब का बृहत् परिचयात्मक विवरण-संकलन 'कैटेलोगस कैटेलोगोरम' के नाम से जब ग्रनुसंधान जगत् में प्रस्तुत हुग्रा, तब ग्रनेकानेक संस्कृत, पालि, प्राकृत, ग्रपभ्रंश तथा बौद्ध-जैनसाहित्य के ग्रज्ञात ग्रन्थकार ग्रालोक में ग्राये। फ़लस्वरूप, विविध ग्रन्थों एवं उनके लेखकों के स्थितिकाल तथा विभिन्न तत्त्वों के रूप परिवर्त्तित हुए हैं।

हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों के संकलन तथा सुव्यवस्थित रूप से ग्रन्थ-विवरणों के प्रकाशन का सर्वप्रथम प्रयत्न सन् १८०० ई० में काशी-नागरी प्रचारिणी सभा ने किया। बाद में राजस्थान के ग्रनेक शोधपीठों द्वारा यह महत्त्वपूर्णा कार्य सम्पादित हुग्रा। प्रयागस्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से भी संकलित पाण्डुलिपियों की बृहदाकार सूची प्रकाशित हुए है।

बिहार में यह कार्य बीसवीं शती के प्रारम्भ में, दरभंगा-राज-पुस्तकालय में, डॉ० गंगानाथ झा के तत्त्वावधान में मिथिला ग्रौर नेपाल में हुग्रा था। उस खोज के परिणाम से महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री प्रभृति विद्वानों ने लाभ उठाया था। तत्पश्चात् पटना

की बिहार-रिसर्च-सोसायटी, ग्रारा की नागरी-प्रचारिणी-सभा, गया का मन्नू लाल पुस्तकालय, भागलपुर के भगवान पुस्तकालय तथा पटना सिटी के श्रीचैतन्य पुस्तकालय ने भी पुरानी पोथियों की खोज ग्रौर संकलन का कार्य ग्रारम्भ किया। इन संस्थानों की खोज एवं संग्रह के फलस्वरूप सहस्त्रों पुरानी पोथियाँ बिहार में प्रकाश में ग्राई। किन्तु, इन पोथियों के सार्वजनिक सदुपयोग की कमी समुचित व्यवस्था न हो सकी। बिहार-रिसर्च-सोसायटी से संस्कृत-भाषा के ग्रन्वेषित ग्रन्थों के विवरण चार खण्डों में प्रकाशित हुए। किन्तु, गवेषणा-कार्य में उनसे सहायता लेने की भावना ग्रथवा उनके उपयोग की प्रवृत्ति का सर्वथा ग्रभाव ही देखा गया।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तत्त्वावधान में हस्तलिखित पोथियों के संग्रह तथा ग्रनुसंधान का कार्य सन् १९५१ ई० के फरवरी-मास से प्रारम्भ हुग्रा। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के ग्राधार पर परिषद् में जो शोधकार्य हुए हैं ग्रौर हो रहे हैं, उनके परिणामस्वरूप बिहार के सन्तकवि दरियादास की ग्रन्थावली, संरभंग-सम्प्रदाय के सन्तों की वाणियाँ, लालचदास-रचित हरिचरित ग्रादि प्रकाशित हुए हैं। साथ ही, बिहार के सूफी कवि किफायतुल्ला-रचित प्रेमाख्यान 'पोथी विद्याधर', सूरजदास-कृत 'रामजन्म', देवीदास-लिखित 'पाण्डवचरितार्णव', हलधरदास विरचित 'सुदामाचरित', डुमराँव (शाहाबाद) के राज्याश्रित कवि चन्द्रमौलेश्वर-रचित 'उदवन्तप्रकाश' ग्रादि ग्रन्थों पर ग्रनुशीलन हो रहा है, जो कमशः यथावसर प्रकाशित होंगे।

परिषद् के संग्रहालय में संकलित हिन्दी-संस्कृत-पोथियों के विवरणात्मक परिचय चार खण्डों में प्रकाशित हुए हैं। गया के श्रीमन्नू लाल पुस्तकालय तथा पटना सिटी के श्रीचैतन्य पुस्तकालय में संगृहीत पोथियों का भी परिचयात्मक विवरण दूसरे खण्ड के रूप में प्रकाशित हुग्रा है। बिहार-रिसर्च-सोसायटी, पटना के तत्त्वावधानं में ग्रन्वेषित नागरी ग्रौर मैथिली-लिपियों में लिखित प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के यह विवंरण ग्राज छठे खण्ड के रूप में प्रकाशित हो रहा है। इसमें इकहत्तर ग्रन्थकारों की छियानब्बे कृतियों पर एक सौ तैतालिस (१४३) पोथियाँ विवृत हुई हैं। चौंसठ ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय यथा स्थान पादटिप्पणियों में ग्रंकित है। इस विवरण में सोलह नवीन ग्रन्थकार—सुलोचन, ग्रादिनाथ, श्रीधर झा, लक्ष्मीपति, तुलसीदास, देवीचन्द, गंगादास, भिक्षु, नान्हा व्यास, बुनीलाल, भगवतनारायण, लालकवि, साहकवि, वैद्यनाथ, गोकुलानन्द, जयकृष्णा—ग्रन्वेषण-क्रम में प्राप्त हुए हैं। इनके सम्बन्ध में ग्रभी पर्याप्त ग्रनुशीलन की ग्रपेक्षा है। विवरण के ग्रन्त में चौथे परिशिष्ट में 'महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा ग्रन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाग्रों में उनके उल्लेख का विवरण' दे दिया गया है, जो निःसन्देह पर्याप्त परिश्रम से तैयार किया गया है।

ग्रन्त में, इस बिहार-रिसर्च-सोसायटी, पटना के मन्त्री डॉ० श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद सिन्हा, एम्०ए०, पी-एच्०डी० के विशेष कृतज्ञ है, जिनके सत्प्रयास से ही उक्त सोसायटी की २ जून, १८५९ ई० की कौन्सिल में, निश्चय-संख्या ५ के ग्रनुसार, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् द्वारा इस खोज-विवरण के प्रकाशन की योजना स्वीकृत हुई। तदनुसार, रोमन-लिपि में लिखित पाण्डुलिपि हमें मिली।

हमें इस बात का हार्दिक खेद है कि इस खण्ड के प्रकाशन के पूर्व ही इसके प्रधान सम्पादक तथा शोध-विभागों के अध्यक्ष आचार्य श्रीनलिनविलोचन शर्मा का आकस्मिक और असामयिक निधन हो गया। स्वर्गीय शर्माजी के तत्त्वावधान में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग के प्रधान अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने इसके लेखन में योग्यता, लगन और शोधकुशलता का परिचय दिया है। हम प्रधान सम्पादक के साथ ही श्रीशास्त्री को भी इसके लिए धन्यवाद देते हैं। विश्वास है, भविष्य में भी इस विभाग द्वारा-अधिकाधिक शोध-सामग्री हिन्दी-जगत् को प्राप्त होगी।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
वसन्तपञ्चमी, २०२० वि०

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'
निदेशक

सम्पादकीय

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तत्त्वावधान में, उसके संस्थापन के प्रारंभ से ही, प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के संकलन, ग्रन्वेषण तथा ग्रनुसंधान का महत्त्वपूर्ण कार्य संपन्न होता रहा है। परिषद् के इस विभाग की ग्रोर से शोध के परिणामस्वरूप ग्रद्यावधि ग्रनेक ग्रज्ञात कवि तथा उनकी रचनाएँ प्रकाश में ग्राई हैं। हिन्दी ग्रौर संस्कृत के संकलित प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों तथा विभिन्न ग्रन्थालयों में संगृहीत पुरानी पोथियों के जो विवरण परिषद् की ग्रोर से मुद्रित हुए हैं, वे ग्रनुसन्धित्सु विद्वानों के लिए लाभप्रद सिद्ध हुए हैं।

शोध-विभाग की ग्रोर से ग्रबतक प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के विवरण पाँच खण्डों में प्रकाशित हो चुके हैं। परिषद् में संगृहीत हिन्दी ग्रौर संस्कृत के ८३१ (हिन्दी ५६९+ संस्कृत २६२) प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के विवरण तथा उनके रचयिताग्रों के संक्षिप्त परिचय (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण: पहला, तीसरा, चौथा ग्रौर पाँचवाँ खण्ड) प्रकाशित हो चुके हैं। इसके ग्रतिरिक्त मन्नूलाल पुस्तकालय, गया ग्रौर चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी के १२७ ग्रन्थों के विवरण तथा ग्रन्थकारों के परिचय (दूसरा खण्ड) भी छप चुके हैं।

बिहार-रिसर्च-सोसायटी के ग्रन्वेषक द्वारा बिहार-राज्य से विभिन्न व्यक्तियों के पास संगृहीत हिन्दी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के विवरण संकलित किये गये थे। ये विवरण सोसायटी द्वारा ग्रद्यावधि प्रकाशित नहीं हुए हैं। किन्तु, ये भी पूर्वोक्त खोज-विवरणों के समान ही ग्रनुसंध ान-ग्रनुशीलन में संलग्न विद्वानों के लिए उपयोग सिद्ध होंगे। प्रस्तुत खोज-विवरण में हिन्दी के ७८ ग्रन्थों के विवरण हैं। विवरण के साथ ही टिप्पणी में ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है ग्रौर ग्रन्य खोज-विवरणों में उनसे संबद्ध सूचनाग्रों का उल्लेख भी कर दिया गया है। प्रसिद्ध तथा मान्य ग्रन्थकारों के रचनाकाल 'प्रसिद्ध' लिखकर निर्दिष्ट हुए हैं।

इस विवरण में ७३ ग्रन्थकारों के ७८ ग्रन्थों के विवरण दिये गये हैं। ग्रज्ञात ग्रन्थकारों द्वारा रचित १७ पोथियाँ भी इसमें विवृत हुई हैं, जिनका परिचय परिशिष्ट १ में दे दिया गया है। इस खोज के फलस्वरूप जिन ११ नये ग्रन्थकारों का पता चला है, उनसे संबद्ध टिप्पणियाँ भी यथास्थान दी गई हैं। बिहार के ७ नवोपलब्ध ग्रन्थकार ग्रनुसंधेय हैं। प्रस्तुत विवरण में, जिन ग्रन्थों के विवरण दिये गये हैं, उनके ग्रंथ-संकलन-स्थान के पते भी दे दिये गये हैं, जिनसे ग्रनुसन्धित्सु उन स्थानों पर जा-जाकर ग्रन्थ देख सकें-यदि वे ग्राज भी नष्ट न हुए हों।

इस विवरण को परिषद द्वारा प्रकाश में लाने का श्रेय बिहार-रिसर्च-सोसायटी (पटना) के मंत्री, डॉ० बी० पी० सिन्हा को है, जिन्होंने हमारे अनुरोध पर, इसे प्रकाशनार्थ दिया है। उक्त शोध-संस्थान के अन्वेषक, जिन्होंने सपरिश्रम इस खोज-विवरण को तैयार किया था, धन्यवादार्ह हैं। परिषद् के शोधसहायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने इसे प्रस्तुत करने में पर्याप्त परिश्रम तथा अपनी अनुसंधान-प्रवीणता का परिचय दिया है।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के विद्वान तथा अनुसंधान-अनुशीलनप्रेमी संचालक डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस विवरण के संपादन तथा प्रकाशन के लिए आवश्यक सुविधाएँ प्रदान की हैं।

महाशिवरात्रि
१८८२ शकाब्द

नलिनविलोचन शर्मा
विभागाध्यक्ष
प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग

संकेत-विवरण

वि० सं० — विक्रम-संवत्

क्र० सं०— क्रम-संख्या

वि० — विषय

ग्रं० सं० — ग्रंथ-संख्या

प० सं० — पत्र-संख्या

फ० — फसली सन्

ग्रा० — ग्राकार

ई० — ईसवी सन्

ल० सं० — लक्ष्मण-संवत्

खी० वि० — खोज-विवरणिका

र० का० — रचनाकाल

लि० का० — लिपिकाल

पृ० सं० — पृष्ठ-संख्या

प्र० पृ० पं० — प्रतिपृष्ठ पंक्तियाँ

खो० वि० ग्रं० — खोज-विवरण-ग्रंथ

बि० रा० भा० प० — बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

का० ना० प्र० स० — काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा

पा० लि० — पाराडुलिपियाँ (हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग का प्रकाशन)

रा० के जै० शा० भं० की० ग्रं० सू० — राजस्थान के जैनशास्त्र-भंडारों की ग्रंथसूची

रा० में हि० के ह० लि० ग्रं० की खो० — राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज

खो० वि० ग्रं० — खोज-विवरण-ग्रंथ

बिहार-रिसर्च-सोसायटी (पटना) द्वारा खोज में उपलब्ध

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

(छठा खण्ड)

पोथियों का विवरण

१. अङ्कविलासः ग्रन्थकार–सुलोचन[1]। लिपिकाल–×। रचनाकार–११४६ फ०। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–२०। प्र० पृ० पं० लगभग– १२। प्रति पंक्ति अक्षर–४८। आकार-१२$\frac{1}{2}$"× ७$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन। भाषा–हिन्दी। लिपि–मैथिली–नैपाली। विषय–गणित। प्रातिस्थान–पं० बामदेव मिश्र, पकरी-वसंतपुर (मुजफ्फरपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ[2]–श्री गणेशाय नमः।। अथअङ्क विलास लिख्यते।।

दोहा– गुरु गणपति गिरिजारमण गौरिज दक्षिण वाम ।
प्रनमतहिना गुरुज्ञानी जन चितगहि सीताराम ।।१।।
सुकृद दमनोक्तव गथ हव भाषव मति अनुसार ।
किजीये कृपा सकल मिलि कलि जस होये विस्तार ।।२।।
हृदये सुधासम अमरता पृति प्रीष्ठी श्री जुक्त ।
चहये लहौं सो बुद्धि पद होई सकल सुष भुक्ति ।।३।।
मधुप चरण कुती रूद्रक सन कसलिसभजान ।
पौषध बल दुजबार बुद्ध ग्रन्थहि प्रगट वषान ।।४।।

छन्द– प्राच दिसि सोहये गाधिराज तनेवा के धार,
पश्चिम विराजे मालीप्रामी पुनिताई गाईवे ।
उत्तर पहाड़ सरहद जगजान असर,
दक्षिण लौ देवसरि जाते गति पाईये ।
मद्ध में विराजे नृप जनक सुधाम गाम,
तुलये नहि उपाम तीनों लोक धाईये।
जुसुति स्त्रिसेति जापव सिद्धि नव,
बनिन्ध तापये ऐसै मेथिली के बलिहारि जाईये ।।१।।

---

१. खोज में नवोपलब्ध; अन्य खोज-विवरणों तथा हिन्दी-साहित्येतिहास में अनुल्लिखित। विशेष विवरणीय।

२. ग्रंथ के प्रारंभ में मिथिला-राज्य का वर्णन, है। प्रथम कार्नाट-वंश, ओइनिवार-वंश के सम्बन्ध में चर्चा है। तदनन्तर खण्डवला-वंश वर्णित है। वंश-वर्णन-प्रसंग के पश्चात् ग्रंथकार ने ग्रंथ का विषय–व्यवहारगणित–लिखा है। मिथिला-राज्य की सीमा का जो संकेत है, वह प्राचीन प्रतीत होता है।

अन्त की पंक्तियाँ–

चौपाई– सात माने जिनि तिज्या जब हीये । ताके निरख होय मन दोये ।।
सोदये विजरहहु सभ यङ्क । भाग टका गुणि होहु निसङ्क ।।
पांच दो गुण विजलेहू । सुलोचन यङ्क लिख लेहू ।।
वाकि धारा सर दहाये । गुरु ज्ञानि जन समुझि बुझाये ।।

पुष्पिका–x।

२. अनवरचन्द्रिका: ग्रन्थकार–x। लिपिकार–x। रजनाकाल–x। लिपिकाल–x। पत्र सं०–९७। प्र० पृ० पं०–६ । प्र० पं० अ०–४४ । आकार–११$\frac{1}{2}$" ३$\frac{1}{2}$"। दशा–सादा कागज । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय-अलंकारशास्त्र। प्राप्तिस्थान–पं० कारी मिश्र, रानी टोला, दरभंगा।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। अथ अनवरचन्द्रिका लिख्यते ।।
सुमुख सुखद शशिधरन धीर हेरम्ब अम्बसुत ।।
एकदन्त गजकरन सुरन दाइक सिन्दुरजुत ।।
कपिल विनाइक विकट विघन नाशक गणाधिपति ।।
धूमकेतु अरधरन धरम दुखहरन अगति गति ।।
प्रभु लम्बोदर वारण वदन विधमय बुधिवेदमये ।
सु..............इच्छत करन जय जय जय संकर तनय ।।१।।

अन्त की पंक्तियाँ– निजमति माफिक मैं कियो कविमत को परकास ।
लीजो समुझि सुधारिके जिनिकें बुद्धि विलास ।।७१४।।

पुष्पिका–इति श्री अनवरचन्द्रिका समाप्ता ।।

२.(क) अनवरचन्द्रिका: ग्रन्थकार–x। लिपिकार–x। रचनाकाल–x। लिपिकाल–x। पत्र सं०–१५। प्र० पृ० पं०–१० । प्र० पं० अ०–४२ । आकार–१२$\frac{1}{4}$" ५" । दशा–प्राचीन, खण्डित । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली–नैपाली । विषय-अलंकारशास्त्र। प्रासिस्थान–पं० शिवदत्त झा, बरारी, परसरमा (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय ।। अथ अनवरचन्द्रिका लिख्यते ।।
छप्पै ।। सुमुख सुखद ससिघरनधार हेरम्ब अम्बसुत ।।
एकदन्त गजकरन सरन दायक सिन्दुरजुत ।।
कपिल विनायक विकट विघन नासक गनाधिपति ।।
धूमकेतु धुर धरन धरनदुषहरन अगतिगति ।।

पुनि लम्बोदर वारनवदन विधामय बुधिवैदमय ।

सुभग करन दास इच्छित करन जय जय जय शङ्करतनय ।।१।।

अन्त की पंक्तियाँ– लयो सुमन ह्वै है सुफल आतपरोस निवारि ।

वारीबारी आपनी सीची सुह्रदता वारि ।।२९०।।

ए री पहतेरी दई क्यो हूं पान ।

चितै कितै ते ले धरे इतो ईते नतमान ।। २९२।।

तो सराज्यो अ०..................

पुष्पिका–x।

विषयवस्तु–साधारण नायिका-वर्णन, शिखनखान्तवर्णन, मुग्धादिनायिकावर्णन ।

३. अनेकार्थमञ्जरी : ग्रन्थकार–नन्दास[1] । लिपिकार – x । रचनाकाल-प्रसिद्ध । लिपिकाल-१८१२ श०=१२९७ फ०। पत्र सं०–५। प्र० पृ० पं०–८। प्र० पं० अ०–५८ । आकार–१३½" x ४½"। दशा–प्राचीन, पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि–मैथिली। विषय-कोष । प्राप्तिस्थान–पं० कामताकान्त पाठक, पुपरी (मुजफ्फरपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। अथोनेकार्थ लिख्यते ।। दोहा ।।

जो प्रभु जोतिमय जगतमय कारण करत अभेद ।

विघ्न हरण सब सुख करण ते नामो ता देव ।। १।।

एक वस्तु अनेक ह्वै जगमगात जगधाम ।।

जिस कञ्चन के किङ्किनी कङ्गन कुण्डल नाम ।। २ ।।

उच्चरस कति नहि संस्कृत ओ समुझत असमर्थ ।

तिलनगिनन्द सुमत यथा भाषा कहें सुअर्थ ।। ३ ।।

गो शब्द ।गो इन्द्री दिव वाक जल सर्भवज्रवलीवर्द ।

गोधरा गोतिर, गोकिरण गोपालक गोविन्द ।। ४ ।।

सुरभि शब्द । सुरभिचन्दन सुरभिमृग सुरभि बहुर वसन्त ।

सुरभिचम्पक वन कहै जो जग करता कन्त ।। ५ ।।

अन्त की पंक्तियाँ– रस शब्द ।।

रस नवरस घृतरस विष अरु रसमीठ ।

सब रस को प्रेम रस जाके वश बलबीर ।।११४।।

---

१. अष्टछाप में से एक । प्रसिद्ध । १६२४ वि० के लगभग वर्त्तमान ।

अन्त की पंक्तियाँ–

चौपाई– सात माने जिनि तिज्या जब हीये । ताके निरख होय मन दोये ।।

सोदये विजरहहु सभ यङ्क । भाग टका गुणि होहु निसङ्क ।।

पांच दो गुण विजलेहू । सुलोचन यङ्क लिख लेहू ।।

वाकि धारा सर दहाये । गुरु ज्ञानि जन समुझि बुझाये ।।

पुष्पिका–x।

२. अनवरचन्द्रिका: ग्रन्थकार–x। लिपिकार–x। रजनाकाल–x। लिपिकाल–x। पत्र सं०–९७। प्र० पृ० पं०–६ । प्र० पं० अ०–४४ । आकार–११½" ३½"। दशा–सादा कागज । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय-अलंकारशास्त्र। प्राप्तिस्थान–पं० कारी मिश्र, रानी टोला, दरभंगा।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। अथ अनवरचन्द्रिका लिख्यते ।।

सुमुख सुखद शशिधरन धीर हेरम्ब अम्बसुत ।।

एकदन्त गजकरन सुरन दाइक सिन्दुरजुत ।।

कपिल विनाइक विकट विघन नाशक गणाधिपति ।।

धूमकेतु अरधरन धरम दुखहरन अगति गति ।।

प्रभु लम्बोदर वारण वदन विधमय बुधिवेदमये ।

सु..............इच्छत करन जय जय जय संकर तनय ।।१।।

अन्त की पंक्तियाँ– निजमति माफिक मैं कियो कविमत को परकास ।

लीजो समुझि सुधारिके जिनिकें बुद्धि विलास ।।७१४।।

पुष्पिका–इति श्री अनवरचन्द्रिका समाप्ता ।।

२.(क) अनवरचन्द्रिका: ग्रन्थकार–x। लिपिकार–x। रचनाकाल–x। लिपिकाल–x। पत्र सं०–१५। प्र० पृ० पं०–१० । प्र० पं० अ०–४२ । आकार–१२¼" ५" । दशा–प्राचीन, खण्डित । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली–नैपाली । विषय-अलंकारशास्त्र। प्रासिस्थान–पं० शिवदत्त झा, बरारी, परसरमा (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय ।। अथ अनवरचन्द्रिका लिख्यते ।।

छप्पै ।। सुमुख सुखद ससिधरनधार हेरम्ब अम्बसुत ।।

एकदन्त गजकरन सरन दायक सिन्दुरजुत ।।

कपिल विनायक विकट विघन नासक गनाधिपति ।।

धूमकेतु धुर धरन धरनदुषहरन अगतिगति ।।

पुनि लम्बोदर वारनवदन विधामय बुधिवैदमय ।

सुभग करन दास इच्छित करन जय जय जय शङ्करतनय ।।१।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– लयो सुमन ह्वै है सुफल ग्रातपरोस निवारि ।

वारीबारी ग्रापनी सीची सुह्वदता वारि ।।२९०।।

ए री पहतेरी दई क्यो हूं पान ।

चितै कितै ते ले धरे इतो ईते नतमान ।। २९२।।

तो सराज्यो ग्र०...................

पुष्पिका–x।

विषयवस्तु-साधारण नायिका-वर्णन, शिखनखान्तवर्णन, मुग्धादिनायिकावर्णन ।

३. ग्रनेकार्थमञ्जरी : ग्रन्थकार-नन्दास[1] । लिपिकार - x । रचनाकाल-प्रसिद्ध । लिपिकाल-१८१२ श०=१२९७ फ०। पत्र सं०–५। प्र० पृ० पं०–८। प्र० पं० ग्र०–५८ । ग्राकार–१३$\frac{1}{2}$" x ४$\frac{1}{2}$"। दशा–प्राचीन, पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि–मैथिली। विषय-कोष । प्राप्तिस्थान–पं० कामताकान्त पाठक, पुपरी (मुजफ्फरपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथोनेकार्थ लिख्यते ।। दोहा ।।

जो प्रभु जोतिमय जगतमय कारण करत ग्रभेद ।

विघ्न हरण सब सुख करण ते नामो ता देव ।। १।।

एक वस्तु ग्रनेक ह्वै जगमगात जगधाम ।।

जिस कञ्चन के किङ्किनी कङ्कन कुण्डल नाम ।। २ ।।

उच्चरस कति नहि संस्कृत ग्रो समुभत ग्रसमर्थ ।

तिलनगिनन्द सुमत यथा भाषा कहें सुग्रर्थ ।। ३ ।।

गो शब्द ।गो इन्द्री दिव वाक जल सर्भवज्रवलीवर्द ।

गोधरा गोतिर, गोकिरण गोपालक गोविन्द ।। ४ ।।

सुरभि शब्द । सुरभिचन्दन सुरभिमृग सुरभि बहुर वसन्त ।

सुरभिचम्पक वन कहै जो जग करता कन्त ।। ५ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– रस शब्द ।।

रस नवरस घृतरस विष ग्ररु रसमीठ ।

सब रस को प्रेम रस जाके वश बलबीर ।।११४।।

---

१. ग्रष्टछाप में से एक । प्रसिद्ध । १६२४ वि० के लगभग वर्त्तमान ।

स्नेह शब्द । तेलस्नेह स्नेहघृत बहुरयों प्रेमस्नेह ।

सो निजचरणन गिरिघरण नन्दलाल को देह ।। ११५ ।।

पुष्पिका– श्री नन्ददास कृता अनेकार्थमञ्जरी समाप्ता ।। शुभमस्तु ।। श्रीरस्तु ।

विषयवस्तु– ११५ दोहों में भाषा के अनेकार्थ शब्दों के पर्याय ।

३ (क) अनेकार्थध्वनिमञ्जरी: ग्रन्थकार–नन्ददास । लिपिकार–x । रचनाकाल– प्रसिद्ध । लिपिकाल–x । पत्र सं०–४ । प्र० पृ० पं०– १५ । प्र० पं० अ०–४६। आकार–$११\frac{१}{२}$" $४\frac{१}{२}$" । दशा–प्राचीन, पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि-मैथिली। विषय-कोष । प्राप्तिस्थान-पं० हरिहरदत्त झा, भेलाही, सुपौल (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ओ नमो गणेशाय ।

यो प्रभु जगत योतिमय करण कारण अभेद ।
अशुभ हरण सम शुभ करण नमो नमो तहि देव ।। १ ।।
एके वस्तु अनेकहय नगमति जगधाम ।
जिलि कञ्चनमत किङ्किनी कंकन कुण्डलनाम ।। २ ।।
उचरि सकत नहि संस्कृत अनसमुझत असमर्थ ।
तिनहितनन्द सुमति यथा भाषा अनेकार्थ ।। ३ ।।

अन्त की पंक्तियाँ– सनेह नाम ।।

तेल सनेह सनेह घृत बहुरो प्रेम सनेह ।
सो निज चरननि गिरिधर नन्ददास के देह ।
यो इह अनेका अर्थक पाठ सुनय नर कोई ।
ताको अनेका अर्थ यहि पूणी परमारर्थ होई ।।

पुष्पिका– इति श्री नन्ददास कृत अनेकार्थ मञ्जरी भाषा संपूर्ण समाप्ता । नमो भगवते वासदेवाय ।।

विषयवस्तु–भाषा में अनेकार्थशब्दनिर्णय ।

३(ख) अनेकार्थमञ्जरी: ग्रन्थकार–नन्ददास । लिपिकार–x । रचनाकाल– प्रसिद्ध । लिपिकाल– १७५७ श०= १२४३ फ० । पत्र सं०–८ । प्र० पृ० पं०– १०। प्र० पं० अ०–४० । आकार–१०" ४" । दशा–प्राचीन, पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि-मैथिली। विषय-कोष । प्राप्तिस्थान-पं० गोविन्द मिश्र, मनीगाछी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ओ नमो महागणेशाय ।। अथ अनेकार्थ ।। दोहा ।।

यो प्रभु जोतिमयजगतमय कारण करत अभेद ।
विघ्नहरण सबसुख करन तें नमो ता देव ।।

एकै वस्तु अनेक है जगमगात जगधाम ।

जिमि कंचन कै किङ्किनी कंकन कुण्डलनाम ।। २ ।।

उचर सकतिनहि संस्कृत औ समुझत असमर्थ ।

तिन लगिनन्द सुमति यथा भाषा करो सु अर्थ ।। ३ ।।

गो शब्द ।। गो इन्द्री दिव बाक् जल स्वर्ग वज्र बलीवर्द ।

गोधरा गोतीर गोकिरण गोपालक गोविन्द ।। ४ ।।

अन्त की पंक्तियाँ– स्नेह शब्द ।

तेलस्नेह स्नेहघृत बहुरयो प्रेमस्नेह ।

सो निजचरणन गिरिचरण नन्ददास को नेह ।। ११५ ।।

पुष्पिका– इति श्री नन्ददास कृता अनेकार्थमञ्जरी समाप्ता ।। शुभभस्तु ।। श्रीरस्तु ।। शाके १७५७ सन् १२४३ साल माघ शुक्ल पञ्चदश्यां कुजे: ।

३(ग) अनेकार्थध्वनिमञ्जरी: ग्रन्थकार–नन्ददास । लिपिकार–x । रचनाकाल– प्रसिद्ध । लिपिकाल– १७७१ श० । पत्र सं०–६ । प्र० पृ० पं०– १०। प्र० पं० अ०–४२ । आकार–१२" ४½" । दशा–प्राचीन, पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि-मैथिली। विषय-कोष । प्राप्तिस्थान-पं० भानुनाथ मिश्र, झंझारपुर, (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ओ नमो महा गणेशाय ।। अथ अनेकार्थ ।। दोहा ।।

यो प्रभु जोतिमय जगतमय कारण कहत अभेद ।

विन्घ हरण सब सुख करण तें नामो ता देव ।।

एके वस्तु अनेक है जगमगात जगधाम ।

जिम कञ्चन के किङ्किणी कंकन कुण्डलनाम ।।

अन्त की पंक्तियाँ–

स्नेह शब्द । तेलस्नेहस्नेहघृत बहुयो प्रेमस्नेह ।

सो निजचरणल गिरिधरण नन्ददास को नेह ।। ११५ ।।

पुष्पिका– इति श्री नन्ददासकृत अनेकार्थ मञ्जरी समाप्ता ।। शुभमस्तु ।।

श्रीरस्तु ।। शुभशाके कायकलत्रकाम धरणीमासे बाहुलेक

ज्वदातदल के चन्द्रस्तिथौ अर्क्किजिः ।।

४. ग्रलङ्कारकरणाभरणा: ग्रन्थकार–x । लिपिकार–x । रचनाकाल– x । लिपिकाल–x। पत्र सं०–१० । प्र० पृ० पं०– १० । प्र० पं० ग्र०–३६। ग्राकार–१०" ४" । दशा–खणिडत । भाषा–हिन्दी । लिपि-मैथिली। विषय-ग्रलंकारशास्त्र । प्राप्तिस्थान–पं० गोविन्द मिश्र, मनीगाछी (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रो नमो गणेशाय । ग्रथालङ्कारकरणाभरण लिख्यते ।।

दोहा ।। यो मन ग्रनुराग्यो रहै सदा वावरी ग्रौर ।
यह मागो कर योरि कै राधा नन्द किशोर ।। १ ।।
कविता ग्ररुवनिता निके ग्रलङ्कार छवि देह ।
जैसे रैनिकनी शशि शोभा को देत ।। २ ।।
वरनन जाको कीजिये सो उपमेय प्रमान ।
उपमा जाको दीजिये सो कहिये उपमान ।। ३ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– वर्णश्लेष उदाहरण ग्रलंकार दोहा ।।
गुननिशनि हरिउरवसी ग्रगनधम गव ग्रति होति ।
नीके लिखो हगनिभरि सो ते मो हतिजोति ।। १५७ ।।

पुष्पिका–x ।

५. ग्रवधविलास: ग्रन्थकार–लालदास[१] । लिपिकार–जानकीदास । रचनाकाल– x। लिपिकाल–१८९० वि० । पत्र सं०–२०९ । प्र० पृ० पं०– १३ । प्र० पं० ग्र०–३६। ग्राकार–१४" ५$\frac{3}{8}$" । दशा– पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि–देवनागरी । विषय-कथा साहित्य । प्राप्तिस्थान-बा० चेतमनि सिन्हा, सुखपुरा (भागलपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नम: ।। ग्रथ ग्रवधविलास लिख्यते ।। सोरठा ।।
वन्दौ हरि ग्रौतार भक्त काज जे वपु धरे ।
दूरि कियौ भूभार ग्रसुर मारि सुर सुष दयो ।। १ ।।

---

१. ग्रयोध्या-निवासी सं० १७३२ के लगभग वर्त्तमान; कुछ काल तक बरेली में निवास; 'ग्रवध -क्लिास: 'बारहमासी' ग्रौर 'भरत को बारहमासी' के ग्रन्थकार। काशी-नागरी प्रचारिणी सभा के बारहवें खोज-विवरण (सन् १९२३–२५ ई०) में इनकी (पृ० सं० ८८, कवि सं० २३९) चर्चा ग्राई है। विवरण के ग्रनुसार ये बरेली में निवास करते थे । अवध-विलास की रचना इन्होंने अयोध्या में रहकर की थी । अयोध्या-निवास का काल १७०० वि०–१६४३ ई० है। उपर्युक्त रचना के 'ग्रतिरिक्त जनविवेक' मोहसंवाद नामक रचना भी खोज में मिली है। विशेष विवरण के लिए नागरी-प्रचारिणी सभा का खो० वि० दे० १९०९–११, ग्रं०सं० १६९; १९१७–९९, ग्रं० सं० १०७; १९२३–२५, ग्रं० सं० २३९; १९०९, ग्रं० सं० ३२; १९०६–८ ग्रं० सं० १९०; १९२६–२८, ग्रं० सं० २६२ । इस नाम के ग्रन्थकार भी हो चुके हैं, जो इनसे भिन्न हैं।

दोहा ।।

पंगुचरन गूंगे वचन नयन ग्रंध लहे लाल ।
वन्दो तेहि विधि रे स्रवन जौं हरि हो ही दयाल ।। २ ।।
श्वेत वसन धर गौरि सुत मुख प्रसन्न भुज चारि ।
विघ्न हरन मंगल करन लाल तासु उर धारि ।। ३ ।।
लाल भक्त भगवंत की कृपा कच्छुक जो होई ।
सज्जन मन रञ्जन कथा कहो सुनै सब कोई ।। ४ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–स्वर्गस्था कहे देवता हरषत हिये हुलास ।
धन्य मनुष्य जे लाल कृत सुनत है ग्रवधविलास ।।
ब्यास वसिष्ठ की वालमिक शुकदेव सेस महेश ।
महिमा ग्रवध विलास की कहे लाल सुरेश ।।

पुष्पिका–इति श्री ग्रवध विलासे बुद्धि प्रकाशे सब गुन रासे भक्त हुलासे पाप विनासे कृत लाल दासे ग्रन्थ संपूर्ण करनो नाम विशो विश्रामः ।। २० ।। शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ।। संवत् १८९० समै नाम चैत्र शुक्लएकादश्यां रविवासरे विलेख्य जानकीदास ।।

विषयवस्तु– जन्म से विवाह पर्यन्त राम-जीवन वर्णन ।

६. ग्रष्टाङ्गयोग: ग्रन्थकार–सुखदेवदयाल । लिपिकार–गंगासहाय × । रचनाकाल– × । लिपिकाल–× । पत्र सं०–१८ । प्र० पृ० पं०– १३ । प्र० पं० ग्र०–१८ । ग्राकार–८$\frac{१}{३}$" ५$\frac{१}{४}$" । दशा– पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि–देवनागरी । विषय-योगशास्त्र । प्राप्तिस्थान-बा० इन्दीवर झा, डीहटोला, पंडौल (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथ सातवाँ ध्यान का ग्रंग वर्णते ।
शिष्यवचन ।। दोहा ।।
ग्रंग धारणां का कहो सो धारां चितमाहि ।
ध्यान ग्रंग वरनन करो मैं इहूं चरनन छांहि ।। ९५ ।।
गुरु वचन ।।
चरन ध्यांस ग्रब ध्यान सुनि कहूं तोहि समुझाय ।
सुषदेव कहै सुनि सुनि समरू करो तहि चितलाय ।। ९६ ।।
ध्यान जु चार प्रकार के कहूंजु उनकी रीति ।
पदस्थ पिराडरूपस्थ है चौथा रूपातीति ।। ९७ ।।
ग्रथा पदस्थध्यान ।।
हिय पद पङ्कज ध्यान करि फिरिकरि सारी देह ।
नख सिख लो छवि निरपि कै चरनन में चित देह ।। ९८ ।।

अन्त की पंक्तियाँ– छप्पै ।। गुरु ब्रह्म गुरु विष्णु गुरु देबन के देवा ।
सर्व सिद्धि फल दैन गुरु तुम मुक्ति करेवा ।।
गुरु षेवट तुम दोहु करो भवसागर पारी ।
जीव ब्रह्म करि देत हरो तुम बाधा सारी ।।
श्री सुषदेव दयाल गुरु चरनदास के सीसपति ।
किरपाकरि आपनो कियो सब ही विधि से (हरि२) ।। ३३२ ।।

पुष्पिका–इति श्री गुरु चेले का विवाद अष्टांग योग संपूर्णम् ।। हस्ताक्षर गंगासहाय ।। श्लोक संख्या २५१ ।। श्रीरस्तु । शुभम् ।।

विषयवस्तु–ग्रंथकार सुखदेवदयाल और गुरु चरनदास के 'गुरुशिष्य–संवाद' क्रम से अष्टांगयोगचर्चा ।

७. कण्ठाभरणम् : ग्रन्थकार–दूलह[१] । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–१९१५ वि० । पत्र सं०–१८ । प्र० पृ० पं०– १४ । प्र० पं० अ०–१८। आकार–१७" × ५" । दशा– पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि–देवनागरी। विषय-अलंकारशास्त्र । प्राप्तिस्थान- पं० यशधर झा, चैनपुर, बरही (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। अथ कण्ठाभर्न लिख्यते ।। दोहा ।।
पारवती शिवचरन में कवि दूलह करि प्रीति ।
थोरे झमझमतें कहौं अलंकार की रीति ।। १।।
चरन वरन लछन ललित रचिरीझयौ करतारु ।
विनय भूषन नहि भूषई कविता बनिता चारु ।। २ ।।
दीरघमत सत कविन के अर्था से लघु तर्न ।
या तें कवि दूलह कियौ कविकुल कण्ठाभर्न ।। ३ ।।
जो इह कण्ठभरन को कण्ठकरे सुख पाई ।
सभा मध्य सोभा लहे अलंकृती ठहराई ।। ४ ।।

अन्त की पंक्तियाँ–सूरता उदारता कौ अदभूतवरनन मिथ्यारुप अपिउक्ति भावै सब लोग है।
दानन्हि कें पाचक,. कुबे करे भरें तेज सूषे सिन्धु तेरी रिपुरानी करिलोग है।

---

१. कवि कालिदास त्रिवेदी के पौत्र और कवि उदयनाथ त्रिवेदी के पुत्र; १८०७ वि० में लगभग वर्त्तमान, कानपुर (अंतरवेद) के निवासी । यह ग्रंथ काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा को भी खोज में मिला है। दे० खो० वि० १९०३, ग्रं०सं० ४३; खो० वि० १९०६-९, ग्रं० सं० १६२; खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० ७७ ।

नाम योग ग्रर्थ थापिये निरुक्ति जहाँ

सांचे गोपाल भयो जो रच्यौ राधे सौ वियोग है ।

प्रतिषेद विधिसिद्धि हेतु ग्रनुकथन सुजानियो

सुकवि ग्रागे भागिनि को भोग है ।।

पुष्पिका—इति ग्रर्थालङ्कार विधिसमाप्तम् ।।

विषयवस्तु—सोदाहरण ग्रर्थालङ्कारलक्षण निरूपण ।

८. कविप्रिया: ग्रन्थकार—केशवदास[१] । लिपिकार—× । रचनाकाल—प्रसिद्ध । लिपिकाल—× । पत्र सं०—४५ । प्र० पृ० पं०— ३१ । प्र० पं० ग्र०—२४। ग्राकार—१०$\frac{3}{4}$" ७" । दशा—खण्डित । भाषा—हिन्दी। लिपि—देवनागरी। विषय—काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान—लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी, दरभंगा।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— एक कहै साधारन एक विशिष्ट सरूप ।। २ ।।

सभा ....वर्णनम् ।।

सामान्यालंकार के चारि प्रकार प्रकास

........भुराज श्री भुषन केशोदास ।। ३ ।।

ग्रथवर्न ग्रलंकार वर्ननम् ।।

स्वेतपीत काट ग्ररुन चूमर नीले वर्ण ।।

मिश्रित केसोदास कहि सात भाति सुभ वर्न ।। ४ ।।

स्वेतवर्न कीरति हरिइ .... सरद धन जोन्हज राम संहार ।

हरि इन्दु हरिगिरि सुर ससि सुधासौध धनसार ।। ५ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ— ग्रथ वेदीवर्नन ।। दोहा ।।

वेदि वर्नत विबुध सबके केशव ललित लीलार ।

भाग सुहागन रे ससमर विक्षक्षि उदति उदार ।। ७९।।

दोहा ।। ग्रांग .... फुल शुभवेनी फुलवनाउ ।

रुपभूप जगजोती जनु सूरज प्रगट प्रभाउ ।

मोतिन की लट सीसपर सोहति है दही भाति ।

चारु चन्द्रिका भी चमू धनमसल की पाति।

---

१. ग्रोरछा (बुन्देलखण्ड)—निवासी सनाढय ब्राह्मण; सुप्रसिद्ध एवं महत्त्वशाली ग्रंथकार; १३३७ वि० के लगभग वर्त्तमान; ग्रौरछा-नरेश महाराज मधुकरशाह ग्रौर उनके पुत्र महाराज इन्द्रजीतसिंह के ग्राश्रित ।

वेनी वो कवेनी की सुनै नीनी, बनाई
जुही कंचन कुसुमरुचि लोचन नयो हियो ।
केशोदास फैलि रहि फुलसीस फुल इति फुल्यो तनुमन्यो ।।
महि जगमग तु जरा इव .... ताकिजे..... अजि उपमान आनहो....

पुष्पिका– x ।

विषयवस्तु–उपमाधलंकारवर्णन-विस्तार ।

९. कबीर पदावली : ग्रन्थकार–कबीरदास । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–×। पत्र सं०–७१ । प्र० पृ० पं०– ६ । प्र० पं० अ०–२१। आकार–६$\frac{1}{4}$" x ४" । दशा–खण्डित । भाषा–हिन्दी। लिपि–देवनागरी। विषय-सन्त-साहित्य । प्राप्तिस्थान- बा० इन्दीवर झा, डीहटोला, पंडौल (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गुरुचरणकमलेभ्यौ नमः ।। अथ कबीर जी के पद लिख्यते ।। पद ।।

छिको रे मन गगन गल ।।
जहाँ बाजै अनहद भीना । छिको रे मन गगन गली ।।
अधर देहराधर सिंघासन अघरहि किया पसारा ।
अधर बैठ कै निश्च्यै किया मिट गया भरम विकारा ।।
छिकी रे मन गगन गली ।।१।।
स्वेत सिंघासन स्वेत चारभुज श्वेत धजा फर्रानी।
हर लाल पीरा असमानी वहो रंगा दरसानी ।।२।।
घनन घनन अनहद घन गरजै झिलमिल झिलमिल जोती।
विन वादर जहाँ विजरी चमकै वरसै हीरा मोती ।।३।।
साहब हमरा हम साहब के दरसै येक ही नूरा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सतगुर मिल गये पूरा ।।४।।
छिको रे मन गगन गली ।।

अन्त की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। रेषता ।।

अरीतू पीव की प्यारी।
पिया से कोन विधि न्यारी रषो येक पीव की आसा।
मिटावे पलक में प्यासा, अरी तू पीव की प्यारी ।।
कसैगी सील की साड़ी, क्षमा सिर चीर अतिभारी ।
करूँगी ज्ञान का दीपक, सोहनी थाल में धर के।
चढ़ँगी सुखमना धारी, सुरति मेरी लगाऊँगी।
पिया के दूर है पैड़ी, करूं षिरकाट के वैड़ी।

विन्याँ धार सीस जाऊँनी, पिया की मोंज मो पाऊँगी।

पुष्पिका– x ।

विषयवस्तु– x ।

१०. काव्यनिर्णय : ग्रन्थकार–भिखारीदास ।[१] लिपिकार–x । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल-१८०८ वि० । पत्र सं०–७० । प्र० पं० ग्र०–३०। प्र० पं० ग्र०–२०। ग्राकार–११" x ६$\frac{1}{4}$" । दशा–खण्डित । भाषा–हिन्दी। लिपि–देवनागरी। विषय-काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान- बा० चेतमनि सिन्हा, सुखपुर (भांगलुपर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–

छमि हैं कवि ग्रपराधु । वन्यो ग्रनवन्यो समुझि के सोधि लेहिगें साधू ।
पो समाजु हैं ते विशेष सुष पैंहैं, पुनिपति साहेब के नीको मन मानो हौ ।
एते परतोष रसराज रसलीन, वासुदेव से प्रवीन पूरे कविन्ह वखानो हौ ।
ताते यह उधम ग्रकारथ न जैहैं, सम भांति रहै हैं भलो होहू' यह जानो है।
ग्रागे के सुकवि रीझि हैं तो, कविताई न तो राधिका कन्हाई सुमिरन को वहानों है।

दोहा

ग्रन्थ काव्यनिर्णयहि जो समुझि करेगो कण्ठ ।
सदा वसैगी भारती का रसना उपकण्ठ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

जानो न भक्ति न ज्ञान की शक्ति हो दास ग्रनाथ ग्रनाथ के स्वामी जू ।
मांगो इते वर दीन दयानिधि हीनता मेरी चिते भरो हामि जू ।
ज्यों विच नाम के नेह के व्यारे है, ग्रन्तरयामी निरन्तरजामि जू ।
मो रसना को रुचै रसना तजि राम नमामि नमामि जू ।। १२०१ ।।

पुष्पिका–इति श्री भिषारीदास कायस्थकृते काव्यनिर्णये रसदोषदोषोद्वार ग्रंथ संपूर्णता वर्णनं राम पंचविशतिमोल्लासः ।। २५ ।। शुभमस्तु । सं० १८०८ समये फाल्गुणे मास्यसित्पक्षे ३।४। बुधवासरे ।। श्रीराम ।।

---

१. बुन्देलखण्ड-निवासी; १७९९ वि० के लगभग वर्त्तमान; बुन्देलखंड के कुँग्रर हिंदूपति तथा काशी–नरेश महाराज उदितनारायण सिंह के ग्राश्रित, जाति के कायस्थ, हिन्दी के विख्यात कवि । इनकी चार रचनाएँ–छंदार्णव, छंदप्रकाश, शृंगारनिर्णय ग्रौर काव्यनिर्णय–ग्रबतक खोज में मिली हैं। 'काव्यनिर्णय' की पाण्डुलिपि काशी–नागरी–प्रचारिणी सभा को भी खोज में मिला है। दे०–खो० वि० १९०३, ग्रं० सं० ६१ ।

विषयवस्तु–गुण, दोष, अलङ्कार, शक्ति, लक्षण, व्यञ्जना, ध्वनि और काव्ययेद-निरूपण तथा बन्धदि लक्षणोदाहरण।

११. केरलभाषा प्रश्नावली : ग्रन्थकार– × । लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–×। पत्र सं०–६ । प्र० पृ० पं०– ७ । प्र० पं० अ०–३८। आकार–१०½" × ४½" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि–मैथिली। विषय-पाशाकेवली । प्राप्तिस्थान– पं० लक्ष्मीपित मिश्र, बरबरिया, भपटियाही (सहरसा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशायनमः ।।

विपुलशिलावलिहं अम्बधवलिका विनिखलि अव हे।
मधुशिभगुहेमदिरेस्वाहा ।। अ अ अ ।।
अहो पुछनहार तुमको एक परमेश्वर का बल ।
परन्तु तुम्हारा शत्रु क्षय को प्राप्ति होगा ।
एक कार्य तेरा सिद्ध होयगा।

अन्त की पंक्तियाँ– द व अ ।। अही पुछनहार सुनी यह कार्य दूर हय सत्य जानो तेरी शत्रु बहुत है ते सें तेरे बराई करता है तिसका कहे। मति करो तेरे भाग्य बड़ा हय तेरा काम सब अच्छा हय ।।

पुष्पिका–इति केरलभाषा प्रश्नावली समाप्ता ।। श्रीरस्तु शुभमस्तु ।।

विषयवस्तु– पाशानिक्षेप द्वारा भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान-सम्बन्धी प्रश्नों के शुभाशुभ का गद्यात्मक बर्णन।

१२. कोकसार : ग्रंथकार- आनन्दकवि।[१] रचनाकाल–× । लिपिकाल–१३१५ फ० । पत्र सं०–५६ । प्र० पृ० पं०– २० । प्र० पं० अ०–२२। आकार–६½" × ८"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि–देवनागरी। विषय-कोकशास्त्र (कामशास्त्र)। प्राप्तिस्थान- पं० भुवनेश्वर झा, सहरसा।

प्रारम्भ की पंक्तियाँ– श्री गणेशायनमः ।। अथकोकदर्पण ।। दोहा ।।

ध्यायि पद्म पद विष्णु के, नौमि रतिपतिहि काम ।
कामशास्त्र विरचे मन, पूरन करो अभिराम ।। १।।
जाको कुसुम विशिष मो, पराभव है तिन शोक ।
ताही वादी सिर पै कै, प्रगट करत हौ कोक ।। २ ।।

---

१. कीकसार के रचयिता आनन्द कवि का विवरण पहले भी आ चुका है। दे०–प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण सं० ९, ३ बि० रा० भा० प०)। इनकी मुख्यत:–कोकसार, कोकमंजरी, कोकविलास और आसनमंजरीसार-चार रचनाएँ अबतक की खोज में मिली हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी खोज में इनकी पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं।

अथ कर्न्दर्पोख्यानकथन ।।

चौपाई ।।

पुराशतयुगमाही वलधाम, उपजै तारक दैन्यपति नाम।

ब्रह्मा ताहि पुनि ग्रजय पर दीन्हा, सो सब सुर नर जीतिहि लीन्हा ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—चौपाई ।।

वगवरेन्द्र देश की वनिता । ऐसी ही पुनिरति मो मुदिता ।

कामरूप की कामिनी कोमल । रति में ग्रति से मति ह निर्मल ।।

दन्तनखक्षत से सुल पावति । नायक तेरी भ्रट मन दै ग्रति ।।

पुष्पिका—इति भी कवि ग्रानन्दकृते कोकसारभाषायां पञ्चदशखण्ड समाप्ताम् ।।

विषयवस्तु—कन्दर्पोपाख्यान, क़ामरूपवर्णन, कामशास्त्रोत्पत्ति, कामशास्त्रवर्णन, नारीजन्मान्तरजातिकथन, सङ्करजातीयस्त्रीवर्णन, कामशास्त्रज्ञान, तरुणीविधान, पद्मिन्यादि-लक्षण, शशादपुरुषलक्षण, रतिभेदवर्णन, कामागारवर्णन, द्रावणाविधि, कामवासवर्णन, वयस्वर्णन, नारीपरीक्षा, विरक्तालक्षण, सामुद्रिकलक्षण, पुरुष्शृंगारकथन, दूतीवर्णन, वाजीकरण, स्तंभन, नारीद्रावण, ग्रौषधि प्रकरण, ग्रंगलेप, पुषनिवारण, वंध्याकरण, पद्मिन्यादिवर्णन, चुम्बनविधि, नखक्षतादिकयन, रतिवर्णन, प्रेमालिङ्गन, विविधासन ग्रौर नायकनायिकास्वभाववर्णन ।

१३. गङ्गलहरी : ग्रन्थकार—पदमाकर ।[१] लिपिकार—× । रचनाकाल—प्रसिद्ध । लिपिकाल—× । पत्र सं०—७ । प्र० पृ० पं०— २४ । प्र० पं० ग्र०—२६। ग्राकार—९½" × ७½" । दशा—पूर्ण । भाषा—हिन्दी। लिपि—मैथिली। विषय-स्तोत्र । प्राप्तिस्थान- बा० चेतमनि सिन्हा, सुखपुर (भागलपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— श्री गणेशायनमः ।। दोहा ।।

हरिहर विधि को सुमिर के काटहु कलुष कलेस ।

कवि पद्माकर रचत हैं गंगालहरी वेस ।। १ ।।

---

१. सागर (बाँदा)-निवासी; प्रसिद्ध कवि; मोहनलाल भट्ट के ग्रात्मज; १७५३ ई० में जन्म; १८३२ ई० में मृत्यु; सोलहवर्ष की ग्रवस्था में सागर के मराठा-दरबार से सम्मान प्राप्त; जयपुर, उदयपुर, ग्वालियर, सतारा ग्रौर बुन्देलखण्ड की ग्रनेक रियासतों में सम्मानित; जयपुर-नरेश महाराजा प्रतापसिंह सवाई ग्रौर महाराजा जगतसिंह सवाई के ग्राश्रय में साहित्य-रचना । इनकी रचनाएँ नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी को भी खोज में मिली हैं! दे० खो० वि० १९२०-२२ ग्रं० सं० १२३; खो० वि १९२६-२८ सं० ३३८; खो० वि० १९०९-११, सं० २२०, प्रा० ह० लि० पो० का खो० वि० (बि० रा० भा० प०, पटना) खं० २, प्रं० सं० १५, १६, कवि सं० १९, पृ० सं० 'ज' ग्रौर १७, १८ ।

बझाते विरञ्च भइ वामन पगन कैलिकैलि किरी ईश शीस पैं सुगध की ।

ग्राइकें जहाँ न जन्ह जंघा लपटाई फिरि दिनन के लीन्ही होर कीन्ही तिन पथ की।

कहे पद्माकर सुमहिमां कहीलग्रों कहो गंगानाम पायो महिल सब के ग्ररथ की ।

चार ग्रो फल फूली फूली गहगही वहबही लही किरत लता है भगीरथ की ।। १ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–गिरिश गजानन गिरिसुता ध्याई समुझि शुच वना ।

कवि पदमाकर ही कियो गंगालही ग्रन्थ ।। १ ।।

गंगालहरी ग्रन्थ को पढ़े सुजन ग्रतिसार ।

ताको गंगादेत हैं सदा सुभग फलचार ।। २ ।।

पुष्पिका–इति भी पद्माकर-कृत गंगालहरी समाप्तम् ।।

विषयवस्तु–गंगास्तुति वर्णनम् ।

१४. गीता (श्रीमद्भवग्दीता) हिन्दी-टीका : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र सं०–१७ । प्र० पृ० पं०– १५ । प्र० पं० ग्र०–५० । ग्राकार–१२$\frac{1}{2}$" +५" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली। विषय-दर्शन । प्राप्तिस्थान- पं० राधाकान्त पाठक, मौजना, बैनी (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में मिलय युद्ध के साज ।

संजय सो सुत पाण्डवनि किनय कवने काज ।। १ ।।

पाण्डव सेना व्यूह लषि दुर्योधन ढिगि ग्राई ।

निज ग्राचरण द्रोण सो बोल्यो ऐसे भाई ।। २ ।।

पाण्डव सेना ग्रति बड़ी ग्राचार्य तू देखि ।

धृष्टदमन तुग्रो शिष्य तें व्यूह रच्योजू विशेषि ।। ३ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– योगेश्वर श्री कृष्णजू ग्रर्जुन हौ जहि ठौर

तहाँ विजय ग्ररुनीति है ग्रटल संपदा ग्रौर ।।

पुष्पिका–इत्यष्टादशोध्याय: ।।

यह गीता ग्रद्भुत तरण श्रीमुख कियो बखान ।

बारबार नित धारिकटि कियो परम भक्ति को ज्ञान ।। १ ।।

भक्त वत्सल श्री कृष्णजू यही कियो नित धारि ।

करै भक्त इच्छा सवै यह वेद को सार ।। २ ।।

विषयवस्तु– दोहा-चौपाइयों में गीता का हिन्दी-पद्यानुवाद ।

१५. गीतासार : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र सं०–४ । प्र० पृ० पं०– १३ । प्र० पं० ग्र०–४४ । ग्राकार–११" × ४½" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली। विषय-दर्शन । प्राप्तिस्थान- बा० सेनलता झा, दलियौल, ढोली (मुजफ्फरपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रो नमो भगवते वासुदेवाय ।।

ग्रथ सारगीता लिख्यते ।। ग्ररजुन उवाच ।। ग्ररजुन श्री कृष्णा भगवान् जी पहिले प्रश्न करे हैं कि हे परमेश्वर जी ग्रोकार का महातमु ग्ररु रुप ग्ररु ग्रसथान तिस के सुनने की मेरी वस है तुम क्रिपा करि निरूपण करो जी। ग्ररजुन की वेनती सुनि करि श्री कृष्ण भगवान् जी बोलत भय ।। श्री भगवानुवाच ।। हे ग्ररजुन तु भला प्रश्न कीग्रा है। ग्रोंकार का महातमु विसतार क़रि कहता हौं। सो तुं श्रवण करि रहुंयो गीतासार है।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– गंगा गीता गायत्री गुरु गोविंद ।

एहि पांचो राग करै जो उच्चार करैं

सो पुनरपि जनम को ना पावै

जो कोउ इसु सारगीता जबधि ग्रार्थ

ग्रभि ग्रासु करि न जानै जो पाठमात्र करैं

स सविष्णु कि विदिमान जाइ परापति होइ ।

इसुते बहुत किग्रा कहै ।।

पुष्पिका–इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्ण ग्रर्जुन संवादे परमहंससहित गीतासार समाप्तम् ।। ग्रो नमो भगवते वासुदेवाय ।। ० ।।

विषयवस्तु–गीतासार का हिन्दी-भाषानुवाद ।

१६. गुरुचरित्रम् : ग्रन्थकार– जगन्नाथदास[१] । लिपिकार–× । रचनाकाल–१७६० वि० । लिपिकाल–× । पत्र सं०–६ । प्र० पृ० पं०– ७ । प्र० पं० ग्र०–२० । ग्राकार–७½" × ४" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय-स्तोत्र । प्राप्तिस्थान- पं० श्रीकान्त पाठक, रतिवरिया, माताबिरपुर (मुजफ्फरपुर) ।

---

१. १७६८ वि० के लगभग वर्त्तमान; गोस्वामी तुलसीदास से भिन्न किसी तुलसीदास के शिष्य थे। ग्रंथकार की दो रचनाएँ–गुरुमहिमा ग्रौर गुरुचरित्र–खोज में मिलती हैं। दोनों हस्तलेखों में कवि-समय विवादास्पद है । विवरण के लिए दे०–नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी का खो० वि० १९२६-२८, कवि-सं० ८९, पृ० सं० ४७ । उपलब्ध पाण्डुलिपियों के विवरण के लिए दे० खो० वि० १९०६–९, ग्रं० सं० २६९, खो० वि० १०९–११, ग्रं० सं० १२६; खो० वि० १९२३-२५, सं० १७६ ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्रीमते रामानुजायनमः ।।

ग्राठ ग्रंग सौ दंडवत प्रथम किन्ह परनाम ।
जगन्नाथ करिहि गुरु सब विधि पूरन काम ।। १ ।।

चौपाई ।

श्री गुरुदेव चरन चित लावौह देयध्यान धरि सीस नवावौ ।
करि ग्रस्तुति परिकरमा दीजै तन मन धन जो सब ग्ररपन कीजै ।।
गुरु है ब्रह्म सुर तेतीसा गुरुं विनु को जानत जगदीसा ।
गुरु है नेम धरम सब केरा गुरु है ग्रावाग धन निवेरा ।।
गुरु है ज्ञान ध्यान मम स्वामी गुरु है सब के ग्रंतरजामी ।
गुरु विन सूझत नहि धंधा गुरु विन जन भटकत जिमि ग्रंधा ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ— ग्रस्वमेधा दस सहस्त्रपुरि जे वाज पेयज सत कोटी पुरिजे ।
सब मुनि तिरथ करि ग्रावे सो फल गुरु चरित्र पढि पावे ।।
संवत सत्रह से ग्ररु सांठे माघ मास उजियारी ग्राठे ।
भरणि इंद्र ग्ररु मंगलावारा गुरु चरित्र भाषा विस्तारा ।।

पुष्पिका—इति श्री स्वामी तुलसीदास शिष्य जगन्नाथदासविरचितं इति श्री गुरु चरित्र संपूर्ण ।। श्री रामायनमः ।।

विषयवस्तु—गुरुचरित्र महिमा-वर्णन ।।

१७. गुरुमानचरित : ग्रन्थकार— ग्रादिनाथ ।[१] लिपिकार—× । रचनाकाल—× । लिपिकाल—१२८८ फ० । पत्र सं०—२ । प्र० पृ० पं०— १२ । प्र० पं० ग्र०—४८। ग्राकार—११" × ४½" । दशा—पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—मैथिली । विषय-भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान- पं० वैद्यनाथ मिश्र, झंझारपुर (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्री गणेश ।। ग्रब गुरुमानचरित्र लिख्यते ।।

ग्रादि सनातनि जग जननि सदा करिय कल्याण ।
ग्रादिनाथ वर्णन करत राधा के गुरुमान ।। १।।

।। कवित्त ।।

ग्रादि सनातनि है जगपालिनि मुकुकमालिनि ग्ररिकुमारी ।
संकष्ठनाशिनि दुर्गविनाशिनि विन्ध्यकवासिनि संकरनारी ।।
गणपति के मातृ तृभुवनदातृ लोककधातृ दोषविसारी ।
अधिक कपाली नाम है काली नृनिदयाली लेहु उवारी ।। २ ।।

---

१. खोज में ये रचयिता पहले-पहल मिले हैं। लगभग दो सौ वर्ष पूर्व लिपित इस प्रति में रचनाकाल का उल्लेख नहीं हैं। पूर्वतन विवरणों में पया सहित्येतिहास-ग्रंथों में ग्रंथकार ग्रनुल्लिखित हैं ।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–ग्रतिहर्षित राधा मिली सुनी हरि के मुख वैन ।

रति विहार लानीकरन निरखि परस्पर वैन ।। २६ ।।

पुन: ।। मानराधिका के सुनत सम के बाढ़त मान ।

ग्रादिनाथ के मुदित करन राधा मिलि भगवान ।। २७ ।।

पुष्पिका–इति श्री ग्रादिनाथ कविकृत गुरु मान चरित्र समाप्तं ।।

शुभमस्तु श्रीरस्तु शुभं भूयात् ग्रो तत्सत् सन १२८८

साल कार्तिक शुक्ल षष्टी चन्द्रे ।। शुभम् ।।

विषयवस्तु–राधाकृष्ण-भक्तिविषयक वर्णन ।

१८. जगतमोहन : ग्रन्थकार– रघुनाथकवि ।[१] लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–१८६३ वि० । पत्र सं०–२२९ । प्र० पृ० पं०– २० । प्र० पं० ग्र०–१३ । ग्राकार–११" × ७" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी। विषय-काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान- पं० मनमोहन मिश्र, बरारी (मुँगेर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशायनम: ।।

छंद कवित्त की देह है ग्रर्थ कवित्त को मान ।

व्यंग्य बुद्धि बुध की तरह है लक्षण सुजान ।। १ ।।

रहन छैल ताकी सोरस कहत सवै मतिमान ।

ग्रलंकार है ग्रंग को भुवन ग्रति सुखदान ।। २ ।।

छंद सो ताकी वृत्त है एकमात्रा एकवर्न ।

सेस नागजूने कहै सीषे ग्रायु सुपर्न ।। ३ ।।

छंद मात्रा व्रित्त को कै कै कला प्रमान ।

वरनत है सब छंद को है जिनकें कंछु ग्यान ।। ४ ।।

---

१. वाराणसी-निवासी; काशी-नरेश महाराज बलवंत सिंह (बरिबंडसिंह) के ग्राश्रित; कवि गोकुलनाथ के पिता; जाति के बंदीजन; १८०२ वि० के लगभग वर्त्तमान; जगतमोहन, रसिकमोहन-काव्य ग्रौर काव्यकलाधर के रचयिता । इनके ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी को भी खोज में मिल चुकी हैं। दे० खो० वि० १९०३, ग्रं० सं १०, ५६ ग्रौर ११२; खो० वि० १९०९–११, ग्रं०सं० २३५ ए० बी०। जगतमोहन का रचनाकाल १८०७ वि० (ना० प्र० स० वाली प्रति का) ग्रौर लि० का० १९१२ वि० है। इस ग्रंथ में दर्शन (वेदांत, न्याय) सामुद्रिक, ज्यौतिष, वैद्यक, कोक, पिंगल, चित्रकाव्य, ग्रलंकार, नायिका-भेद ग्रादि विविध विषयों से सम्बद्ध रचना है।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–पीवय परावा वट कहावै परनारी वाको उरलावै ।

पुहुमी सीस व्योम पग रही कवि रघुनाथ पहेली कही ॥

एक जगत में ऐसी वाम हाथ पांउ शिर विनु ग्रभिराम ।

जो देखे सो ग्रापन कहै वह रघुनाथ धनी के रहै ॥ ११ ॥

पुष्पिका– संवत १८६३ मीति प्रथम श्रावण कृष्ण तीथी दशमी वार बुधक दीन पोथी लिपि काशी नगर मनसाराम रामनगरमघ्ये पोथी लिषि ठठेरी बाजार मः श्री गंगाजी ॥

विषयवस्तु–छन्दोपयोगी संज्ञावर्णन, छन्दो के लक्षण ग्रौर उदाहरण, विभावानुभाव-स्थायीभावों के सोदाहरण लक्षण-निरूपण । ग्रलंकार दोष, गुण तथा हारबन्धादि-वर्णन ।

१९. ज्ञानस्वरोदय : ग्रन्थकार– कबीरदास । लिपिकार–भागीरथदास । रचनाकाल– प्रसिद्ध । लिपिकाल–१९१४ वि०=१२६५ फ० । पत्र सं०–१४ । प्र० पृ० पं०– ८ । प्र० पं० ग्र०–४२ । ग्राकार–११½" × ६" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि–देवनागरी। विषय-सन्तकाव्य । प्राप्तिस्थान- पं० खखनू भा, करियौर, वालीपुर (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्रीमते रामानुजायनमः ॥

संत कबीर धनिधर्मदास की साहेब सुरति गोपालदास की दयाल साहेब की दया लिखितं गरंथ ग्यानसरोदै ।

पुरन ब्रह्म प्रग्रातमा पुरषोत्तिम तुम इस ग्रादि पुर्स ग्रविचल
तुहितहि नवाववों सिस ताहि कोमल नायिकए ग्रयोरन्ह
सुरतिलगाय ग्राया ग्रापु विचारिकिये रहो से सुख पाये ॥
सो कवीर ग्रर्थ कहतहयों ग्रगम निगम की स्वास ।
इह ग्रवचल वकृ ग्यान को जो माने विस्वास ॥
सो वीर भल जोइ ग्रए खैंचि मन ताहां शशु ॥

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

ताके समुझि विचारिए ग्रपनो मन चितलाए ।
वाइ ग्रग्नि सित धरु वारिघृत होए ॥
तेललि कहि थिरवाए चन्दन पवरू नभचल एक थिर वचन न जाए ।
योग युक्ति सत् भक्ति करि ब्रह्मज्ञान दिढ होए ।
ग्रातम ततु विचारि कए ग्रजपामोसमोए ।
रामानन्द गुरु की दया कहो सरोदै ग्यान ।
सतगुरुसत् कवीर है एहि स्वासा को ध्यान ॥

पुष्पिका– ग्यान सरादै गरंथ संपूरनं जो प्रति देखा सो लिखा मम दोष न दियते लिख्यते श्री भागीरथदास संवत् १९१४ सन १२६५ साल भाद्रमासे कृष्णपक्षे २ भार्गवे श्रीसीताराम ।।

विषयवस्तु–इडा, पिंगला ग्रौर सुषुम्ना नाडियों का निरोध तथा संचालन ।

२०. स्वरोद्य : ग्रन्थकार– कबीरदास । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–×। पत्र सं०–५ । प्र० पृ० पं०– ९ । प्र० पं० ग्र०–२६ । ग्राकार–१०½" × ४" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली। विषय-सन्तकाव्य । प्राप्तिस्थान- पं० योगेश्वर झा, हनुमाननगर, लोहट (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशायनमः ।।

पुरन ब्रह्म परामो पुरुषोत्तम जग ईश ।

ग्रादि पुरुष ग्रविचल तोहि तो नवो सीस ।।

ताही को मन लाई के ग्रौर न सुरति लगाय ।

ग्रापो ग्राप विचारिके ग्रस्थिर सुख पाय ।।

सो कबीर मथि कहतहो ग्रगम निगम के स्वास ।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

रामानन्द गुरु की दया कहो स्वरोदय ज्ञान ।

सत गुरु सत्य कबीर होय इन्ह स्वास को ध्यान ।।

पुष्पिका–इति श्री ज्ञानस्वरोदय सिद्धान्तग्रन्थः समाप्तः ।।

विषयवस्तु–यात्रा-विचार ग्रौर स्वरोदय-विचार ।।

२१. दीपप्रकाश : ग्रन्थकार– ब्रह्मदत्त[१] । लिपिकार–× । रचनाकाल–१८६६ वि० । लिपिकाल– × । पत्र सं०–१५ । प्र० पृ० पं०– २० । प्र० पं० ग्र०–२० । ग्राकार–९¼" × ६¼" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी। विषय-काव्यशास्त्र। प्राप्तिस्थान- पं० मनमोहन मिश्र, बरारी (मुँगेर)।

---

१. उपाध्याय उपनाम से विख्यात; काशी-नरेश महाराज उदितनारायण ग्रौर उनके भाई बाबू दीपनारायण के ग्राश्रित; १८६१ वि० के लगभग वर्त्तमान । नायिका-भेदविषयक यह रचना नागरी प्रचारिणी-सभा को भी खोज में मिली है। 'विद्वद्विलास' भी खोज में ना० प्र० स० का० को मिली है। इसका लि० का० १८६१ वि० है । इसमें खल, सज्जन, कृपण ग्रौर धनी का वर्णन हुआ है। दे० खो० वि० १९०४, सं० ३४ ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्री गणेशाय नमः ।। कवित्त ।।

सेंदुर सो भरो भाल बिशाल उदै गिरि पै मानो भानु उदै को ।
दन्त लसैं मनो द्वैजि को चंद विचार के ग्रायो है ।।
मित्र मिलैको चंदन लीकलौं चंदकला शिर चारि भुजा ग्रहै दाति ग्रभैको ।
कैसे कलेस को ले शर दैन ग्राज तरुपव महेश तनै को ।। १ ।।

ग्रथ प्रभुवंश वर्णनं—

दोहा । गौतम के कुल मैं भये महाराज वरिवंड ।
जाहिर जंबूद्वीप मैं जाको तेज़ प्रचंड ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—

कवित्त । कोऊ कहूं करै दान विधानन कोऊ तो वेद पुराणनि वांचै ।
कोऊ कहूं गहै लंजम नेम कोऊ कहै सहैं सीत ग्रो ग्राँचै ।
साँचें पुकारि कहैं कवि ब्रह्म मैं जानत ग्रान कछु न छपावैं ।
वो ग्रवधेश के छोहरे की छवि मेरे तो ग्रांखिन ऊपर नाचैं ।।

पुष्पिका—इति श्रीमन्महाराज काशिराज उदितनरेन्द्रानुज देवद्रुमावतार दीपनारायण-कारिते कवि ब्रह्मदत्तकृते दीपप्रकाशे पंचम प्रकाशः ।।

।। कवित्त ।।

जौ लौं विश्व कर के कमंडल मैं पानी चन्द्र मण्डल मैं मुनि की निशानी जौ लौं गाईवी।
जौ लौं ग्रमरावती ग्राखंडल ग्रखंड नभ मंडल मैं सूर शशि मण्डल ग्रौ महिवी ।
कहै कवि ब्रह्म वरि वंशमणितू हैं धनि तेरो जस नौह खंड निसराई वी ।
जौ लगी फणींद्र फण मंडल मै मही मही मंडल मैं तौं लगि ग्रखंड तेरी साहिबी ।।

संपूर्णोयं ग्रन्थः । शुभमस्तु । ग्रष्टादशशत ग्रधिक षष्ठपष्टिवर्ष तयमासु शुक्ल पंचमी की कियो दीपप्रकाश ।। १ ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

विषयवस्तु—राजवंशवर्णन, नायक नायिकाभेद, सात्त्विक भावनिरुपण, उपमालंकार-निरुपणग्रौर गुणदोष-निरुपण।

२२. ध्यानमञ्जरी : ग्रन्थकार– अग्रदास ।[१] लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–×। पत्र सं०–८ । प्र० पृ० पं०– ८ । प्र० पं० अ०–२८ । आकार– ९½" × ५" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी। विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– पं० जयकरन पाठक, रतवरिया, उलावलपुर (मुजफ्फरपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्रीमते रामानुजायनम: ।।

अो सुमिरो श्री रघुवीरधीररंघुवंश विभूषण ।
सरन गहे सुष ससि हरत अधसागर दूषरा ।। १ ।।
सुंदर राम उदार वाण कर सारंग धारी ।
हिय धरि प्रभुको ध्यान विदुष जन आनंदकारी ।। २ ।।
अवधपुरी निज धाम परम अतिसुंदर राजै ।
हारक मणिमय सदन नगन की कांति विराजै ।। ३ ।।
पौर द्वार अतिचारु सुहावन चित्रित सोहै ।
चंपतार मंदार कल्पतरु देषत मोहै ।। ४ ।।
भवन भवन चित्रानचित्रकि रंभा सोहै ।
वनज सुतन कि पांति कांति गोषन मग जोहै ।

अन्त की पंत्तियाँ–सुनि अगमविधि अर्थ कछुक जो मनहि सुहाए ।
यह मंगलवरध्यान यथामति वरनि सुनाए ।। ७८ ।।
श्री गुरुसंत अनुग्रह ते अस गोपुरवासी ।
रसिक जनन हित करण रहसि यह ताहि प्रकासी ।। ७९ ।।
ध्यान मञ्जुरी नाम सुनत मनमोद बढ़ावै।
श्री रघुवर को दास मुदित जन अग्र सुगावै ।। ८० ।।

पुष्पिका–इति श्री अग्रदासकृत रामध्यानमञ्जरी संपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।। राम राम ।

विषयवस्तु–रामध्यान से सम्बद्ध भक्तिपरक ८० पद ।

२२(क). ध्यानमञ्जरी : ग्रन्थकार– अग्रदास ।[१] लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल– × । पत्र सं०–८ । प्र० पृ० पं०– ८ । प्र० पं० अ०–२६ । आकार– ९" × ४½" । दशा–खण्डित । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी। विषय–भक्तिकाव्य। प्राप्तिस्थान– हरिवंश मिश्र, अजीजपुर (मुजफ्फरपुर)।

---

१. गलता, आमेर (जयपुर-राज्य) को वैष्णव-गद्दी के अधिकारी; वैष्णव-सम्प्रदाय के नाभादास के गुरु; कृष्णदास पयहारी के शिष्य; वि० सं० १६३२-१५७५ ई० के लगभग वर्तमान और काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज में भी उपलब्ध कवि । इनकी 'कुण्डलिया' भी खोज में मिली है। परिषद् से प्रकाशित प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का खो० वि०, सं० २ में इनकी चर्चा हो चकी है। दे० पृ० सं० क, १४५ और कवि-सं० १ तथा ग्रं० सं० १०४ ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री मते रामानुजाय नमः ॥

सुमिरौ श्री रघुवीरधीर रघुवंश विभूषन ।

सरन गहे सुषरासि हरत ग्रघसागर दूषन ॥ १ ॥

सुन्दर राम उदार वानकर सारंगधारी ।

हियधरि प्रभु कौ ध्यान विदुष जन ग्रानंदकारी ॥ २ ॥

ग्रवधपुरी निजघाम परम ग्रति सुन्दर राजै ।

हारक मनिमय सदन नगन की कांति विराजै ॥ ३ ॥

भवन भवन चित्रामचित्र की रंभा सोहै ।

वनज सुतन की पांति कांति गोषन मग जोहै ॥ ४ ॥

तोरन केतु पताक धुजा तहा परम सुहाइ ।

मानहु रघुवर हितकन ग्राई त्रिभुवन छवि छाई ॥ ५ ॥

ग्रन्त की पंक्तियाँ–श्री गुरुसंत ग्रनुग्रह रहत ग्रस गोपुरवासी ।

रसिक जनन हित करन रहलि यह ताहि प्रकासी ॥ ७७ ॥

ध्यान मञ्जुरी नाम सुनत मनमोद बढ़ावै ।

श्री रघुवर को दास मुदितजन .... ॥

पुष्पिका– × ।

विषयवस्तु–रामध्यान से सम्बद्ध भक्तिकाव्य ।

२३. नखशिखवर्णनम् : ग्रन्थकार– सुखदेव मिश्र ।[१] लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र सं०–१२८ । प्र० पृ० पं०– १७ । प्र० पं० ग्र०–१५ । ग्राकार–८" × ५" । दशा–खण्डित । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी। विषय–ग्रलंकारशास्त्र । प्राप्तिस्थान–बाबू झा, रामबहादुरपुर, ग्ररविन्दपुर (दरभंगा)।

---

१. कम्पिला (फर्रूखाबाद) ग्रौर दौलतपुर (रायबरेली) के निवासी; १७२८ वि० के लगभग वर्त्तमान; शंभुनाथ त्रिपाठी के गुरु; राजा भगवंत राय खीचीं (ग्रसोथर, फतहपुर के राजा), राजा हिम्मत सिंह (ग्रमेठी, सुलतानपुर के राजा), फाजिल ग्रली डोंडिया (ग्रौरंगजेब के वजीर), मर्दान सिंह बैस (खेरा के राव), राजसिंह गौर, राजा देवीसिंह ग्रौर ग्रलयार खाँ के ग्राश्रय में काव्य-रचना; कविराज उपाधि से विभुषित । 'नखशिखवर्णन' के ग्रतिरिक्त इनकी ग्रन्य 'वृत्तविचार', 'छंदविचार', 'ग्रध्यात्मप्रकाश', फाजिल ग्रली-प्रकाश', 'रस-रसार्गाव' ग्रौर 'पिंगल'–रचनाएँ काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली हैं। दे० खो० वि० १९०३, ग्रं० सं० १२३, १२४; खो० वि० १९०४, ग्रं० सं० ३३; खो० वि० १९०५, ग्रं० सं० ९७; खो० वि० १९०६-८, ग्रं० सं० ९४० ए० बी० सी०; खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० ३०७ ए० बी० सी०।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—ग्रथ सिखनखत । त्रकच वर्ननं ॥

वौंड मनो है सिंगार की वेली ऐसी कुछ छवि देत ग्रपार है ।

है सरदार कुहू के कुमार कै मार के ग्रंग महा सुकुमार है ॥

कैती प्रभा शिर फूल पनातें कि फूल गुहै मष तूल के तार हैं।

सुन्दरता के सरोवर मे तुग्र सोहत प्यारी सेवार सेवार है ॥

ग्रन्त की पंक्तियाँ—ग्रपनी कुल कान्ह गहे रहिये तकिये न कहू किनको उपरैयां ।

मण्डन नेकु नेहारतही लव नाव धरे कहि कासो लुरैयां ॥

ईतै ढिग बैठे सिखावन धाइवतै पियको तकि प्यारी डरैना

डीठ वचाय चितैवो करै ग्रोहरै की हरैही गरैही करैहौ ॥ ४७५॥

पुष्पिका— × ।

विषयवस्तु—नखशिखवर्णन, पद्मिन्यादिलक्षण, ग्रभिसारिकादिवर्णन, दूती, ऋतु, वयःसन्धि, ग्रभिलाष, स्वप्नदर्शन ग्रौर नायिकादि का वशेष विश्लेषण।

२४. नाममालाः ग्रन्थकार— नन्ददास । लिपिकार—× । रचनाकाल—प्रसिद्ध । लिपिकाल—×। पत्र सं०—२२ । प्र० पृ० पं०— ७९ । प्र० पं० ग्र०—३६ । ग्राकार—१०$\frac{1}{2}$" × ४" । दशा—पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—मैथिली। विषय— कोष । प्राप्तिस्थान— सुखुपुर (सहर्षा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—ग्रो नमो गणेशाय ॥ ग्रथनाममाला लिख्यते ॥

तन्नमामि पद परमगुरु कृष्णाकमल दल वैन ।

जग कारण करुणार्णव गोकुल जाको गौन ॥ १ ॥

उचरस कति नहि संस्कृत जान्यो चातहत नाम ।

तिन हित नन्द सुमत यश रचत नाम की दाम ॥ २ ॥

गूथति नाना नाम की ग्रमरकोष के भाय ।

मनावती के मान पर मिले ग्रर्थ सब ग्राय ॥ ३ ॥

मान नाम ॥

ग्रहङ्कार मद दर्प पुनि गर्व गमय ग्रभिमान ।

मान राधिका कुमर को सभ को रत कल्याण ॥ ४ ॥

ग्रन्त की पंक्तियाँ—माला नाम ॥

माला माल्य स्रज गुग़वती यह ज़ू नाम की दाम ।

जौ नर कण्ठ करै सुनै होइ हैं छवि को धाम ॥ २६३ ॥

युग्म नाम ।।

युग्म युगलद्वय उभय मिथुन राज है श्री जीय ।

युगल किशोर सदा बसहु नन्ददास के हीय ।। २३४ ।।

पुष्पिका–इति श्री नाममाला नन्ददास कृता सम्पूर्णम् ।

विषयवस्तु–२३४ पदों में विभिन्न नामों के पर्याय ।

२४(क). नाममाला: ग्रन्थकार– नन्ददास ।[१] लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–× । पत्र सं०–९ । प्र० पृ० पं०– १० । प्र० पं० अ०–६२। आकार–१२" × ५" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय-कोष । प्राप्तिस्थान- पं० बाबूलता झा, सुखुपुर (सहर्षा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ओ नमो गणेशाय ।। पोथी नाममाला ।।

तन्नमामि पद परमगुरु कृष्णकमलदल नैन ।

युग कारण करुणामय गोकुल जाकेय एन ।।

उचरि सकति नहि संस्कीर्ति जाने चाहत नाम ।

ताहि मह नन्द सुमरत यथा रचत नाम के दाम ।।

ग्रन्थ नाना नाम को अमरकोष की भाए ।

मानवती के मान पर मिठे अर्थ सभ आए ।

माननाम गौरवक ।।

अहंकार मद दर्प पुनि गर्भसमे अभिमान ।

मान राधिका कुमरिको सभ को करहु कल्यान ।।

अन्त की पंक्तियाँ–मकरि ने नाम ।।

नामनम कवि जातिनीर नग जाउनएनाउ ।

मकरि धनु धरिए नाए सोए पुनि पुनि जाउ ।।

ऐजनी नाम ।।

ताते अञ्जनी सुता पताषा गोइनपाति ।

ओ नामाञ्जनी को जातनि एह पाति ।।

पुष्पिका–इति श्री नाममाला संपूर्णम् समाप्तम् ।

विषयवस्तु–नाम-पर्यायकोष।

२४(ख). नाममाला: ग्रन्थकार– नन्ददास । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–× । पत्र सं०–४ । प्र० पृ० पं०– १२ । प्र० पं० अ०–६०। आकार–११½" × ४½"। दशा–खण्डित । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली। विषय-कोष । प्राप्तिस्थान- पं० बलदेव झा (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—ग्रो नमः ।। ग्रथ नाम माला लिख्यते ।।

तन्नमामि पद परमगुरु कृष्णा कमलदल नैन ।
जग कारण करुणार्णव गोकुल जाको गौन ।। १ ।।
उचरत कति नाई संस्कृत जान्यो चाहत नाम ।
तिन ईत नन्द सुमत यथा रचत नाम की दाम ।। २ ।।
गथति नाम नामकी ग्रमकोष के भाय ।
मानवती के मान पर मिलि ग्रर्थ सब ग्राय ।। ३ ।।
माननाम ।। ग्रहङ्कार पद दर्प पुनि गर्व समय ग्रभिमान ।
मान राधिका कुमर कौं सब को करत कल्याण । ४ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—विश्व विरोचन दिवस पुनि मार्तण्डत्रय ग्रङ्क ।

ग्रम्बरमरिण दिनमणि तरणि सविता सूर पतङ्ग ।। १४० ।।
रवि मण्डल मण्डन जाकी कहत मुनिजन ताई ।।

पुष्पिका— × ।

विषयवस्तु—नाम-पर्यायकोष ।

२४(ग). नाममाला: ग्रन्थकार— नन्ददास । लिपिकार—× । रचनाकाल—प्रसिद्ध । लिपिकाल—१२४४ फ० । पत्र-सं०—११ । प्र० पृ० पं०— १० । प्र० पं० ग्र०—१० । ग्राकार—५२" × ४" । दशा—पूर्णा । भाषा—हिन्दी । लिपि—मैथिली। विषय-कोष । प्राप्तिस्थान- पं० गोविन्द मिश्र, मनीगाछी (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— ग्रो नमो गणेशाय ।। ग्रथ नाम माला लिख्यते ।।

तन्नमामि पद परमगुरु कृष्ण कमलदल नैन ।
जग कारण करुणरवि गोकुल जाको गौन ।। १ ।।
उचर सकति नहि संस्कृत जान्यो चातहत नाम ।
तिन हित नन्द सुमत यथा रचत नाम को दाम ।। २ ।।
ग्रथति नाना नाम की ग्रमरकोष के भाय ।
मानवती के मान पर मिले ग्रर्थ सब ग्राय ।। ३ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—युग्मनाम ।।

युग्मयुगलद्वय उभय मिथुन राज है श्री जीय ।।
युगल किशोर सदा वसहु नन्ददास के हीय ।।

पुष्पिका—इति श्री नाममाला नन्ददासकृता संपूर्णम् ।। श्रीरस्तु ।। शुभमस्तु ।।
सन १२४४ साल पोषवदि द्वादशी बुधेरात्रौ ।। श्री गणेशायनमः ।।

विषयवस्तु—नाम:पर्यायकोष।

२५. पाराशरीय भाषा : ग्रन्थकार–विष्णुदास[१]। लिपिका–पक्षधर शर्मा । रचना- काल–× । लिपिकाल–१७५३ शा० । पत्र सं०–९ । प्र० पृ० पं०– ९ । प्र० पं० ग्र०–४८ । ग्राकार–१२$\frac{1}{4}$" × ५" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि– मैथिली। विषय–शकुनशास्त्र । प्राप्तिस्थान- पं० महीधर मिश्र, लालबाग (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः ।।

श्री गजास्यं नमस्कृत्य सिद्धि बुद्धि प्रदायकं ।
पाराशरी जातकस्य भाषा च कियते मया ।।
क्षत्रान्वये विष्णुदासस्तेनाहं प्राथितः किल ।
पाराशरी जातकस्य भाषां कृत्वा ममार्पय ।।
गूढार्थान् प्रकटीकृत्य सशेषं सुखबोधकृत् ।
पाराशरी जातकस्य भाषाया लिख्यतेधुना ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– ग्रौर नवम का स्वामी दशम स्थान में होए दशम स्थान का स्वामी नवम स्थान में होए व ग्रो इसको राजयोग कहि ग्र एह सयोग में जिसका जन्म होए सी मनुष्य विख्यात होए ग्र ग्रोर सर्वत्र विजयावान होए ।।४१।।

पुष्पिका–इति व्याख्या समाप्ता ।। शाके १७५३ फाल्गुन कृष्णमावास्यायां वाग्वौ श्री पक्षधर शर्मणः लिखितमिदं पुस्तकं स्वावलोकनार्थ। पुद्रद्दी ग्रामे।।

२६. ब्रह्मजिज्ञासा (हिन्दी-टीका) : ग्रन्थकार–शङ्कराचार्य[२]। टीकाकार–× । लिपिकाल–× । पत्र सं०–५ । प्र० पृ० पं०–७ । प्र० पं० ग्र०–४२ । ग्राकार–११" × ५" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय–वेदान्त-दर्शन । प्राप्तिस्थान–पं० बलराम पाठक, रतवारा (मुजफ्फरपुर)।

---

१. इस नाम के तीन ग्रंथकारों की पाराडुलिपियाँ मिलती है। यशाविवरण ये विवेच्य हैं। विष्णुदास क्रमशः निम्नलिखित हैं–क. गयाचलगढ़ (ग्वालियर)-नरेश राजा डोंगर सिंह के ग्राश्रित; १४९२ वि० के लगभग वर्त्तमान; महाभारत-कथा ग्रौर स्वर्गारोहण के रचियिता। ख. पन्ना (बुन्देलखण्ड) निवासी; ग्रठारहीवीं शताब्दी के ग्रारंभ में वर्त्तमान; एकादशी-माहत्म्य के रचयिता। ग. १८५१ वि० के लगभग वर्त्तमान; ग्रन्य सूचनाग्रों का ग्रभाव। इनकी 'बारहखड़ी' नामक रचना मिली है। विवरण के लिए दे० नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी का खो० वि० १९०६–८, ग्रं० सं०११७, १४८ ए० बी० खो० वि० १९०९–११, ग्रं० सं० ३२७।

२. प्रसिद्ध शंकराचाय के 'ब्रह्मजिज्ञासा' नामक ग्रंथ की हिन्दी-टीका है। टीकाकार का नाम ग्रज्ञात है।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री ब्रह्मणे नमः ।। ग्रथ वेदांत प्राकृत महावाक्य लिखितं।

ग्रथ ब्रह्मजिज्ञासा । नारद उवाच ।

ब्रह्म एक शुद्ध चैतन्य माया ग्रचेतन जड़ माया ब्रह्म को संयोग जैसे वृक्ष की छाया वृक्ष सर जीवन छाया सर जीवन नाहि वृक्ष विना छाया होत नाहि। माया कि वोर वृक्षसूझनाहि । ब्रह्म को वोर माया नाहि दिष ब्रह्म माया को ऐसो संयोग । माया जड़ ब्रह्म चैतन्य । माया उपरि ब्रह्म ब्रह्म उपरि कोई नाहि। एका-एकी रमते ब्रह्म तब ब्रह्म मायत इच्छा धारी। ब्रह्म की शक्ति तिन इच्छा क्रिया ज्ञान । माया की शक्ति तिन शंशय मिथ्या विपरित । ब्रह्म के नाम पंच। ब्रह्म कहिए। जीव कहिए । कर्म कहिए। काल कहिए। स्वभाव कहिए।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–श्रवण इन्द्री ताकि रस विषय वरुण देवता ब्रह्मण इंद्री ताकि गंध विषय पृथ्वी देवता वाक् इन्द्री ताकि वचन विषय अग्नि देवता हसत इनद्री ताकि ग्रहण विषय इन्द्री देवता पद इन्द्री ताकि चलन विषय विषणु देवता चित्त इन्द्री ताकि सुमन विषय क्षेत्रज्ञ देवता ग्रहंकार इन्द्री ताकि गर्भ विषय रुददेवता एह चौदह इन्द्री चौदह देवता कहिए ।।

पुष्पिका–इति श्री शंकराचार्य विरंचितं ब्रह्मजिज्ञासा संपूर्ण ।।

ग्रस्थिामांसः त्वचानाडी रोम चैवतु पंचमः ।
तन्मध्ये वसते पृथ्वी सितिपंचगुणाः स्मृताः ।। १ ।।
शुक्र शोनित प्रस्वेदं चमय्यामुत्रमेव च ।
तन्मध्ये वसते श्लेष ग्रापः पंचगुणः स्मृताः ।। २ ।।
क्षुधा तृष्णा तथा निद्रा लज्या मैथुनमेव च ।
तन्मध्ये बसते पित्त तेजः पंचगुणाः स्मृताः ।। ३ ।।
धावनं प्रशारणं चैंव उत्क्रमनबल शंकोचनं तथा ।
तन्मध्ये वास्ते वायु वातः पंचगुणाः स्मृताः ।। ४ ।।
शिराः ग्राकाश करणा काशकृघा कास्तथैव ।
उदराकाशं च कध्याकाशः पंचाकाशमेव च ।।
तन्मध्ये वसते ग्राकाशः गगनः पंचगुणाः स्मृताः ।।
राधाकृष्ण राधाकृष्णा राधाकृष्णा राधा ।।

विषयवस्तु–ब्रह्मज्ञानोपाय-प्रदर्शन, माया तथा ब्रह्म के सम्बन्ध का विशलेषण ग्रौर पंचकोश का विवरण।

२७. ब्रह्माण्डलीला : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र सं०–४ । प्र० पृ० पं०–८ । प्र० पं० ग्र०–२४ । ग्राकार–७" × ३$\frac{१}{३}$" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान- पं० त्रिलोकनाथ मिश्र, गैसपुर, प्रतापगंज (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ- नमः श्रीमहाणेशशाय ।। ग्रथ ब्रह्माण्डलीला ।।

गोरष गणेश गोष्ठी ।। गणेश उवाच ।।
स्वामी तुम कहां ते ग्राये कहां तुम्हारा नाञो ।
गोरष उवाच ।
स्वामी हम निरन्तर ते आये योगी हमारा जाञों ।
तुम कौन योगी । निरन्तर गुरुशब्द ग्रतीथ चेला ।
कैसे जानि ग्रए कइसे पहचानि ग्रए।
रहित ते जानि ग्रए शब्द ते पहचानि ।
रहित का भाव शब्द का भव । शब्द सूक्ष्म भावरहित तृगुणभाव ।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–पृथ्वीमध्य घटिका वलिग्रा पाटीकामध्य सरहुए वलिग्रा तो का करिहहु पोथी करिआ ।। मनधर पवन पवनधर जो इसी छीनुछीनु बात कहए घर पैसी ।

मान पवन के जान ए भेग्रो ता घर वानि भरत मर देग्रो ।।
जा दिन निराकार होते नहीं नहीं माया विस्तार ।
सुना विसुना होता नहीं ताहि कौन शब्द का सार ।।
पुष्पिका–इत्यार्षे ब्रह्माण्डलीला समाप्त ।। शुभमस्तु श्रीरस्तु ।।
विषयवस्तु–स्वरोदय-विचार।

२८. भारतीकण्ठाभरणम् : ग्रन्थकार–जगतसिंह ।[१] लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र सं०–२४ । प्र० पृ० पं०–९ । प्र० पं० ग्र०–४६ । ग्राकार–१४" × ५" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी, नेपाली । विषय–छन्दःशास्त्र। प्राप्तिस्थान- पं० रघुनाथ झा, मजौना, वारी (दरभंगा) ।

---

१. चार जगतसिंह के हस्तलेख खोज में मिले हैं। चारों ग्रंथकारों का यथाकालक्रम निम्नलिखत विवरण है- क. सभाचंद्र के ग्राश्रयदाता; १७०० वि० के लगभग वर्त्तमान। ख. भिनगा (बहाराइच) के ताल्लुकेदार दिग्विजयसिंह के पुत्र। इनका रचना-काल १८४७ वि० से १८७७ वि० के बीच का है। इनकी तीन–साहित्य-सुधानिधि, चित्र-मीमांसा ग्रौर नखशिख–रचनाएँ खोज में मिली हैं । ग. जयपुर-नरेश महाराज प्रतापसिंह सवाई के पुत्र; कवि पद्माकरभट्ट के ग्राश्रयदाता; १८७५ वि० के बीच वर्त्तमान; घ. उदयपुर-नरेश, १८९८ वि० के लगभग त्रर्त्तमान; कवि दलपतिराय के ग्राश्रयदाता।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशायनमः ।। ग्रथ भारती कण्ठभरणं

लिख्यते ।। छप्पै ।।

कनकलीकजनुषचित महा मरकत गिरि उपर ।

मनुचंपे की भल लसत छवि, तुलसी जू पर ।।

जनु सजल घनश्याम मध्य दामिनि दमकत ग्रति ।

मनु मनोज उर माह ग्रमित सौं रही सोच इति ।।

जनु नख तमाल तरु पैंच दी कुन्दन लतिका ललित वर ।

जय राधे हरि भरि ग्रंक मैं जगतसिंह कल्यान कर ।।

ग्रन्य की पंक्तियाँ–पंचावन ऊरु पाँच को सकल छंद परिमानु ।

से समतो उर ग्रानि कै भाषा किये विधानु ।। २०१।।

पुष्पिका–इति श्रीमन्महाराजकुमार विस्वेन बंसावतंस दिग्विजय सिहात्मज जगतसिंह कविकृते भारती कण्ठाभरणे वरणवृत्तिछन्दवरनने नाम चतुर्थोध्यायः ।। ४ ।।

विषयवस्तु–प्रस्तारस्वरूप, गुरुलघुविचार, मात्रा ग्रौर छन्दादि-वर्णन।

२९. भाषापिङ्गल : ग्रन्थकार–× ।[१] लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र सं०–११ । प्र० पृ० पं०–११ । प्र० पं० ग्र०–४४ । ग्राकार–१०" × ४" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय–छन्दःशास्त्र। प्राप्तिस्थान- पं० गुना मिश्र, लालगंज, झंझारपुर (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रथ भाषापिङ्गलनिर्णय ।।

मगन तीनि गुरु जानिये मगन ग्रादि लघु होई ।

त्रिलघुमय नगन ग्रादि गुरु भगन कहै सम कोई ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–पंकज वाटिका ।

ग्रादि भगन गनन गनय दज मन युग्म लघु ग्रन्त ।

चौंसठिकल के छन्द इह पंकज वाटिका इन्त ।।

पुष्पिका– × ।

विषयवस्तु–मात्रा ग्रौर छन्दोनिरूपण।

३०. भाषाभूषणम् : ग्रन्थकार– श्रीधर, झा ।[१] लिपिकार–शङ्करदत्त शर्मा । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१६९४ श० । पत्र सं०–४ । प्र० पृ० पं०–१३ । प्र० पं० अ०–५२ । आकार–१२" × ४" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय–अलङ्कारशास्त्र। प्राप्तिस्थान- पं० रक्षनाथ झा, अंगारछरकी (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तिया–श्री गणेशाय नमः ।।

शङ्कर शङ्कर सेइके शिवद शिव के पाई ।
गणपति प्रति बोधक प्रवल चरणक्ष उरध्याई ।। १ ।।
श्रीधर ओझा बिप्रवर मुरलीधर जसु नाम ।
तीरथ .... प्रयाग में सर सरसों धरि ध्यान ।। २।।
चन्द्रालोक विलोकिक कलित कवलयानन्द ।
इह भाषा भूषण रच्यो करिके आनँदकन्द ।। ३ ।।
लोगवाद मुसल्ल्य साह खान बहादुर सिन्धु सुधा सदली हें।
जाकी सभा कवि वाजें कलाधर मङ्गल में सुखसाज थली हें ।।
तामे कह्यो कवि श्रीधरसों भरतादिक रीति यू चारु चली हें ।।
भाषादि में मनिभूषण सें वागर्थज्यों भूषण भांति भली हें ।। ४ ।।

अन्त की पंक्तियाँ–अलङ्क शतए कहे श्रीधर सुकवि वषानि।
चित्रालङ्कति चित्र सो कवि जननी जो जानि ।। १४९।।

पुष्पिका–स्वस्ति श्रीमतसकलसामन्तचन्द्रचूडामणिराजितचरणकमलकरकरालकरवाल-निजितारातिमण्डल निजतेज प्रकटीकत प्रतापानल विद्वत् कुलमनोभशङ्ग–विश्रामधाम निरंस्तार्याखिल महीमण्डलाखण्डल नवाबमुसल्येह षानबहादुर-राज्ञापित प्रयागनगरस्थ कविवर श्रीधरझाकृतं भाषाभूषर्ण संपूर्णम् ।। शाके १३९४ मार्गशुदि ५ भृगौ सान्हाग्रामवासिना संभूता ग्रामे श्रीशङ्करदत्त-शर्मणालिखितमिदं भाषाभूषणम् ।। हरिहराभ्यान्नमः ।।

विष्यवस्तु–अलङ्कारादि-निरूपण।

---

१. भाषाभूषण के ग्रन्थकार श्रीधर झा खोज में नये मिले हैं। पूर्ववर्ती विवरणों में तथा साहित्येतिहास-ग्रन्थों में ग्रन्थकार के नामोल्लेख का अभाव है। संभवतः, ये नवोपलब्ध ग्रन्थकार मिथिला-निवासी हैं। ग्रन्थ और ग्रन्थकार अनुसंधेय हैं।

३१. भाषाभूषणम् : ग्रन्थकार– यशवंत सिंह[१] । लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र सं०–१९ । प्र० पृ० पं०–७ । प्र० पं० ग्र०–३४ । ग्राकार–१०" × ४" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय–ग्रलङ्कारशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० गोविन्द मिश्र, गंगौली, मनीगाछ (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियां–श्री नमो गणेशाय ॥

विघ्नहरन तुम हो सदा गनपति होउ सहाई ।
विनती कर योरे करौं दीजे ग्रन्य बनाई ॥ १ ॥
मेरे मन में तुम वसो ऐसी क्यों कहि जाई ।
ताते यह मन ग्रापसो लीजे सेव कुलाय ॥ २ ॥
रागी मनु मिलि श्याम सो भयो नग हरी लाल ।
यह ग्रचरज उज्वल भयो जे मैं त्यतिहकाल ॥ ३ ॥

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

लक्षन तिय ग्ररु नाह के हावभाव रसधाम ।
काम करे संयोग ते भाषाभूषणन्गम ॥ २१२ ॥
भाषाभूषणग्रन्थ की यो देखे चितलाय ।
विविध ग्रर्थसहित बुझे समुझे सबे बनाय ॥ २१३ ॥

पुष्तिका–इति श्रीमन्महाराजाधिराज राठौर यशवंत सिंह विरचितो भाषाभूषगा समाप्तः॥

विषयवस्तु–रस, नायिकाभेद-निरूपण ।

---

१. महाराज गजसिंह के पुत्र ग्रौर सूरसिंह के पौत्र; १६९२-१७३५ वि० बीच वर्त्तमान; बादशाह शाहजहाँ के समकालीन; शुजा ग्रौर ग्रौरंगजेब के युद्ध में शुजा के सहायक: दक्षिण, गालवा ग्रौर गुजरात के सूवेदार; नरहरिदास ग्रौर नवीन कवि के ग्राश्रयदाता; ग्रजीत सिंह के पिता। सूरत मिश्र से इन्हें कविता-रचना की प्रेरणा मिली। 'भाषाभूषण' के ग्रतिरिक्त नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी को इनकी सात ग्रन्य रचनाएँ खोज में मिली हैं, जो इस प्रकार हैं- १. ग्रपरोक्षसिद्धान्त, २. अनुभवप्रकाश, ३. ग्रानन्द-विलास, ४. सिद्धान्तबोध, ५. प्रबोधचंद्रोदयनाटक, ६. सिद्धान्तसार ग्रादि । विशेष विवरण के लिए दे० खो० वि० १६०१, ग्रं सं० ७१, ७२, ७३, ८३; खो० वि० १९०२, ग्रं० सं० १४, १५, १६, १७, २०, २२, ४६; खो० वि० १९०१, ग्रं० सं० ३९; खो० वि० १९०६, ग्रं० सं० १७६, २५१। इनकी रचनाग्रों में कर्म ग्रात्मतत्त्व-विचार, ईश्वर, माया-निर्णय, ग्रद्वैतवाद, मोक्ष ग्रौर ग्रात्मज्ञान का वर्णन, संस्कृत नाटकों के अनुवाद तथा ग्रलंकार-निर्णय हैं।

३१ (क). भाषाभूषणम् : ग्रन्थकार– यशवंत सिंह । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–× । पत्र सं०–११ । प्र० पृ० पं०–८ । प्र० पं० अ०–५१ । आकार–११" × ३¼"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय–अलङ्कारशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० गूना मिश्र, लालगंज, झंझारपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियां–ओं नमो गणेशाय ।।

विघ्नहरन तुम हौ सदा गनपति होहु सहाय ।

विनती कर जोरे करो दीजे ग्रन्थ बनाय ।। १ ।।

अन्त की पंक्तियाँ–अलङ्कार संयोगतें भाषाभूषणा नाम ।

लक्षम तिअ अअो पुरुष के अलंकार में धाम ।। २१२ ।।

भाषाभूषण ग्रन्थ को जो देखे मन लाय ।

विविध अर्थ साहित्य रस समुझै समै बनाय ।। २१३ ।।

पुष्पिका–इति भाषाभूषण समाप्तम्: ।। शुभमस्तु ।। श्रीरस्तु ।। सरस्वत्यै नमः ।।

विषयवस्तु–रस-नायिकाभेदादि-निरूपण ।

३१ (ख). भाषाभूषणम : ग्रन्थकार– यशवंतसिंह । लिपिकार–गुरुप्रसाद । रचनाकाल–×। लिपिकाल– १८६३ वि० । पत्र सं०–२० । प्र० पृ० पं०–१७ । प्र० पं० अ०–१६ । आकार–८¾" × ५"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी। विषय–अलङ्कारशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० मनमोहन मिश्र, बरारी (मुँगेर) ।

प्रारंभ की पंक्तियां–श्री गणेशाय नमः ।।

विघनहरन तुमहो सदा गनपति होहु सहाई ।

विनती कर जोरे करों दीजे ग्रन्थ बनाई ।। १ ।।

जोहि कीन्हो परपंच सब अपनी इच्छा पाई ।

तोकी हौं वंदन करों दीजै ग्रन्थ बनाई ।। २ ।।

करुनाकरि पोषत पदां सकलसूष्टिक प्रान।

ऐसे ईश्वर को हिए रहौ रैन दिन ध्यान ।। ३ ।।

मेरे मन में तुम वसौ क्यो ऐसी कहि जाई ।

तातें यह मन आपसों लीजे क्यों न लगाई ।। ४ ।।

रागी मनु मिलि स्याम सो भयो न गहिरो लाल ।

यह अचिरिजु उजलभयो तज्यो मैल तिहि काल ।। ५ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– लक्षनतिय ग्ररु पुरुष के हाव भाव रस धाम ।

ग्रलंकार संयोग तें भाषा भूषन नाम ।।

भाषा भूषन ग्रन्थ को जो देखे जित लाई ।

विविध ग्रर्थ साहित्य रस समुझै सवै नाई ।।

पुष्पिका–इति भाषाभूषनसमाप्तः ।।

सव विधि सपतिवान को सबको ग्रादरु देई ।

दीनबन्धु दीनकी को रही समुधि लेई ।। १ ।।

भाषाभूषन के पढ़े भाषा रह न भूष ।

गुन प्रसाद ऐसे लहै जैसे पानी ऊष ।। २ ।।

मिति भादवासुदी १३ संवत् १९६३ पोथी लीषि काशीनगर मनसाराम ।।

विषयवस्तु– नायक-नायिकाभेद, रस, उपमालंकार-निरुपण।

३२. भाषाभूषणम् : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–× । पत्र सं०–५६ । प्र० पृ० पं०–९ । प्र० पं० ग्र०–३६ । ग्राकार–११$\frac{1}{2}$" × ४"। दशा–खण्डित। भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली-नेपाली । विषय– ग्रलङ्कारशास्त्र। प्राप्तिस्थान- बाबू सुखदेव मिश्र, एकमा, सुपौल (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियां–ओं नमो गणेशाय ।। दोहा भाषाभूषण ।।

मेरे मनमें तुम वसो ऐसी क्यों कहि जाय ।

ताते एह मन ग्राप ते लीजय क्यों न लगाय ।। १ ।।

रागी मन मिलि श्याम सो भयो न गहीरो लाल ।

यह ग्रचरज उज्जल भयो तेजो मैल तेहि काल ।। २ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– ग्रसङ्गति ।।

तिनि ग्रसङ्गति काज ग्रकारज न्योर ठाम ।। ११८ ।।

ग्रौर ठौरही कीजिये ग्रौर ठौर के काम ।। ११८ ।।

और कारज आरम्भिये और करिये दौर ।

कोकिल मदमात भये झूमत ग्रंमा ....।।

पुष्पिका–× ।

विषयवस्तु– नायक-नायिकाभेद, रस, ग्रलङ्कार, दोष और गुण-निरुपण ।

३३. मथुरावर्णनम् : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१९२५ वि०। पत्र सं०–७ । प्र० पृ० पं०–९ । प्र० पं० ग्र०–४० । ग्राकार–११" × ४$\frac{3}{4}$"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी (व्रज) । लिपि–देवनागरी । × विषय– इतिहास। प्राप्तिस्थान- पं० बुट्टा झा, मुहम्मदपुर (मुजफ्फरपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रथ मथुरा वर्णन लिख्यते ।।

सहर के दूर बड़े २ बाग ठाढ़े हैं। तिनचे में वीते ग्रोर ने डामे डां हिरन रोज शुकरना हर जेते हैं। जिन रोयें राजा के कुमर हथियार बांधे सिकार षेल रहे हों ताके ग्रागे सहर के नगिर छोटेर वगीचा लगे रहे हैं। तामे ग्रनेक माली डोल रहे हैं तिनकी कमर ते दुसाला बाँधि रहे हैं हाथन मे सोने के कड़ुला पहरि रहे २ तिन मेंना ग्रोर तोता इस पपैय्या डोल रहे हैं ।। २ ।। सुनहरी दंडी के बोलवातिन सूरो सपदी बनाय रहे हैं नन्हें २ की क्या छेक रहे हैं वरन वरन के फूल २ रहे हैं और मोर कुहक २ बोल रहे हैं ताके वीच में सरोवर भईर रहे हैं ।। जी के चारों ग्रोर सोने की छारदिवारी बन रही हो तामे अनेक रंग के कमल खिल रहे हैं ताके आगे ग्रोर घाट वन रहे हें तामे वे जडाउ काम हे रहे हें ।। १ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– ग्रोर कटाक्षन की फेंकन देषि हजारन हजारन पुरसुन्दरी टुकरहोय ग्रपने ग्रपने गहने उतारि उतारि नंदकुमार के उपर न्योछावर करन लगी। ऐसे बहुत ग्रानंद में मगन मन होत भई । ग्रागें मसोनेन के घाटन में हार भर भर ग्रारती की त्यारी करमन लगे ।

पुष्पिका– श्री हरि: मि० चै० सु० ८, बु० संवत् १९२५ ।

विषयवस्तु– मथुरा के मन्दिरों, राजप्रासादों तथा पूजाविधियों के वर्णन ।

३४. महाभारत : ग्रन्थकार–सबलसिंह[१] । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१२११ फ०। पत्र-सं०–१६४ (२२०–३८४) । प्र० पृ० पं०–२०। प्र० पं० ग्र०–२४ । ग्राकार–१०" × ७½"। दशा–खण्डित । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– इतिहास काव्य । प्राप्तिस्थान- पं० शिवशंकर झा, कैना, सिंगिया (दरभंगा) ।

---

१. इटावा के निकटवर्त्ती ग्राम-निवासी; जाति के चौहान क्षत्रिय; १७२७ वि० के लगभग वर्त्तमान; दोहे-चौपाइयों में महाभारत के प्रसिद्ध अनुवादक । भागवत दशम स्कन्ध का भी ग्रंथकार ने ग्रनुवाद किया है। रचनाकाल के सम्बन्ध में निम्नलिखित पंक्तियाँ ग्रंथकार ने उद्धत की हैं जो विवेचनीय हैं।

"संवत् सत्रह सै सोरह दस । कवि दिन तिथि रजनीस वेद रस।
माघ पुनीत मकर गत भानू । ग्रसित पक्षऋतु शिशिर प्रमान् ।।"

श्रीरामनरेश त्रिपाठी के मतानुसार इनका ज़न्म-संवत् १७०० के लगभग ग्रोर निधन-संवत् १७९२ के लगभग ग्रनुमान किया जाता है। भीष्मपर्व की रचना १७१८ वि० में ग्रोर स्वर्गारोहण पर्व की १७८१ वि० में । महाभारत के अतिरिक्त इनके लिखे हुए रूपविलासपिंगल, षट्ऋतु बरवै

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गनेसाए नमः । श्री दुर्गादेव्यै नमः ॥

भीखमपर्व सबल सिंह भाषा लीष्येत ॥

गुरुगोविन्द के चरन मनईऐ जिन प्रसाद उत्तीम गति पईऐ ॥

कै प्रनाम रघुपति के पाएन चारिवेद जाके गुनगाएन ॥

अवधनाथ सीतापति सुन्दर दिनबन्धु रघुवंश पुरंदर ॥

सिव सनकादिक अन्त न पावे नरमुख ते केते गुनगावे ॥

महिमा अगम कहत न वनी आवे सेस सहस्रमुख केते गावे ॥

अन्त की पंक्तियाँ– भारथ सुने अनेग फल हमसो कहा न जाए ।

अंतकाल वैकुण्ठ बस दरस देहि यदुराई ॥

पुष्पिका– इति श्री महाभारथ हरगौरी संवाद व्यासवचन संसक्रीत भाषा सवलसिंह विरंचीते सभापर्व प्रथमो अध्याए ॥ १ ॥ ८५ ।

इति श्री पुस्तक महाभारथ कथा संपूरनो अठारह पर्व जमा लीष्यते जो देखा सो लीखा मम दोष न दीअते शुभमस्तु ।

सन १२११ साल मीती फागुन शुदि १ रोज ॥

विषयवस्तु–महाभारत पर आधृत कथा ।

और भाषाऋतूपसंहार भी कहे जाते हैं। दे० कविता कौमुदी, प्र० भाग, नवजीत–प्रकाशन, बम्बई, आठवाँ संस्करण, पृ० सं० ४३३ । सरोजकार के मत से इनका जन्म १६७० ई०=१९२७ वि० में हुआ था। दे० शिवसिंह सरोज, क० सं० ९१२, ९१३ । किशोरीलाल गुप्त ने सवल सिंह का रचनाकाल १७१२ वि से १७८१ वि० के बीच माना है तथा षट्ऋतु और भाषाऋतुसंहार को एक ही ग्रन्थ कहा है। ग्रियर्सन ने इन्हें चन्दागढ़ और सबलगढ़ का राजा बताया ह। दे० 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ् हिन्दुस्तान डॉ० ग्रियर्सन-कृत, का सटिप्पण अनुवाद) किशोरीलाल गुप्त, पृ० सं० १८०, क० सं० २१० । काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में इनकी बहुशः पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। दे० खो० वि० १९०४, ग्रं० सं० ६६; खो० वि० १९०६–८, ग्रं० सं० २२४; खो० वि० १९१२–१४, ग्रं० सं० १६०; खो० वि० १९२३–२५, ग्रं० सं० ३६३, खो० वि० १९२६–२८, ग्रं० सं० ४१२ । कवि के रचनाकाल के सम्बन्ध में ना० प्र० स० के खो० वि० में पर्याप्त विवेचन हुआ है। दे० खो० वि० १९२३–२५, कवि-सं० ३७३, पृ० सं० १२१, १२२ ।

३५. महाभारत : ग्रन्थकार– लखनसेन[1] । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१२११ फ०। पत्र-सं०–२२० । प्र० पृ० पं०–१८। प्र० पं० अ०–२४। आकार–१०" × ७½"। दशा–खण्डित । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– इतिहास काव्य । प्राप्तिस्थान- पं० शिवशंकर झा, कैना, सिंगिया (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–

राजा जवअ .... ग्रीहगएउ महाहर्ष तव चीत मह भएहु ।।
सो सुभगाकुल मन्त्री पीआरी जाके दरस महासुखकारी ।।
अति सलोनि सो कर्म आगरी पुजालोक सवसुखीता नगरी ।।
एहि विधि रहहि एकही संगा रैनि दिवस कर बहुते रंगा ।।
महथा पुरोहित काज चलाहि राजा कुअवरि एक होए भावहि ।।
दीन दिन हर्ष आन............ अति होई दुनियाँ कार्ज करैनृप सोई ।।

अन्त की पंक्तियाँ–सवविधि मंगलचारहोए घट घट गोविन्द गुनगाव ।
लखनसेनि गुनगावही सभीमीलिरामजस गाव ।।

इति श्री महाभारथ उमामहेश्वरीवादे व्याससेव वचन संसक्रीत भाषा लखनसेनकृत उतजोगपर्व अहीवर्नकजज्ञ संतति पाण्डवक विधाननोनाम दुतीअमो अध्याए ।।२।।४८।। कथापुदीक एहीनाम सौ ।।

विषयवस्तु–महाभारत पर आधृत रचना ।

३६. योगरन्न : ग्रन्थकार– लक्ष्मीपति[2] । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–४ । प्र० पृ० पं०–२८। प्र० पं० अ०–२०। आकार–११" × ७"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय– योगशास्त्र । प्राप्तिस्थान- पं० हलधर झा, मिरजापुर, नोहटा (भागलपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गुरवे ।। सोरठा ।।

---

१. इनकी चर्चा परिषद् के पूर्व-विवरण में आ चुकी है। उक्त विवरण के अतिरिक्त इस नवोपलब्ध ग्रंथकार के सम्बन्ध में अभी कोई नई सूचना उपलब्ध नहीं हुई है। दे० प्रा० ह० लि० पो० का वि०, खं० ४ (वि० रा० भा० प०, पट०), पृ० सं० २१, ग्रं० सं० ३५८ । काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी यह रचना खोज में मिली है। दे० खो० पि० १९०९-११, ग्रं० सं० १६७ ।

२. खोज में नवोपलब्ध । पूर्ववर्त्ती खोज-विवरणों तथा साहित्येतिहास-ग्रन्थों में उल्लेख नहीं है। प्रतीत होता है, 'योगरत्न' के ग्रन्थकार लक्ष्मीपति विहारनिवासी हैं और अनुसन्धेय हैं।

सतसर सरसिजजात, वन्दो गुरुपदयोडिकर ।
लक्ष्मीपति के तात, सदा परम ग्रानन्द कर ।।
या तें निर्मल गात, कर (न) चाहो भाषा कछुक ।
भूत शुद्धि को बात, यो करताकर मोक्ष तह ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–दोहा ।

लक्ष्मीपति भाषन किवो नृप टोडल के हेतु ।
भूत शुद्धि समाधि लौ हठयोग की सेतु ।।
नाग वेद चौपाई इन्ह दीपपक्ष है छन्द ।
रस युगल दोहा सहित सोरठ नन्दा चन्द ।।
नभसि मोल दिग जानिवो रस पुनि दुतिग्रा पूर्व नक्षत्र ।
मास पक्ष तिथि कवि दिवस लीख्या पोथी पत्र ।।
उभयवाण दिनकर सहित सनशूनो भूपाल ।
मदन ग्रस्त नभनिधि प्रथम वीते सम्वत काल ।
योगरत्न पोथी विमल लक्ष्मीपतिकृत होय ।
पुष्पवाटिका भवन में द्विजप्रसाद लिपि होह ।

पुष्पिका–इति श्री योगरत्न पुस्तकं समाप्तम् । शुभमस्तु ।

विषयवस्तु–हठयोगनिरूपण ।

३७. रघुवंशभूषणचरित : ग्रन्थकार– तुलसीदास[१] । लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र-सं०–३ । प्र० पृ० पं०–१२। प्र० पं० ग्र०–४४। ग्राकार–१०" × ५½"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– स्तोत्र-काव्य। प्राप्तिस्थान- पं० कारी मिश्र, रानी टोला, दरभंगा ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशायनमः । रघुवंशभूषणचरित ।। दोहा ।।

नीलसरोरुहनीलमणि नील नीरधरश्याम ।
लाजहि तन शोभानिरखि कोटीकीटिशतकाम ।।

चौपाई ।।

शारदमयङ्क वदन वदनछवि लीवा,
चातक पोल चिवुकदर ग्रीवा ।
ग्रधर ग्ररुणदर सुन्दर नासा,
विधुकर निकरविनिन्दक हासा।

---

१. प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास से भिन्न; खोज में नवोपलब्ध । ग्रंथ भी खोज में नया मिला है।

नव ग्रम्वुज ग्रांवक छवि नीकी,

चितवत ललितभाव तेजी की ।

भ्रकुटि मनोज चाप छविहारी;

तिलक ललाट पटल दुतिकारी ।

अन्त की पंक्तियाँ–शतपंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उरधरै ।

दारुण अविद्या पंचजनित विकास श्री रघुपतिहरै ।

सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर करु प्रीति जो ।

सो एक राम अकारमहित निर्वाणप्रद सभी आनको ।

जाकी कृपा लवलेशतें मतिमन्द तुलसीदासहूं ।

पार्षी परम विश्राम रामसमान प्रभुनाही कहूं ।

पुष्पिका–इति श्री रघुवंश भूषण चरित संपूर्णम् ।

विषयवस्तु–रामस्तुतिपरक भक्ति काव्य ।

३८. रसराज : ग्रन्थकार– मतिराम[१] । लिपिकाल–शम्भुनाथ शर्मा । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१७५७ श०=१२४३ फ० । पत्र-सं०–४२ । प्र० पृ० पं०–११। प्र० पं० अ०–३० । आकार–१०" × ४"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– अलङ्कारशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० गोविन्द मिश्र; गंगौटी, मनीगाछी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ओ नमो महागनेशाय: ।। अथ रसराजलिख्यते ।। कवित्त ।

ध्यावे सुरासुरसिद्धसमाज महेशहि आदि महामुनिज्ञानी ।

योग में यन्त्र में मन्त्र में तन्त्र में गावैसदाश्रुति सेव भवानी ।

संकट भाजनध्यायन की दुति सुन्दर दण्ड उदराह सो जानी।

ध्याय सदा पद पङ्कज की मतिराम तवे रसराजवखानी ।। १ ।।

दोहा ।। श्री गुरुचरण मनाई के गणपति को उर ध्याई ।

रसि कहते रसराज क्रिय सुकविनको सुखदाई ।। २ ।।

अन्त की पंक्तियाँ–समुझि-समुझि सब रीझिहैं सज्जनसुकविसमाज ।

रसिकन को रस को कियो नयो ग्रन्थ रसराज ।। ४२७ ।।

---

१. कानपुर जिले के तिकवाँपुरवासी प्रसिद्ध कवि; कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण; १७०७ वि० के लगभग वर्तमान; बादशाह औरंगजेब और बूँदी-नरेश भऊसिंह के आश्रित कवि; ललितललाम, साहित्यसार, लक्षणश्रृंगार, मतिराम सतसई और रसराज के ग्रंथकार । इनके अन्य तीन-चिन्तामणि, भूषण और नीलकंठ–भाई भी कवि हुए हैं। काशी नागरी-प्रचारिणी सभा के अन्य शोध -संस्थानों को भी इनकी रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ खोज में मिली हैं।

पुष्पिका– इति श्री सुकवि मतिराम विरचितायां रसराजः समाप्तः ।। शाके

१७५७ सन १२४३ साल माधकृष्ण पष्ठ्यां चन्द्रे

लिखितमिदं पुस्तकं श्रीशम्भुनाथशर्मणः ।। श्रीरस्तु शुभकस्तु ।

प्रीतम को दरसविना सुखै सकल सरीर ।

नैना पायो ना सुखै भरि भरि ग्रायै नीर ।।

विषयवस्तु–रसादिविवेचन।

३८(क). रसराज : ग्रन्थकार– मतिराम। लिपिकार–भगवानदास। रचनाकाल–×। लिपिकाल–१८७५ वि० । पत्र-सं०–१८ । प्र० पृ० पं०–२५। प्र० पं० ग्र०–३५ । ग्राकार–९" × ७½"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– ग्रलङ्कारशास्त्र । प्राप्तिस्थान- बा० चेतमनि सिन्हा, सुखुपुर (सहरसा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गनेशायनमः दोहा ।।

होतु नायका नायकहि, ग्रालम्बितशृङ्गार ।

ताते वर दो नायका, नायकमति ग्रनुसार ।। १ ।।

नायकालछन दोहा ।।

उपजति जाहिविलोकि कै, चित्त बीच रसभाव ।

ताहि वषानत नायका, जे प्रवीन कविराव ।। २ ।।

ग्रन्त की पक्तियाँ–

ग्रनमिष लोचन वाल यह जानो नन्दकुमार ।

मीच गई जरि वीचही विरह ग्रनलकी भाल ।।

समुझि समुझि सब रीझिहे सजन सुकवि समाज ।।

रसिकन के रस को कियो, भयो सकल रसराज ।।

पुष्पिका– इतिश्री मतिरामकृते रसराज समाप्तम् । संवत् १८७५ मिति फाल्गुन मासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ रविवासरे लिषित भगवान दासः मिसरवासी पी० करके शुभं भूयात् । श्रेयकल्याणमस्तु ।।

विषयवस्तु– सोदाहरण नायक-नायिकाभेद-निरूपण, सोदाहरण दूतीलक्षण, विभाव, हाव, विधृति, कुट्टनी, विभ्रम, प्रवास-मिलन तथा चिन्ता, स्मृति, प्रलयोद्वेगादि दस कामदशाग्रों का विवेचन ।

३९. रसविलास (रसिकप्रिया टीका); ग्रन्थकार–देवीचन्द्र[१]। लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–८९ । प्र० पृ० पं०–२४। प्र० पं० अ०–३० । आकार–१२½" × १०"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी। लिपि–देवनागरी । विषय– भक्ति-काव्य । प्राप्तिस्थान- पं० मनमोहन मिश्र, बरारी (मुँगेर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः ।। कवि को वचन मंगलाचरन है ।

एक जाको रदन कहिये दांत है और गज कहिये हाथी तैसी जाकी वदन कहिये मुष है और बुद्धि को सदन कहिये घर है अरु मदन कहिये कामदेव ताको वदन कहिये नास को करन वारो एक सो जो महादेव ताको सुत कहिये पुत्र है अथवा मदन धतूरे की नाम हौ । ताको मदन कहिये षानवारो एसो जो महादेव ताको पुत्र है ।। आनन्द को कंद कहिये मूल है और जयतु। जिसको वन्दना करतु है ।।

अन्त की पंक्तियाँ–कवि को वचन रसिकप्रिया पढ़े अति कहिये अत्यन्त रति कहिये प्रीति ताको मति कहिये बुद्धि सो बाढ़े है और रसिक प्रिया के पढ़े तै पुरुष सब रस रीति जातै है। औरुं रसिकप्रिया की जो प्रीती तासौ स्वारथ अरु परमारथ दोउ मिलत है ।। काव्यलिंग अलंकार ।।

पुष्पिका–इति श्री श्री मन्महाराजाधिराज श्रीदेवीचन्द्रविरचिते रसविलासे रसिकप्रिया टीकायां रस नीरसवर्जन नाम षोडशो विलासः ।।१६।। समाप्तोयं ग्रन्थः।। शुभंभूयात् । श्री कृष्णायनमः।।

विषयवस्तु–रसिकप्रिया-व्याख्या ।

४०. रस-सारस: ग्रन्थकार–×। लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–८। प्र० पृ० पं०–१०। प्र० पं० अ०–३२ । आकार–१०½" ४½"। दशा–खण्डि । भाषा–हिन्दी। लिपि–नागरी । विषय–अलङ्कारशास्त्र । प्राप्तिस्थान–पं० अर्जुन झा, पंडौल (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–गणेशाय नमः ।। दोहा ।।

प्रथम मंगलाचरन को तीनि आतमक जानि ।
नमस्कार अरु ध्यान पुनि आसिर्वाद बखानि ।। १ ।।
नमस्कारात्मक मंगलाचरण ।

---

१. खोज में नवोपलब्ध । हितापदेश के हिन्दी-गद्य में अनुवादकर्ता एक देवीचंद काशी नागरी-प्रचारिणी सभा को भी (१९०९-११ के खोज-विवरण में) मिल चुके हैं । उक्त खोज-विवरण में भी नामोल्लेख-मात्र हुआ है। कवि के सम्बन्ध की अन्य कोई सूचना नहीं मिली है। दे० खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० ६७। ये उनसे भिन्न प्रतीत होते हैं।

कदन अनेक न विघन को एक रदन गनराव ।

वंदनजुत वंदन करो पुटकर पुटक राव ॥ २ ॥

ध्यानात्मक षटपदी ।

वक्रतुंड कुंडलित सुंड जगवलित पुंडरद ।

अलिघुमंडल मंडरितदीन मंडित सुगंध मद ॥

वाहुदंड उद्यंड दुख भ्रुंडनि अमुंडकर ।

विघनखंड कटखंड ओज ऋतुभार तंडवर ॥

श्री खंड परसुनंदन सुखददासचंड चंडी तनय ।

अभिलाषु ताषु लाडल समुझि रासु आषुवाहन सदय ॥ ३ ॥

अन्त की पंक्तियाँ—त्रिया विदग्धा यथा ।

सैन उतकसैन पिदियोगन्तौम भीर विसाल ।

वाल सुधाक्योरे दुली पाराक्षुत तलषिलाल ॥

लिषि दरसायो पठयसषि हिया जुल्माई नंदलाल ।

पूजी वांच लिषिलि रच्यौ मुकुल ....॥

पुष्पिका—× ।

विषयवस्तु—नवरस-वर्णनपूर्वक नायिका-नायकर्णन ।

४१. रसिकप्रिया : ग्रन्थकार-केशवदास । लिपिकार—× । रचनाकाल—प्रसिद्ध । लिपिकाल—×। पत्र-सं०— ५२ । प्र० पृ० पं०—१० । प्र० पं० अ०—४८ । आकार—१२½" ५"। दशा-पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—मैथिली । विषय— भक्ति-काव्य । प्राप्तिस्थान—पं० मनमोहन मिश्र, बरारी (मुँगेर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्री गणेशाय नमः ॥ छप्पय ॥

एक रदन गज वदन सदन वुधि मदन कदन सुत ।

गौरिनन्द आनन्द कन्द गजवन्द चन्दजुत ॥

सुखदायक दायक सुकिरति गणनायक नायक ।

खल धार्यक धायक दरिद्र सभलायक लायक ॥

गुरु गुण अनन्त भगवन्त भक्तिवन्त भवभयहरन ।

जय केशवदास निवास निधि लम्बोदर असरनसरन ॥ १॥

अन्त की पंक्तियाँ—इहिविधि केशवदास रस अनरस कही विचारि ।

वरनत भूलि परी जहाँ कविकुल लेहु सुधारि ॥ १४ ॥

जैसें रसिकप्रिया विना देषियत दिन दिन दीन ।

त्यों ही भाषा कवि सवै रसिकप्रिया करि हीन ।। १५ ।।

बाढ़ें रति मति ग्रति पढ़े जाने सब रंस रीति ।

स्वास्थ परमारथ लहै रसिकप्रिया की मीति ।। १६।।

पुष्पिका—इति श्रीमन्महाराज कुमार इन्द्रजिद्विरचिताया रसिकप्रियायां ग्रनरसवर्णनं षोडश: प्रभाव: ।। १६ ।। समाप्तोऽयं ग्रंथ: ।।

४१ (क) रसिकप्रिया : ग्रन्थकार-केशवदास । लिपिकार—× । रचनाकाल—प्रसिद्ध (१६४८ वि०, ग्रंथ-पुष्पिका में) । लिपिकाल—× । पत्र-सं०— १० । प्र० पृ० पं०—२३ । प्र० पं० ग्र०—२२ । ग्राकार—६" × ३$\frac{१}{३}$"। दशा—पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—मैथिली । विषय— भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान—बा० भुवनेश्वर झा, महेशपुर, तेजपुर (दरभंगा)।

विषयवस्तु—प्रच्छन्नप्रकाशसंयोगवियोग वर्णन, नायिका-नायकवर्णन ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्री गणेशाय नम: ।।

ग्रतिरति गति मति एक करि विविध विवेक विलास ।
रसिकन्हि को रसिकप्रिया सो कीनी केशवदास ।।
ज्यों विनु डीठिन सो भए लोचन लोल विशाल ।
त्यो ही केशव सकल कवि विज वानी नवसाल ।।
तातें रुचि सो शोचि पचि कीजै सरल कवित्त ।
केशव श्याम सुजन के सुनत होए वश चित्त ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—जैसे रसिकप्रिया बिना देखी दिन दिन दीन ।

त्यों ही भाष कवि सवै रसिकप्रिया विनु हीन ।।
वाढ़ै रतिमति ग्रति परै जानै सब रसरीति ।
स्वारथ परमारथ लहै रसिकप्रिया के प्रीति ।
साधारन रस वाधावधिक राधाजू के ग्रङ्ग ।।

पुष्पिका— इति श्रीमन्महाराजकुमार इन्द्रजित विरचितायां रसिकप्रियायां रसानुरस वर्णनं नाम षोडश: प्रभाव: ।। समाप्तश्चायम् ।।

सम्बत सोडहसै वरष वीते ग्रठतालीस ।
कातिक सुदि तिथि सप्तमी वारवरन रजनीश ।।
ग्रपने ग्रपने धर्मतह सदासमै सुखकारि ।
जामों देश विदेश कै सवै रहै नृप हारि ।।

विषयवस्तु—नायकनायिकादिभेद-निरुपण रसानुरस ग्रौर हावभावादि का वर्णन ।

४१ (ख). रसिकप्रिया : ग्रन्थकार–केशवदास । लिपिकार–जगतमनिसिह । रचनाकाल-प्रसिद्ध। लिपिकाल–×। पत्र-सं०– ५ । प्रं० पृ० पं०–२०। प्र० पं० ग्र०–२२ । ग्राकार–१२" × ७¾"। दशा–खण्डित । भाषा– हिन्दी। लिपि–देवनागरी । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान–बा० चेतमानि सिन्हा, सुखुपुर (सहरसा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–

एक रदन गजवदन सदन बुधि मदन कदन सुत ।
गौरी नन्द ग्रानन्द कर जगवन्द चन्द युत.॥
सुखदायक दायक सुकृत गणनायक ।
खलधायक धायकदरिद सबलायक लायक ॥
गुरु गुण ग्रनन्त भगवन्त भजु भगवन्त भवभय हरण ।
जय केसवदास निवासनिधि लम्बोदर ग्रसरण सरसा ॥ १ ॥ षटपद
श्री वृषभानु कुमारिहेतुशृङ्गाररूप भूप ।
वासहरण रसरास मातुबन्धन करुणामय ॥
केसी प्रति ग्रतिरौद्र विरमा ग्रौघासुर ।
भयदाना पान कीयो स्विभट छलकी उर ॥
ग्रति ग्रद्भु द वधि विर्स्नमति सान्तिसन्त सोचित सूचित ।
कहिके सब सेवक रसिकजन नवरस मैं व्रजराज नीत ॥ २ ॥

दोहा ॥

नदी बैत वैतीर तंह तीरथ तुंगारन्य ।
नगरो वोछो वहुवसे धरनी तल मे धन्य ॥ ३ ॥
ग्राश्रम चार वसे तहां चार वर्ण सुभ कर्म ।
जपतप विद्यावेदविधि वढ़ैसबै धनधर्म ॥ ४ ॥
ग्रपने ग्रपने धर्म ते सभै सदा सुखकारि ।
जासै देश विदेशमो रहै सभै नृपहारि ॥ ५॥
दीन प्रति जिति दूनो बढ़ै सवै देग्रा ग्ररुदान ।
ता पुर कासि मिश्र सुत केसवदास सुजान ॥ ६ ॥
रच्यौ विरंचि विचारि तहां नृपमनिमधु कर साह ।
गहरवार कासीसुर विकुलमडन जस जाह ॥ ७ ॥
ताको पुत्र प्रसिद्धमहि मण्डल दुलहराम ।
इन्द्रजीत ताको ग्रनुज सकल धर्म को धाम ॥ ८ ॥

दीन्ही ताई नरसिंहजित मनरंजन जैसिद्धि ।
हित के लछन राम है बढ़ी धर्म सो वृद्धि ।। ९ ।।
तिन कवि केसोदास सो कीन्हो धर्म सनेह ।
सब सुख दै करियो कह्यो रसिकप्रिया करि देह ।। १० ।।
सम्वत सोडह से वरिस विती ग्रठतालीस ।
कातिक सुदि तिथि सप्तमी वार वरन रजनीस ।। ११ ।।
ग्रतिमति गतिरति एक करि विविध विवेक विलास ।
रसिकन को रसिकनप्रिया कीन्ही केसवदास ।। १२ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–दोहा ।।

कही सभै जो जानिउ ग्रौर श्रृंगार की हार ।
कैसो इस ग्रनरस कह्यो कहो करो तु विचार ।।

पुष्पिका–इति श्रीमन्महाराज कुमार इन्द्रजीत विरचितायां रसिकप्रियायां नवरस वरननम एकादशो प्रभावः ।। लीषीत्वा श्री जगतमनिसिह स्वदेत्तं वैसाष शुक्ल १५ रोज शनि संपूर्ण समाप्तम् ।। ६ ।।

विषयवस्तु–नायिकादिभेद-निरूपण ग्रौर विभानुभावसंचारिस्थायिभावादिलक्षण।

४१(ग). रसिकप्रिया : ग्रन्थकार–केशवदास । लिपिकार–× । रचनाकाल-प्रसिद्ध । लिपिकाल–× । पत्र-सं०– १८। प्र० पृ० पं०–९। प्र० पं० ग्र०–४२ । ग्राकार–१०½" × ४"। दशा–खणिडत । भाषा– हिन्दी। लिपि–देवनागरी। विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान–पं० वेदानन्द मिश्र, रानीटोला, दरभंगा।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–

चतुराईन मोचित कान्ह भये रंस कोह तें भाई ।। ९ ।।
ग्रथ दक्षिणलक्षणम् ।।
पहिले सो हिय ह्वे दससहज बड़ाई कानि ।
चित्त चलाग्रो ना चले दक्षिण लक्षनजानि ।।
ग्रय प्रच्छिन्न दक्षिणलक्षनम् ।। कवित्त ।।
हरि से हित सो भुमि भूलिहू न कीजै मान
हा तौ करि हियहुतें होत हित हानिये।
लोक दे ग्रलोक ग्रनि नीकेहुकों लागतु है
सीताजू को इस गीता के सें उर ग्रानिये ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—ग्रथ हेलाहावलक्षन ।।

पूरनप्रेम प्रतापतें भूलति लाज समाज ।।

सोहैं खाजिहि हरतहिय राधा श्री ब्रजराज ।।

ग्रवलोकनि ग्राकुल में चिग्रलूप भरी युगफांसि भर्ले गलमेली ।

मृदुहास सुवास सौं जाह मिली वह जोन्हसि जामिनि मांझ ग्रकेली ।।

ग्रधरामधु प्याइ किए रस केसवराइ करी रसरीति नवेली ।

वन में वृषभानसुता हरिको सुख ही हरिले गई हेलही हेली ।।

पुष्पिका—× ।

विषयवस्तु— प्रच्छन्नप्रकाशविचित्र-वर्णन, नायिकाभेद-निरूपण, प्रच्छन्नप्रकाश-दर्शन- विश्लेषण, चेष्टा, दौत्य, ऊढानूढा, मिलन, विरह, विभावादि, हावादि-वर्णन तथा खण्डिता का परिचय ।

४२. रागकल्पद्रुम : ग्रन्थकार—कृष्णानन्द व्यासदेव[१]। लिपिकार—× । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× । पत्र-सं०— ७८। प्र० पृ० पं०—२० । प्र० पं० ग्र०—३६ । ग्राकार—११" × १०½"। दशा—खणिडत । भाषा— हिन्दी । लिपि—देवनागरी। विषय— भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान—प्राप्तिस्थान—बा० ठाकुरप्रसाद सिंह, सुखुपुर (सहरसा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— श्री गणेशायनमः ।। श्री सरस्वत्यै नमः ।। श्री गोपीजनवल्लभाय नमः।।

ग्रथ श्री कृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सांगीत रागकल्पद्रुम प्रारम्भः।।

देवीं सरस्वतीं नत्वा गणेश प्रणमाम्यहम् ।

संगीतरागकल्पद्रु मरागसागरेण प्रकासितः ।।

नीलाम्बरा वृष्टित गौरदेही विम्बाधरं कुण्डल मणिडतास्याम् ।

श्री कृष्णा वत्साम्बुज दंतनेत्री भजामि राधां सकलार्थ सिध्ये ।। १ ।।

भगवानोवाच ।।

नाहं वसामि वैंकुण्ठे जोगिनां हृदयेनच ।

भभ्दक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ।।

---

१. व्रजजीवन दास के समकालीन; १८९९ वि० के लगभग वर्त्तमान; काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी यह पाण्डुलिपि खोज में मिली है। दे० खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० ३४। यह ग्रंथ ग्रनेक भागों में प्रकाशित भी हो चुका है।

ग्रथनाद्‌महिमां ।

सुष सुष निधानां दुःखितानां विनोदः
श्रवण हृदयहारो मन्मथस्याग्रदूतः ।
ग्रतिचतुरसुगम्यो वल्लभी कामिनीनां
जयति जयति नादः पञ्चमश्चोपवेदः ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–नारी देदे ग्रपने कर की परम प्रीति उपजावहु।
ग्रानजंत धुनि सुनि उपरपन करनौ भुज कहलाव गावहु।
जिन संका जिग्र करहु लाल मेरे काहे का भरमावहु ।
वाहु उचाई कालि की नाई धोरी धेन बुलावहु ।
नाचहु नेक जाउ वलि तेरो मे रे सा.......

पुष्पिका–× ।

विषयवस्तु– ४६५ गीतों में रासलीला का वर्णन ।

४३. राधिकामंगल : ग्रन्थकार–गंगादास[१]। लिपिकार–× । रचनाकाल–× । लिपिकाल–× । पत्र-सं०– १५ । प्र० पृ० पं०–१८ । प्र० पं० ग्र०–१८ । ग्राकार–$७\frac{१}{४}$"×४"। दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– पं० श्रीकान्त पाठक, रौतारा (मुजफ्फरपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्रीमते रामानुजाय नमः ।।
मंगल ग्रारति सिया रघुवरकि गौर वरन तन स्याम सुन्दरकि ।। टेक ।।
मंगल रूप भूपदसरथग्रिह मंगल धनुष शरासन शरकि ।। १ ।।
मंगल ग्रसन वसन दिन मंगल सुरहित लाग धरे तन नरकि ।। २ ।।
मंगल भाल तिलक गौरोचन मंगल मालवनी छवि उरकि ।। ३ ।।
मंगल भरथ लषन रिपुसूदन मंगलीयाशोभाछवि धरकि ।। ४ ।।
मंगल कनक थार कौशील्या ग्रारतिकरन चलथि खल हरकि ।। ५ ।।
मंगल गान करे सुर वनीता मंगल सुमन वरषे सुरतर श्रीः ।। ६ ।।

---

१. खोज में नवोपलब्ध प्रतीत होते हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज में दो गंगादास मिले हैं। क० हरिसिंह के पुत्र नवनदाप्त के शिष्य; चंदेल क्षत्रिय; संतसुमिरनो, शब्दसारबानी ग्रौर महालक्ष्मीजू के पद ग्रादि ग्रन्थों रचयिता । दे० खो० वि० १९०६-८, ग्रं० सं० २५२ ए, बी, सी० । ख० बलरामपुर (गोंडा) के महाराजा के ग्राश्रित कवि; जाति के कायस्थ; १९१९ वि० के लगभग वर्तमान, 'सुमनधन' के ग्रन्थकार । दे० खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० ८५ । 'राधिकामंगल' के प्रस्तुत ग्रन्थकार उपर्युक्त दोनों से भिन्न हैं।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

मथुरा मण्डल गोपसखि मंगल करे घर घर ग्रानंद होये वधानन्द के वटे।

येह लीला ग्रवतार रूप प्रभु धारिये रामकृष्ण नीजमूल हृदे में उचारिये ।

खाडलीलाल को मंगल सुन्दर दे गुण गापे हरखि निरखि गंगादस हरिवीन चीतलाइये ।।

इति श्री राधिकामंगलसंपूर्णम् ।।

विषयवस्तु–राधिका ग्रौर कृष्ण के सम्बद्ध भक्ति के गीत ।

४४. रामगीतावली : ग्रन्थकार–तुलसीदास । लिपिकार–मनसाराम । रचनाकाल– प्रसिद्ध । लिपिकाल–× । पत्र-सं०– ८३ । प्र० पृ० पं०–लगभग-२१ । प्र० पं० ग्र०–२० । ग्राकार–१०"×६¼"। दशा– ग्रच्छी, पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– मनमाधव मिश्र, बरौनी (मुँगेर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथ देव ग्रस्तुति लिख्यते ।।

राग विलावल।।

गाइए गनपति जगवंदन । संकर सुग्रन भवानी नंदन ।।

सिद्धि सदन गजवदन विनायक । कृपा सिंधु सुंदर सब लायक ।। १।।

मोदक प्रिय मुद मंगलदाता । विद्यावारिधि बुद्धिविधाता ।। २ ।।

मागत तुलसीदास कर जोरे । वसहु राम सिग्र मानस मोरे ।। ३ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– मारुति मनु रुचि भरत की लपि लषन कही है।

कलि कालहु नाथ नाम सो परतीति प्रीति एक कंकरकी निवही है।। टेक।।

सकल सभा सुनी लै उठी जानि रीति रही है ।।

कृपा गरीब निवाज की देखन गरीब को साह सुवांह गही है ।। १ ।।

बिहसि राम कहयो सत्य है सुधि मैं हूँ लही है ।

मुदित मथ नावलवनी तुलसी ग्रनाथ की परी रघुनाथ सही है ।।२।। ।।२७८।।

पुष्पिका–इति श्री रामगीतावल्यां तुलसीदासकृत विज्ञप्ति विष्णुपद समाप्तं ।। इति गीतावल्यां पद ३७०।। मिति कार्तिक कृष्णपक्षे तिथी पंचवा वार भौमवासरे पोथी लिखी मनसाराम जोसीन लिषी ग्राम नरमध्ये महाराजा बाहादुर जी का ग्रमलमः ।।

विषयवस्तु–रामस्तुति से सम्बद्ध काव्य ।

४४ (क). रामगीतावली : ग्रन्थकार–तुलसीदास । लिपिकार–परसमनिदास । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल– १२४१ फ० । पत्र-सं०- ४७ । प्र० पृ० पं० लगभग– ३२। प्र० पं० ग्र०–२५। ग्राकार–६½"× ६½"। दशा– ग्रच्छी ग्रौर पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि-देवनागरी, (पुरानी कैथी भी कहीं-कहीं) । विषय– भक्तिकाव्य। प्राप्तिस्थान–बदरीपति बाबू केशकर सिन्हा, सुखुपुर (भागलपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– नमो महागनेसाए ।। ग्रथ गितावली गोसाई तुलसीदासकृत

बालकाण्ड लिख्यते ।

नीलांज (न) श्यामल कोमलां (ग) सीतासमारोपितवामभागं।

पादौ महासायक चारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।।

राग ग्रसावरी ।।

ग्राजु सुदिन सुभ घड़ी सोहाई

काह कहौ ग्रानंद ग्रधिकाई ।।

रूपसील गुनधाम रामनृप भवन प्रगट मै ग्राई ।

ग्रति पुनीत मधुमास लगन ग्रहवार योग समुभाई ।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– वेद पुरान विचारी लगन सुभ महाराज ग्रभिषेक कीग्रो ।

तुलसीदास जिग्रजानि सुग्रवसर भक्तिदान वर मांगि खीग्रो ।।

३८। ३३२।।

पुष्पिका–इति रामगीतावली उत्तरकांड संपूर्ण समोप्तम् ।

ग्रासीन सुचिदल सप्तमी सनौ ग्रग्र जो वार ।

त्रिती पहर को ग्रन्त मो पोथी लिखित उतार ।।

लिखित दस्त खह पुस्तकी करत परसमनिदास ।

मूल वलाईन मीथिला ग्रहै जगतपुर वसुवासी ।।

तए सूर्य सन कहत हौ वेद इन्दु दैसाल ।

वसत लिखन गन कहत हौ परगना मल्हनि गोपाल ।।

विषयवस्तु–रामचरित्रवर्णन ।

४५. रामचन्द्रिका : ग्रन्थकार–काशीनाथ[१] । लिपिकार–सुमिरनदास । रचनाकाल– ×। लिपिकाल– १२०४ फ०=१८५४ वि०=१७९७ ई० । पत्र-सं०- १३१ । प्र० पृ० पं० लगभग–१०। प्र० पं० ग्र०–३४ । ग्राकार-११½"× ५½"। दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– बा० चिन्तामणि सिन्हा, सुखपुर (भागलपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः सरस्वते नमः ।। मनोरमा छन्द ।।

बालक मृडालिनी ज्यौं तोरि डारे सब काल,
कठिन कराल वै ग्रकाल दीह दुष को ।
विपति हरत हठि पद्मिनी के पात समयक ज्यौ पतालये लिपटन वै कलुष को।
दूरि य कलंक लंक भवशीश शशि शम राखत है।
तो दास दास के वपुष को सांकरे कि साकरणि सनमुख होत ही ।
तौं दशमुख जौ ये गज मुख मुख कौ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ-

ग्रशेष पुराण पाप के कलाप ग्राप में वोहाई ।
विदेह राज सो सनेह भक्तराम को कहाई ।।
लै समुझि लोक ग्रन्त मुक्ति होई ताही ।
पड़ै गुनै कहै सुनै जो रामचन्द्र चादिकाही ।।

---

१. 'भृतहरिचरित्र' (भर्तृहरिचरित्र) के रचयिता एक काशीनाथ पहले भी काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिल चुके हैं, दे० खो० वि० १९२६-२८, ग्रं० सं० २२९; खो० वि० १९२९-३१, ग्रं० सं० १५९, खो० वि० १९३२-३४, ग्रं० सं० १०९। ये उनसे अभिन्न प्रतीत होते हैं। इनके सम्बन्ध की ग्रन्य कोई विशेष सूचना नहीं उपलब्ध हो सकी है। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज में मिली पाण्डुलिपि का लिपिकाल १९१६ वि०=१८५९ ई० ग्रौर १९७८ वि०=१८२१ ई० है। एक पाण्डुलिपि में ग्रन्थ का रचनाकाल १८०५ वि०=१८४७ ई० दिया हुग्रा है।

'शीघ्रबोध' नामक ज्यौतिष के संस्कृत-ग्रंथ के मूल लेखक काशीनाथ भट्टाचार्य भी हो चुके हैं। कुछ संस्कृत-ग्रन्थों के ग्रनुवाद तथा टीकाएँ भी इन्होंने की हैं, जिनमें केवल 'काशीनाथ' नाम का उल्लेख हुग्रा है। इनके हस्तलेखों का समय है १८१३, १८३० ग्रौर १८५४ ई०। दे० काशी-नागरी प्रचारिणी सभा का त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (१९२६-२८ ई०), पृ० सं० ५३, कवि-सं० २२८ और ग्रं० सं० २२८ ए-डी। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग के संग्रहालय में भी इस ग्रन्थ की २६ पाण्डुलिपियाँ हैं। दे० 'पाण्डुलिपियाँ', पृ० सं० २५४-२५६, जिनका लिपिकाल–१७३६ वि०, १८०० वि०, १८२० वि०, १८४१ वि०, १८४७ वि०, १८५० वि०, १८९० वि०, १८०२ वि०, १९१४ वि०, १९२० वि०, ग्रौर १९२७ वि० है ।

मिथिला के ग्रोइनवार-वंश के ग्रन्तिम राजा कंसनारायण के ग्राश्रित कवियों में भी एक काशीनाथ का उल्लेख हुग्रा है । दे० 'हिन्दी-साहित्य ग्रौर बिहार', पृ० सं० ४२ ।

पुष्पिका—इति श्रीमत् सकललोक लोचन चकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र चन्द्रिकायां श्री रामसीतासमागमवर्णनोनाम ग्रोनतालीसम प्रकाश ।। ३९ ।।

इति श्री पोथी चन्द्रिकाकांड सम्पूर्न सीद्धिरस्तु । शुभमस्तु ।

पठनार्थ चुनीलाल सा० ग्रोजनापुर लीखा सुमीरनदासकायस्थ चइत सुदि ११

सन १२०४ साल रोज शुक्रवार ग्रंगदगीरका मठ ग्रसी ।।

विषयवस्तु—श्रीरामचरित्र-वर्णन ।

४६. रामचरितमानस (उत्तरकांड) : ग्रन्थकार—तुलसीदास । लिपिकर—भीनतसिह। रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल—१२२५ फ० । पत्र सं०— ७० । प्र० पृ० पं० लगभग—८ । प्र० पं० ग्र०—४०" × ४"। दशा-पूर्ण; प्रारंभ के पाठ खंडित ग्रौर ग्रपठ्य। भाषा—हिन्दी । लिपि—देवनागरी । विषय—भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान—पं० बामदेव मिश्र, रेवारी, पटारी, वसंतपुर (मुजफ्फरपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—नमो भगवते वासुदेवाय ।। श्लोक ।।

केकि कण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं
शोभढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराच चापं कपि निकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीसं रघुवरमनिखलं पुष्पकारूढ़ रामं ।। १ ।।
कौशलेन्द्र पदपंकजमंजुलौ कोल...........महेश वन्दितौ ।
जानकी कर सरोज लालितौ चिन्तकस्य मनभृंगसंगिनौ ।।२।।
....
कारुणिककलकंचलोचनं नौमिशंकरमनं मोचनम् ।।

दोहा ।

रहा एक दिन ग्रवधिकर ग्रतिआरतपुरलोक ।
जहां तहां सोचहि नारिनर कृसतन राम वियोग ।। १ ।।
सकुन होहि सुन्दर सकल मन प्रसन्न सबकेर ।।
प्रभु ग्रागमन जनाव जनु नगर रम्य चहु फेर ।। २ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—

पुरायं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये,
ते संसार घोरपतङ्गघोरकिरनैर्दधृन्ति नो मानवा ।।

पुष्पिका– इति श्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुष विध्वंसने अविरतिहरिभक्ति संपादिनी नाम सप्तसोपानानि संपूर्णानि । सन् १२२५ साल चैतवदी लेषा निषाद नामै वैष्णव बाबू भीनतसिंह के लिषी देल रामजी सक्तिजुत सहाए होथु श्री शंकर गौरजुत प्रसन्न रहथु रामजी ।

विषयवस्तु–रामचरित्र वर्णन ।

४६ (क). रामचरितमानस (उत्तरकांड): ग्रन्थकार–तुलसीदास । लिपिकार–गनेस दत्तदास। रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–१८५४ वि०=१२०६ फ० । पत्र-सं०–२७। प्र० पृ० पं० लगभग– २० । प्र० पं० अ०–२४ । आकार–११" × ८"। दशा-पूर्ण, मध्य में खडित । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी और नैपाली । विषय–भक्तिकाव्य। प्राप्तिस्थान– सुखदेवलालदास, टेकटारी, कमतौल (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– धर्मधाम श्री राम सर्वदेव परमुदित रवी ।

सीतापतिहि प्रणाम करो जोरि कवि विशद भव ।

जो सुमिरत सिधि होय गणनायक कविवर वदन ।

करहु अनुग्रह सोये बुधिराशि शुभ गुन सदन ।।

मूक होय वाचाल पंगुचहहि गिरिवर गहन ।

जासु कृपा सुदयाल द्रवन सकल कलिमल दहन ।।

नील सरोरुह श्याम तरुन अरुन वारिज नयन ।।

अन्त की पंक्तियाँ–मो सम दिन न दीन नहि तुम समान रघुवीर।

अस विचारि रघुवंशमनि हरहु विषम भवभीर ।

कामिहिनारि पियारि जिमि लोभी जिमि पिअदाम ।

तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ।।

पुष्पिका–इति श्री रामचरित्रेमानसे सकलकलिकलुष विधंसने अविरल हरि भगती संपादनी नाम सप्तमो सोपान समाप्त जो देषा सो लीषा ।। लिखित करन केउटी सं श्री गनेसदत्तदासस्य ग्रामावस्थीत टेकटारि सन् १२०६ साल कार्तिक मासे शुभमस्तु ।।

विषयवस्तु–रामचरित्र-वर्णन ।

४६(ख). रामचरितमानस (उत्तरकांड): ग्रन्थकार–तुलसीदास । लिपिकार–×। रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–१९०० वि० । पत्र-सं०–३३५। प्र० पृ० पं० लगभग– २४ । प्र० पं० अ०–२४ । आकार–१४" × ८½"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय–भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान–बा० भैरोप्रसाद सिंह, सुखपुर (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। अ्रथ तुलसीक्रित रामायण लिख्यते। श्लोकव्रना नाम ।

अ्रर्थस्य पारवारसानं छंदसमापि।

मङ्गलनाएक त्रिंलोकवन्दे वानी विनाएकं ।।

भवानी शंकरौ वन्दे अ्रद्युतरूपिसरूपिनौ ।

अ्रभाविणनचमस्ती सीघ विश्वासमीसरम् ।

वन्दे विधर्भवनीलं गुरु सकरूपिनं ।

ब्रह्मास्त्रीतो दिवकवोपि चन्द्रसर्वववंदिते ।।

अ्रन्त की पंक्तियाँ– मो सम दीन न दीनहित तुम समान रघुवीर ।

अ्रस विचारि करुनायतन हरहु विषम भौभीर ।।

कामिहिनारिपियारि यश लोभिहि प्यारा दाम ।

तिमि भगवाननि नारै प्रियलागहु मोहि राम ।।

पुष्पिका–इति श्री उत्तरकांडरामायणे श्री रामचरित्रे सकलकलिकलुष विधंसनो संपूर्ण समाप्तम्। शुभमस्तु श्री रामायनमः ।

विषयवस्तु– श्रीरामचरित्र-वर्णन ।

४७. लक्ष्मीश्वरचन्द्रिका : ग्रन्थकार– सन्तकवि[१] । लिपिकार–× । रचनाकाल–१९४२ वि०। लिपिकाल– × । पत्र-सं०–६१। प्र० पृ० पं० लगभग– २३ । प्र० पं० अ्र०–२२। अ्राकार–८½" × ६½"। दशा-अ्रच्छी अ्रौर पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय–अ्रलङ्कारशास्त्र । प्राप्तिस्थान– श्रीचित्रघर ठाकुर, दलसिंहसराय (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। अ्रथ लक्ष्मीश्वर चन्द्रिका लिख्यते ।। दोहा।।

सतवदन सुरगन मुकुर मदन सुत स्वामि ।

एक रदन सिधि के सदन वारण वदन नमामि ।। १ ।।

---

१. दरभंगा (बिहार)-नरेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के प्रधान कवि; १९४२ वि० के लगभग वर्त्तमान; रीवाँ-राज्य-निवासी राजदीवान पंडित शिवप्रसाद के साहित्यिक मित्र; पंडितजी की ही प्रेरणा से अ्रलंकार तथा नीतिशास्त्र पर प्रस्तुत पुस्तक लिखित अ्रौर उन्हीं को समर्पित । दे० हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, पहला भाग, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा, पृ० सं०, ५०, १७२ ।

कवित्त ।।

धारमद गलित कपोलकट कंडू करिनाहत भुसुंड सोतसुरसरिधारकी ।

फूकरत सीकर फनिंद फन पुंजनि मै सी पगन भाति ग्राभा। मुकुतनि मारकी ।।

भारे सूप श्रौनकेउ ग्राति भुंड भृंगनि की कंठछवि देनी श्रेनी
नीलम नीहार की।

सिद्धि निद्धि रिद्धि हो भुक्ति मुक्ति हाथे संत कीन्हे एक ग्रास चंद्रसेखर
कुमार की ।।२।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—श्री गुरुचरन प्रताप ते पूरन कीन्हौ ग्रंथ ।

योक जोन जानिहै कवि भूषन को पंथ ।। ९००।।

करत कवित सों संतकवि यह मनुहारि निहारि।

सांधि लेहिगे सुमति जन विगरो वरन सुधारि ।। ९०१ ।।

कुमति दूषन लाई है सुरा वर न विगारि ।

समुझि सुख पाई है बिगरो वरन सुधारि ।। ९०२ ।।

नैन वेद ग्रह चन्द्रमा इषु विजया रविवार ।

भो लक्ष्मीश्वरचंद्रिका भूषन ग्रंथ तवार ।।९०३।।

पुष्पिका—इति श्री संतकविकृत लक्ष्मीश्वरचंद्रिका समाप्ता ।। श्रीजगदम्बिकायै नमो नमः ।।

दोहा ।।

हगश्रुति निधि महि जुजु ग्रसित नैदवार दिनराज ।

श्री लक्ष्मीश्वर सिंह हित लिष्यौ संत कविराज ।। १ ।।

श्री जगदम्बिकाचरणकमलाभ्यां नमः ।।

विषयवस्तु—लक्ष्मीश्वरसिंह-चरितकाव्य ।

४८. विक्रमविलास : ग्रन्थकार— लालकवि[१] । रचनाकाल—१६४० वि० । लिपिकार घनानन्द त्रिपाठी । लिपिकाल—१७१८ वि० । पत्र-सं०—४९ । प्र० पृ० पं० लगभग— ८ । प्र० पं० ग्र०—२६ । ग्राकार—८" × ३½"। दशा-पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि— देवनागरी । विषय—काव्यशास्त्र, नायिकादि-भेदवर्णन । प्राप्तिस्थान— पं० काशीनाथ झा, रामटोला दरभंगा।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— श्री गणेशाय नमः ।।

बहुत मयंक प्रसीद्धो न च मे हो बुद्धि वल्लि ग्रालस्स ।

ग्रानन्द कमल सूरो पूरेउ सो होई हेरम्बो ।। १ ।।

---

१. इस नाम के तीन कवि हो चुके हैं । ये उनसे भिन्न प्रतीत होते हैं। विक्रमसाह कुमार के ग्राश्रित; १६४० वि० में वर्त्तमान; उपर्युक्त ग्रन्थ के रचयिता लालकवि ग्रनुसन्धेय हैं।

जयति मल्ल कल्याण सुग्रयश धर्म्म धुग्रधीर ।
भूमण्डन भूपाल मणि षेम करण वरवीर ।। २ ।।
षेम करण वरबीर सुग्र जेठो भूपति लहि ।
भुग्रन धुरंधर धीर मति सवै सराहत जाहि ।। ३।।
षेम करण सुग्रभुग्रनमह लवै सराहत योग ।
तिन्हि मह विक्रमसाहि धुग्रभयो पुरन्दर भोग ।। ४ ।।
सांचे जेठो जनम ते भूपतिसाहि भुग्रार ।
जग जेठो गुण विनय ते विक्रमसाहि कुमार ।। ५ ।।
विक्रमसाहि कुमार गुण गणे यो गुणी सुजान ।
जै पहिले निशि नषत गणि करो सुमंति परिमान ।। ६ ।।
राज कुमार सुराम जिमि कित्तिलन्तिके हेतु ।
रस रस्रना षरतरण लषि बिस्वायो यह सेतु ।। ७ ।।
सज्जन को सुख देतु यह दुज्जन के जिम्म दाहु ।
दयो देव कह सुधासुभ कियो कवंधु जु राहु ।। ८ ।।
जन्हिन शुन्यो हरिवेश जिमि विक्रम देव विलास ।
तजु दिन ते रसराज वन तनय जन्म सुष ग्रास ।। ९ ।।
कथा माधवानलकरी नाटक उषाहार ।
तृपितित मानी लाल तब नवरस कियो विचार ।। १० ।।
निरसुत गाहै भाव रस रसिकु भजै रसभाव ।
गाड़ी चलै न सलिल यह सूषै चलै न नाव ।। ११ ।।

नगस्वरूपिणी छन्द ।।

तहां प्रकास सो निवास कृष्णदत्त कों
सुकाशिनाथ तासु पुत्र विज्ञकाशिनाथ कों।
ग्रशेष पण्डिताग्रणी सुदास विप्रभत्त। कों
सनाढ्य कुंभवारिवंश ग्रंस वेदव्यास कों ।। ५ ।।

दोहा ।।

तिनके केशव दास सुत भाशा कवि मतिमन्द ।
करी ज्ञानगीता प्रगट श्री परमानन्द कन्द ।। ६ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–दोहा ।।

वृत्ति दई पुरिषान को देहु वाल कति ग्रासु ।
मोहि ग्रापनो जानि दे गंगातट मो बासु ।।

सुनि केशव मिश्र सो रीझि कहौ नृपनाथ ।
मांगु मनोरथ चित्त में कीन्है सवै सनाथ ।।
वृत्ति दई पदवी दई दूरिकिये दुख त्रास ।
जाई करौ सकल भ अब गंगातट को वास ।। १० ५९।।

पुष्पिका–इति श्रीं विज्ञान गीतायां केशव विरचिते महामहोपराज्यप्रबोधो
नाम एकविंशतिमों प्रभावः ।। शुभमस्तु श्रीरस्तु ।।
लिखित दस्त यह पुस्तकी नाम परसमनिदास ।
कर्णवंस मिथिला अहै जगतपुर तसु वास ।।
धन्तुर्मासि तिथि वसु अहै सुदि गुरुवासरवार ।
तृतीय याम के बीच में पुस्तक लिखित उतार ।।
सन रवि सद षट वाण तें साल कहत सब ठाम ।
परगना कवखंड है मोकामें पहुहर गाम ।।

विषयवस्तु– वीरसिदेव के प्रश्न, काम-रति-कलह, अहंकार-दंभ-संवाद, द्वीप-वर्णन, महामोहमिथ्याहष्टि-संवाद, काम, लोभ, पाषण्ड मनस्तत्त्व, जाति आदि के विवेचन ।

४९. विज्ञानगीता : ग्रन्थकार–केशवदास । रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकार–१२६५ फ० । पत्र-सं०–३५ । प्र० पृ० पं० लगभग– २६। प्र० पं० अ०–२६ । आकार–११" × ८½" । दशा-पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय–वेदान्त-दर्शन । प्राप्तिस्थान– बा० चिन्तामणि सिन्हा, सुखपुर (भागलपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– नमो निरंजनाय ।। छप्पय ।।
ज्योति अनादि अनंद अमित अद्भुत अरूप गुण ।
परमानन्द पावन प्रसिद्ध पूरण प्रकाश पुन ।।
नित्यनवीन निरीह निपट निर्वाण निरंजन ।
सम सरवग सरवज्ञ सर्वचित चिन्तित चिद्घन ।।
वरनी न जाई देखी सुनी नेति भाषत निगम ।
तिनको प्रणामु केशव करत अनुदिन है संयम नियम ।। १ ।।
चन्द्रकला छन्द ।।
संग सोहति है कमला विमला अमला मितु हेतु तीहू पुर को ।
भवभूष दुरंत अनंत हतै दुख मोह मनोज महापुर को ।।
कहि केशव क्यों हू वनै न निवारत जारत जोर तही उरको ।
अति प्रेम सो नित्य प्रणाम करै परमेश्वर को हर को गुरु को ।। २ ।।

दोहा ।

केशव तुङ्गारण्य में नदी खेतवे तीर ।
नगर ग्रोडछ वहु वसे पण्डित मण्डितभीर ।। ३ ।।

सवैया ।

ग्रोडछे तीर तरङ्गिनि वेतन वेताई तरै रिपुकेशव को है ।
ग्रर्जुन वाहु प्रवाहु प्रबोधित रेख ज्यो राजनि की रज मोहै ।
जोति जगै यमुनासी लगै जल लालित लोचन पाप विपोहै
सूर सुताशुभसंग मतुङ्ग तरङ्गतरङ्गिनि गङ्गसी सोहै ।। ४ ।।
पहिले कह्यो विभाव हैं बहुरि भाव ग्रनुभाव ।
तौं नवरस निरवाहिकैं पीछे सोंरह हाव ।। १२ ।।
ग्रालम्बन विनु होइनाहि नवरस को ग्रवतार ।
तातें पहिले लालकवि कियो विभाव विचार ।।१३।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–सोरह सै चालीस चारु सम्भवतः ग्रवखार ।
चैत मास शित पक्ष पुष्प नौमी भृगुवार ।।
संपूर्णकथा करि ग्रन्थ लालकवि ग्राशिष दीन्हो ।
विक्रमसाहिकुमारजिउ जिन्ह यग यशलीन्हो ।।

पुष्पिका–इति श्री लालविरचिते विक्रमविलासे कथा संपूर्ण समाप्तम् ।।
शुभसंवत् २७१८ समयज्येष्ठवदि एकादशी भौमदिने घनानन्द त्रिपाठिना-लेखि पुस्तकमिदम् ।। शुभमस्तु लेखकपाठकयो : ।।

विषयवस्तु– नायकनायिकादि तथा रसलक्षणादि के वर्णन ।

५०. विद्याविलास (नाटक) : ग्रन्थकार–श्रीधर, राजा पिरोजशाह के ग्राश्रित[१]। लिपिकार– धनपति नर्त्तक । रचनाकाल– × । लिपिकार–× । पत्र-सं०–१९ । प्र० पृ० पं० लगभग–७ । प्र० पं० ग्र०–३२ । ग्राकार–$१०\frac{१}{२}$" × $४\frac{१}{४}$" । दशा–पूर्ण। भाषा–हिन्दी। लिपि–मैथिली-नैपाली । विषय–नाटक, चौरपञ्चाशिका पर ग्राधृत नाटक, जिसमें विद्या ग्रौर सुन्दर के प्रेमोत्कर्ष का वर्णन है । प्राप्तिस्थान– बा० उमाशंकर मिश्र, खोजपूर (दरभंगा) ।

---

१. भरतपुर-निवासी, ग्रलंकार-विषय के साहित्यसारचिंतामणि नामक ग्रन्थ के रचयिता एक श्रीधर हो चुके हैं, जिनकी पण्डुलिपि काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली है। इन्होंने ग्रपने ग्रन्थ में कुछ राजाग्रों ग्रौर महाराजाग्रों का उल्लेख ग्रपने ग्राश्रयदाता के रूप में किया है। दे० खोज-विवरण, १९३२-३४, पृ०सं० ५९, ग्र० सं० २०५। प्रस्तुत कवि उनसे ग्रभिन्न प्रतीत होते हैं। ग्रंथ की पुष्पिका से प्रतीत होता है कि ये राजा पिरोजशाह के ग्राश्रित थे। राजा विरोजशाह के साथ ये मिथिला ग्राये थे। इनकी पण्डुलिपि के नेपाल में मिलने का भी उल्लेख हुग्रा है। दे० 'नेपाल में मैथिली नाट्य-साहित्य का उद्भव ग्रौर विकास'

प्रारंभ की की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः ।। टीका ।।

कनक चम्पक माला देहक वदने प्रगसित अरविन्दसुभाग बदने ।
तनुरोमराजी विद्याविनोद सहसा सुतिञा उठिन कामे विह्वल लालसा ।।
आजि सुमिरञों विद्या चिन्ता नहि आने प्रसाद गुन नितँ से अछलित तिक्षणे ।।

राजा वदति ।।

मार निञां चोराक जिवन नहिकाज ।
कोना एक बोली बोलों सुनौ महाराजा ।।
से ई शशिमुखिनव यौवने आगरी।।
पिन पयोधर मारें छुट्टलि कवरी ।।
पुनरिप यदि गौर देखों विद्यावालि ।
तपित मदन नलकरो सुसितली ।।

अन्त की पंक्तियाँ–

जतसखी विद्यारस कल पाइलो साज ।
सुचरिता मालिनी पाइलो आधा राज ।।
हाथी कांध कुमर कुमरि चलु दोलें आगा माह,
व्याकुल नृपति त कोलाहलें ।
विद्यार विमल मन अभिमत काज
विद्या लियै कुमर चलिलो निजराज ।।
राजा श्री पिरोजसाह विनोद सुजान द्विज श्रीधर कवि कह परमान ।।

पुष्पिका– इति विद्याविलासाभिधाननाटकप्रबन्धसंपूर्णलिखितमिदंधनपति नर्तकेन ।। विषयवस्तु–चौरप ञ्चाशिका-व्याख्या ।

५१. बिहारी सतसई-टीका: ग्रन्थकार–हरिकवि[१] । लिपिकार– × । रचना-काल– × । लिपिकार–× । पत्र-सं०–१६ । प्र० पृ० पं० लगभग– १३ । प्र० पं० अ०–१६। आकार–११" × ३¼" । दशा–खण्डित । भाषा–हिन्दी ।

शीर्षक पं० शशिनाथ झा का लेख–त्रैमासिक 'साहित्य' वर्ष ९, अंक ३ । पन्द्रहवीं शती में मिथिला के ओइनवार-वंश के अन्तिम राजा कंसनारायण के दरबार में श्रीधर कवि प्रमुख थे। नेपाल के राजगुरु, हेमराज के पुस्तकालय में इस पाण्डुलिपि के मिलने का उल्लेख मिलता है। दे० 'हिन्दी-साहित्य और बिहार', पृ० ५७ ।

१. सारन (बिहार) जिले के गोयल परगने के चैनपुर ग्राम-निवासी; जाति के सरयूपारीण ब्राह्मण; वासुदेव के पौत्र और रामधन के पुत्र; १८३४ वि० के लगभग वर्त्तमान; नवापुर के राजा विश्वसेन और कृष्णगढ़ के राजकुमार विरदसिंह के आश्रित कवि; इनकी दो पाण्डु-लिपियाँ काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली हैं। दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' प्रथम भाग, पृ० १५८, १९३।

लिपि– मैथिली । विषय–काव्य । प्राप्तिस्थान– पं० गोवर्धन मिश्र, वाजितपुर (दरभंगा)।
प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री राधाकृष्णों विजयते ।। ग्रय विहारी सतसई टीका ।।

तुलसीदल माल तमाल सो श्याम ग्रनङ्ग तें सुन्दर रूप सोहाही।
श्रुति कुण्डल के मणिकी झलके मुख मण्डल पै वरनी नहि
जाही ।।
सखि देखि पियूख मयूखहुतें सुखमा ग्रति ग्रानन की सरसाही ।
बिहरे हरि गोप सुतासङ्ग कान्ह निशिथिनि में रनवीथिनि माही ।। १ ।।
मूरित को भेद ग्ररु सूरति को भेद नहि मोहन सो भेद
मतवेदनिके ग्राम को ।
नेह परिपूर वृषभान नन्दिनी को नूरदेखि जातरूप को गरनर
काम वाम को ।।
ग्रानन ग्रनूप वारि जात को है भूप कीन्हो भासै न समान
उपमान सुधाधाम को ।
करुणा ग्रगाधा हरे सन्तन की वाधा ऐसी कहै विन राधा फल
ग्राधा कृष्ण नाम को ।। २ ।।
श्री को निवास सुगन्ध को बास ग्रौ रूप ग्रनुपमता पहचानी ।
राधिका की चरण छवि कंज कही नै लही निधि सो एक वानी ।
धूरी सो परी पराग मिसै करंतार दियो रीश की रुष ठानी,
पानी गयो लजि वारिज को ठहरे फिरि वारिज पै नहि पानी ।। ३ ।।

दोहा ।।

मोहिय राधा कान्ध को निशि दिन वसो विहार ।
येहि सुमिरत प्रत्यूह के विनसत जूह ग्रपार ।। ४ ।।
तीरथ सेवन करत हरिप्रेम भक्ति को मूल ।
धन्य कालिन्दी फूल लखि शोभै पीत दुकूल ।। ५ ।।

ग्रथ कवि की स्थिति ।।

राजत सुवै विहार में ही सारनि सरकार ।
सालग्रामी सुरसरित सरजू शोभ ग्रपार ।। ६ ।।
परगन्ना गोग्राल मे ग्राम चैनपुर नाम ।
गंगा से उत्तर तरफ सो हरिकवि के धाम ।। ७ ।।
सरयूपारी द्विज सरस वासुदेव श्रीमान् ।
ताको सुत श्री रामधन ताकी सुत हरि जान ।। ८ ।।

नवापार में ग्राम है बद्‌या अभिजन जान ।

हरि सु विहार सतसई टीका करत प्रकाश ।। ९ ।।

फेरि विहारी पाठ रस में आशीर्वाद रूप मंगलाचरन करत है। मेरी भव इति ।।

मेरी हमारी जो भववाधा फेरि जन्म लेने सो यो दुख ताको हरो । भवनाम जन्मा ।

अन्त की पंक्तियाँ—खिचें मान अपराधतें चरिगै वडे अचैन ।

जूरत दीठि तजिरि सखि सो हंसे रसीले नैन ।। १०४ ।।

डीठि के जूरतही मिलत हरि दुद्रन के नैन हंसे नायिका के नयन दीश छाड़ि के,

नायक के नयन षीसि सरमिन्दगी लिए कछु गोसा तजि के खो दूती पठाइवे

को उपाय नहीं भयो प्रदर्षन तो निदर्षन जतन बिना वांछित फल जो होय ।।१०४।।

पुष्पिका— x ।

विषयवसतु—बिहारी-सतसई की व्याख्या ।

५२. वेदान्तमतसंग्रह : ग्रन्थकार—भिक्षु[1] । लिपिकार—× । रचनाकाल— × । लिपिकार—×। पत्र-सं०—१५१ । प्र० पृ० पं० लगभग— १९ । प्र० पं० अ०—२५। आकार—१०" × ७"। दशा—पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—देवनागरी । विषय— वेदान्त-दर्शन। प्राप्तिस्थान-पं० शिवशंकर झा, अन्धराठाड़ी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—दोहा ।।

जिस परमात्मा मोह से होत जीव संसाार ।

जिसे बोधगत होत तिस वन्दन वारंबार ।।

हरि शिव दिनक हेरम्ब देवी पूजक जांहि ।

सदा विवाद करत हैं सोई संशय नाहि ।।

इस ग्रन्थ के ४ खण्ड है तहां प्रथम खण्ड में एक कम शत मत है।

अन्त की पंक्तियाँ—शङ्कराचार्यव्यासं नारायणात्मकम् ।

सरस्वती च ब्रह्माण प्रणमामि पुनः पुनः ।।

इति चतुर्थ परिच्छेदः समाप्तः ।।

पुष्पिका— इति भिक्षुकृत वेदान्तमत दर्शन भाषा ग्रन्थ समाप्तः ।। ग्रन्थ संख्या ३८२५ ।।

विषयवस्तु—द्वैताद्वैतमत-संकलन, द्वैतमत-निराकरण और अद्वैतमत-स्थापन ।

५३. वेदान्तसार (हिन्दी-अनुवाद) : मूल ग्रन्थकार—शंकराचार्य; अनुवादक— ×। लिपिकार—द्वारिकादास । रचनाकाल— × । लिपिकार—१८८४ वि० । पत्र-सं०—

---

१. नवोपलब्ध ग्रन्थकार । खोज-विवरणिकाओं में इनकी चर्चा का अभाव है। ये मिथिला-निवासी वेदान्त-मत के प्रचारक कश्चित् साधु और अनेक ग्रंथों के मँजे हुए अनुवादक प्रतीत होते हैं । ग्रन्थकार अनुसन्धेय हैं।

सं०–१५ । प्र० पृ० पं० लगभग–८ । प्र० पं० ग्र०– ३४ । ग्राकार–१५" × ५"। दशा– मध्य में खंडित । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय– दर्शनशास्त्र। प्राप्तिस्थान– पं० लक्ष्मीकान्त मिश्र, देवधा, मंगलमठ (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः ।। ग्रोन्तत्सत् ।। वेदान्तसारः ।। सववेद वेदान्तादि शास्त्र जिस ब्रह्म को कहते हैं उसे जानना ग्रवश्य चाहिये इस्का बखान वेदान्त के पहले सूत्र में भगवान वेदव्यास करके वेद के प्रमाण से ग्रौर वेद सम्मत विचार से देखा यो ब्रह्म का स्वरूप किसी प्रकार से नहीं जाना जाता है अर्थात् ब्रह्म का ग्रारू कैसा है ऐसा निरूपण नहीं होने सकता जिसलिए यो श्रुति कहती है।

न चक्षुषा गृह्येत नापि चान्यै र्देवैस्तपसा कर्मणा वा। मुण्डक । ग्रध्ष्टो। द्रष्टा ग्रश्रुतः श्रोता । ग्रस्थलमनणु । वृहदारण्यक। अवाङ मनसगोचरम्। ग्रशब्दमस्पर्शम् कठबल्ली।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–इन सब में जिसकी श्रद्धा नहीं उनके पास शास्त्र और युक्ति ये दोनों समझाने में ग्रसमर्थ है। इस वेदान्तशास्त्र को विशेष कर विचार-सहित जानने की इच्छा जिसकी होवे वह संस्कृत वेदान्त को ग्रौर उसकी भाषा विवरण की देखे ।।

पुष्पिका–इति श्री वेदान्तसारसमाप्तः ।। शुभं श्रीमस्तु । संवत् १८८४ जयेष्ठ मासे शुक्लपक्षे तिथौ षष्ठम्यां गुरुवासरे लिखितं प्रति द्वारिका दासः ब्राह्मणः । कल्याण ३।। श्री मन्महाराज ग्रन्नदाता निधान जीवस्य ।। कल्याणां ३ ।। श्लोक संख्या२५० ।।

विषयवस्तु–ब्रह्मज्ञान-निरूपण ।

५४. वैद्यकः ग्रन्थकार × । लिपिकार–×। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–१६। प्र० पृ० पं० लगभग– १२ । प्र० पं० ग्र०–४२। ग्राकार–११½" × ७¼" । दशा–खंडित। भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली-नेपाली । विषय– ग्रायुर्वेद । प्राप्तिस्थान– चिरंजीव झा, महेशपुर, ताजपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथ पोथी वैद्यमात्र लिख्यते ।। दिनायका इलाज। फुलजूहीक जड़ीक छाल पैसाभरि। कसोज का जडीका छाल पैसाभरि। सोहागा पैसा भरि पकायके काजी नेवो का रस पीसिके सात रोज दिनायमो लगावे चंगा होय ।। कफ का इलाज ।। त्रिकुटी त्रिफला जमाइन विटनोन काफर सात तैसाभरि के ग्रोजन कय वुकना करे ग्रधेलाभरि के सात दिन खाय चंगा हो जाय ।। ग्रपरस का इलाज ।। ग्राकपात दमसे ग्रागि में से दे तिसका रस गारके ग्रपरस में लगावे चंगा होए।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–जहर खाने का इलाज । पैसा तामा का घसि के पिलावे ववन हो चंगा हो जाय ।। परसौती को दूध होने का इलाज । सतावरी पैसाभरिं बूकि पैसाभरि चीनी के साथ दिन पिबे तो दूध होय ....।

पुष्पिका– ×।

विषयवस्तु–विविधरोग-चिकित्सा ।

५५. वैद्यग्रन्थ : ग्रन्थकार × । लिपिकार–×। रचनाकाल– १७८७। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–३९। प्र० पृ० पं० लगभग– १७ । प्र० पं० ग्र०–४२। ग्राकार–१०½" × ४½" । दशा–खंडित। भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– ग्रायुर्वेद । प्राप्तिस्थान– राजलाइब्रेरी, दरभंगा ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–रामाधार के संठा ३ काचपंच ५ पचरंगरा २५ सर्वत्र एकत्र करी नइकुल्ह भी माहे घाला जइ । माटी कपड़ा नुदीजै पवै गुजपुट पचाई जह स्वांगसीतकाढ़ीजै। पवै मदीजई ।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– ग्रद्यलक्षणं ।। हीयमुदाजई । भ्रमहुवई । ग्ररूचि। ग्रतिसासरक्तमल। लुणपलाविज्ञे। मधुसुंदी होई । रक्तज्वर जाइव । देवदारु। भोपनीय सरधूपालि। मोघ । काथरक्तसन्निपात जाइ। शीरालीना पानाखाई। जई।

पुष्पिका– × ।

विषयवस्तु–विविधरोगोपचार ।

५६. व्यङ्कटेशमङ्गल: ग्रन्थकार–रामचरणदास[१] । लिपिकार–×। रचनाकाल– ×। लिपिकाल-१९२० वि० । पत्र-सं०–४ । प्र० पृ० पं० लगभग– ९ । प्र० पं० ग्र०–३४। ग्राकार–१२½" × ५½"। दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– स्तोत्र । प्राप्तिस्थान– पं० चतुर्भुज झा, धमकौल, परसौनी (मुजफ्फरपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री मते रामाय नम: ।। राग मंगल ।।

प्रथम सुमिरि गुरुदेव सुभचरन पराग जो ।

---

१. इस नाम के दो ग्रंथकार–क. ग्रयोध्या के रामदास, सुक पंचासिका, ग्रष्टयाम सेवाविधि, रामजानकी चरणचिह्न, रामायण की टीका, दृष्टांतबोधिका ग्रौर काव्यशृंगार के रचयिता; इनकी चर्चा ग्राचार्य रामचंद्र शुक्ल ने -हिन्दी-साहित्य का इतिहास' में की हैं ग्रौर ख. 'कलाज्ञान' के ग्रन्थकार डीडबाने के रामचरन–हो चुके हैं। ये दोनों से भिन्न हैं। शाहपुर (राजस्थान) के रहनेवाले नवलराम के गुरु ग्रौर रामसनेही पथ के प्रवर्तक एक रामाचरण हो चुके हैं, जिनके, ११ ग्रन्थों की ३० प्रतियाँ काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली हैं। दे० खो० वि० १९३२-३४, पृ० सं ५४, कवि सं० १७५, ग्रं० सं०

ग्रलि इव परम सुभाग सो ग्रंघ्री सरोज सो ।।१।।

ब्रह्म रुद इंद्र ग्रादि ग्रमर गण वन्दहीं ।

ग्रसूर नाग नरलोक सो पदरंजनदही ।।२।।

सारद गणपतिशेष ऊपरकवि सुरकहे।

वयन तनय सेनाधीश सो हनुमत ग्रादि रहे ।।३।।

सेवही सरन सबदेव रमापति राम के ।

भक्त भृंग सम पाद कमल सुख धाम के ।।४।।

रमासहित सब शक्ति चरन नित सेवहीं।

क्षीराब्धी महाराज को नित सुखदेवहीं ।।५।।

हरि ग्रासन ग्रासीन देव ऋषि तहं गाय ।

पूछे प्रभु समाचार मुनि को आदर दए ।।६।।

श्री निवास कहे वचन मृदुल इस पागिए ।।

ग्रहो ऋषी सरवज्ञ प्रश्न सी विचारिए ।।७।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– श्री व्यंकट कर ध्यान सुजान सो पावहीं।

रामचरणदास रुचिसरिस हरिमंगल गावहीं ।।६०।।

नहीं पिंगल काव्य पुराण पढ़े नहीं चातुरी ।

गुरुपद पंकज रेनु हृदयकछु उडियरी ।।६१।।

सत्य सिन्धु व्यंकटेश जो मंगल गावहीं ।

रामचरणदास बड़भाग जासुउर ग्रावहीं ।।६२।।

पुष्पिका-इति श्री व्यंकटेशमङ्गल संपूर्णम् । शुभमस्तु ।। संवत् १९२० मिति माघ शु० १३ मन्द दिने ।।

विषयवस्तु–व्यंकटेश-स्तुतिपरक काव्य।

१७५, १७५ ए–जेड ग्रौर १७५ ए २–डी २; खो० वि० १९०१, ग्रं० सं० ६४, खो० वि० १९२९–३१, ग्रं० सं० २८१ ए– आई; खो० वि० १९२२–२४, ग्रं० सं०–९१ए, बी, सी । मिश्रबन्धु–विनोद में भी इनका नाम ग्राया है, दे० कवि-सं० १०७५। 'व्यङ्कटेशमंगल' के ग्रन्थकार भी ये ही प्रतीत होते हैं। इनके सम्बन्ध के विशेष विवरण के लिए दे० 'राजस्थानी भाषा ग्रौर साहित्य', पृ० सं० ३०३-३०६। इनका जन्म १७७६ वि० ग्रौर ग्रवसान. १८५५ वि० में हुग्रा । इनके ग्राठ हजार पदों के संग्रह (वाणी) प्रकाशित हो चुका है। 'संगीतमनोहर' के रचयिता शाहजहाँपुरवाले रामचरण इनसे भिन्न हैं। 'जनसेवक' उपनाम से अभिहित; पटना के निवासी; १६९७ ई० में वर्तमान; 'चन्द्रकला' नामक प्रेमकाव्य के कर्त्ता 'रमचरणदास' भी हो चुके हैं। दे० 'हिन्दी-साहित्य ग्रौर बिहार', पृ० सं० ८९।

५७. व्यङ्ग्यार्थकौमुदी : ग्रन्थकार–प्रताप कवि[१]। लिपिकार–×। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–१२४०=१८९० वि०=१९३३ ई० । पत्र-सं०–२७। प्र० पृ० पं० लगभग– १४। प्र० पं० ग्र०–४०। ग्राकार–१२" × ६" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– ग्रलङ्कारशास्त्र । प्राप्तिस्थान– बा० चेतमणि सिन्हा, सुखपुर (भागलपुर) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।।

गणपति गिरा मनाइके सुमरि सारदा पाय। ।।
कवित्त रीति कछु कहवे हैं व्यंग ग्रर्थचित लाभ ।।
ग्रथ वस्तु लक्षण ।।
जह विशेष गतिवाक्य को ग्रर्थ ग्रात्मक होय ।
ग्रलंकार सो भिन्न जो वस्तु कहावै सोय ।। १ ।।
ग्रथ ध्वनिलक्षण ।।
दै पदार्थ से जनित जौं ग्रर्थ बोधजियजानि ।
तामें व्यंग प्रधान जो सो धुनि कहत वषानि ।।२।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–व्यंगारथ ग्रतिसै कठिन को कहि पावे पार ।

मम्मट मत कछु समुझि चित कीन्हो मति ग्रनुसार ।।
संमत ससि वसु वसु द्वै गनि ग्रषाढ़ को मास ।
किय विङ्गारथ कौमुदी सुकवि प्रताप प्रकास ।।
या विङ्गारथ कौमुदी पठै सुनै चित्तलाय ।
ताको मति साहित्य को कछुक पंथ दरसाय ।।१३०।।

पुष्पिका–इति व्यंगारथकौमुदी समाप्त ।। सन १२४० साल पुस वदि १३ ।। सिद्धि।।

विषयवस्तु–सोदाहरण, ग्रलंकारादि-निरूपण।

---

१. चरखारि (बुदेलखंड)–नरेश विक्रमसाहि ग्रौर रत्न सेन के ग्राश्रित, कवि रतनेश के पुत्र; बंदीजन; १८८६ वि के लगभग वर्त्तमान। इनकी ग्रन्य दस रचनाग्रों की पाण्डुलिपियाँ काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज मे मिली हैं। दे खो० वि० १९०५, ग्रं० सं० ४९, ५०; खो० वि० १९०६–१९०८, ग्रं० सं०९१ ए, ९१ बी, डी, ई, एफ, जी, एच, ग्राइ जे, के ; खो० वि० १९०९–१९११, ग्रं० सं० २२७ और खो० वि० १९०३, ग्रं० सं० ५२, खो० वि० १९२६–२८, ग्रं० सं० ३५१ ए–ई। महाराजा सवाई जयसिंह की तीसरी पीढ़ी के महाराजा माधवसिह के कनिष्ठ पुत्र प्रताप थे, जिनका जन्म १८२१ में हुग्रा था । प्रतापकवि नाम से ये भी प्रसिद्ध हैं । इनका कविता में नाम 'व्रजनिधि' था। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से इनको ग्रंथावली प्रकाशित हो चुकी है। इनकी २३ रचनाएँ मिली हैं। दे० 'राजस्थानी भाषा ग्रौर साहित्य', पृ० सं० २५६–२५८।

५८. वृत्तविचार : ग्रन्थकार–सुखदेव मिश्र[१]। लिपिकार–×। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–१८८० वि०। पत्र-सं०–५४ । प्र० पृ० पं० लगभग– २५ । प्र० पं० ग्र०–२४ । ग्राकार–६½" × ५" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– छन्द:शास्त्र । प्राप्तिस्थान–बा० चिन्तामणि सिंह, सुखपुर (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नम: ।। छन्द गोपाल ।।

जय जय मोहन मदन मुरारि । कमल नयन केशव कंसारि ।।

करुनाकर केशी रिपु कृष्ण । यह वसुधाधर वामन विष्णु ।।१।।

दण्डक विघन विनासन हैं ग्राछे । ग्राखु ग्रासन हैं सेए पाकसासन है

सुमति करने को ।

ग्रापदा के हरन है संपदा के करन है। सदा के धरन है सरन ग्रसरन कौ ।।

कंज कुल को है नव पल्लवो न जो हैं। सारि सुखदेव सो हैं घरे ग्ररुन वरन कौं।।

बुद्धि के विधायक सकल सुखदायक । सुसेवौ कविनायक विनायक चरन कौ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–ग्रथ प्रजुलिया ।।

कटइक पाई सोरह सरेहु जह जगन जाई गन ग्रन्त देहु इमचार चरन प्रजुलिय ग्रान कविराज राज फनि कहत जान ।। यथा।।

गोपाल गदाधर गोकुलेश केशव कृपाल हरहु कलेश ।

माधव मुकुन्द मोहन मुरार कविराज कहत संकट निवार।।

पुष्पिका–इति श्री मिश्र सुखदेव कविराज विरचिते वृत्तविचारे गद्याधिकारे चतुर्थ परिच्छेद: समाप्त:।। शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ।। संवत् १८८० वि० पौष मासे शुक्लपक्षे पडिवायां शुक्रवासरे लिखितं पुस्तकं समाप्तं भशैली ग्रामे।

---

१. कम्पिला (फर्रूखावाद) ग्रौर दौलतपुर (रायबरेली) के निवासी; १८२८ वि० के लगभग वर्त्तमान; राजा भगवंतराय (ग्रसोवर, फतहपुर), राजा हिम्मतसिह (ग्रमेठी, सुलतानपुर), ग्रली डोंडिया (बादशाह ग्रौरंगजेव के बजीर) राव मर्दानसिंह वैस ग्रौर राजसिंह गौर (खेरा), राजा देवीसिंह (मुरारिमऊ) ग्रौर ग्रलयार खाँ के ग्राश्रित; कविराज की उपाधि से विभूषित तथा शंभुनाथ त्रिपाठी के गुरु । इनकी ग्रन्य सात रचनाग्रों की पाण्डुलिपियाँ काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली हैं। दे० खो० वि० १९०३, ग्रं० सं० १२३, १२४; खो० वि० १९०४, ग्रं० सं० ३३; खो० वि० १९०६–८, ग्रं० सं० २४० ए, बी, सी; खो० वि० १९०५, ग्रं० सं० ९७; खो० वि० १९०९–११, ग्रं० सं० २७४, ३०७ बी। यह पाणडुलिपि परिषद् के संग्रहालय में भी है। दे० प्रा० ह० लि० पो० का विवरण (चौथा खण्ड), पृ० सं० ३७, ग्रं० सं० ५०६। इनकी चर्चा ग्राचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास' में भी है। १९२३ वि० में लिखित एक पाणडुलिपि प्रयागस्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के संग्रहालय में है। दे० 'पाण्डुलिपियाँ', पृ० सं० २९२, ३०५, क्र० सं० १४, ३६, ३७ (वेष्टन ग्रौर ग्रं० सं० १९६०–४९६७); ७७६–६६७, ७८६–९९६।

विषयवस्तु–वंशानुकीर्त्तन, प्रस्तारादिवर्णन, उदाहरण-सहित छन्दोलक्षण श्रौर गद्याधिकार।

५९. सगुनावली : ग्रन्थकार–भडुली । लिपिकार–×। रचनाकाल– ×। लिपिकाल–१९५५ वि० । पत्र-सं०–८० । प्र० पृ० पं० लगभग– ३२ । प्र० पं० ग्र०–३६। ग्राकार–१३" × ६" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी। विषय– सगुन । प्राप्तिस्थान– चिरंजीव झा, रामभद्रपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः । ग्रथ भड्डुलीकृत सगुनावली ।। प्रथम छींक विचार ।। चौपाई ।।

प्रथमहि भाषौं छीक विचारहि, सकल शुभाशुभ मति ग्रनुसारहि।
छीक पीठ की कुशल उचारे, वाई काख सवै संवोरे ।।
सनमुख छींक लराई भासै, छींक दाहिनी द्रव्य विनासै ।।
ऊँची छींक कहे जयकारी, नीची छींक होय भयभारी ।।
ग्रपनी छींक महादुःख दाई, ऐसे छींक विचारो भाई ।
छींक सूंधनी छलकरिलेनी, सरदी घांस कही फलहीनी ।।

दोहा ।।

वांई ऊँची पीठ की छींक कही सुखकार ।
नीच सनमुख दाहनी ग्रपनी छींक ग्रसार ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–।। चौपाई ।।

निहचै पीठ परें सुख पावे, परे कौष प्रियबन्धु मिलावे।
कटि के परे वस्त्र बहुरंगा, बुदा परे मिल मित्र ग्रभंगा।
युगल जांघ पर ग्रान जो परई, धनजन सकल मनोरथ भरई।
परै जांघ तर होय निरोगी, पांव परे तन जीव वियोगी।
या विधि पल्ली सरह विचारा, कह्यौ भडुली जोतिसारा ।

पुष्पिका–इति श्री भड्डुलीकृत ग्रन्थ समाप्तः ।। ताः १५ सावन संवत् १९५५ दिन सोमवार।।

विषयवस्तु–छिक्का-विचार, शकुन-विचार, द्वादशमास गर्भविचार ग्रौर पल्ली-ग्रारोहण-पतनफल-विचार।।

६०. सतसई : ग्रन्थकार–बिहारीलाल । लिपिकार–×। रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१८७९ वि०। पत्र-सं०–२७ । प्र० पृ० पं० लगभग– १५ । प्र० पं० ग्र०–३२ । ग्राकार–९" × ७½" । दशा–पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–देवनागरी । विषय– स्तोत्रकाव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– बा० चिन्तामणि सिन्हा, सुखपुर (भागलपुर)।

प्रारंभ की पक्तियाँ– श्री गणेसाऐ नमः ।। ग्रथ लिषित पौथी सतसईआ।

ग्रथ मंगलाचरन ।।

मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोई।

जा तन की झाँई परे स्यास हरित दुति होई ।। १ ।।

सीस मुकुट कटि काछनि कर मुरली उरमाल ।

एहि वानक मो मन वसो सदा बिहाररीलाल ।। २ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–सत्रहें एकासी ग्रगहन तिथि हरि पाबे सेतु ।

लिपि पोथी पूरी करी पुरी राम की हेतु ।। ७२६ ।।

घरो कछु श्रम जानिके ना इंदी ग्रनुसारि ।

सहर जोनपुर में वसत हरजू सुकवि विचारि ।। ७२७ ।।

पुष्पिका–इति श्री विहारी सप्तसतिका दोहा समाप्ता ।।

नवसप्त वसु चन्द्र है ग्रगहनवदि गुरुवार ।

विक्रम संवत सप्तमी प्रीतियोग सुकार ।। १ ।।

गौरीदत्त विचारि लिखि सतसैया समतूल ।

राधा कृष्ण चरित्र यह जानत कोई कोई मूल ।। १।।

संवत् १८७९ शा० १७४४ सन १२३० साल शुभंशुभम् ।।

विषयवस्तु–नायकनायिकावर्णन, संयोग-वियोगाश्रृंगार-वर्णन, नखशिखवर्णन-
ऋतु-वर्णन ग्रौर नवरस–वर्णन।

६० (क). सतसई : ग्रन्थकार–बिहारीलाल । लिपिकार–×। रचनाकाल– ×। लिपिकाल - ×
पत्र-सं०–४४। प्र० पृ० पं० लगभग– ५ । प्र० पं० ग्र०–७२ । ग्राकार–१२" × ३$\frac{3}{4}$"।
दशा–पूर्ण। भाषा–हिन्दी । लिपि–मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र। प्राप्तिस्थान– पं०
योगेश्वर झा, हनुमाननगर, लोहट (दरभंगा) ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रों नमो गणेशाय ।। ग्रथ विहारी सतशई लिख्यते ।।

मेरी भव वाधा हरो राधा नागरि सोई।

जा तनकी झाँई परे श्याम हरित दुति होंई ।। १।।

सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरखी उरमाल ।

इहि वालिक मौ मन वसो सदा विहारीलाल ।। २।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– या मृगनैनी के सदा वैनी पर सतिपाय ।

ताहि देखि मन तीरथिनि विकट निजाय वलाय ।। ९।।

वृषभानुजावल्लभोजयतितराम् ।।

पुष्पिका— इति बिहारी कवि विरचितासप्तशती कुर्ष्णविहारी म्रर्पणां सदा

शिवे भवताम् ।। श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः गौरीशङ्कराभ्यां नमः

श्री काशी विश्वनाथाभ्यां नमः । श्री दुण्ढिराजो जयतितराम् ।।

विषयवस्तु— प्रसिद्ध।

६० (ख). सतसई (सटीक) : ग्रन्थकार—बिहारीलाल । लिपिकार—x। रचनाकाल—प्रसिद्ध। लिपिकाल—× । पत्र-सं०—९२ । प्र० पृ० पं० लगभग— ७ । प्र० पं० म्र०—५४। म्राकार—१२½" x ४" । दशा—खण्डित । भाषा—हिन्दी। लिपि—मैथिली। विषय—काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान— राज लाइब्रेरी, बरबरिया पसरामा (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्री गणेशाय श्री दुर्गामाधव ।।

मेरा भव बाधा हरो राधा नागरि सोय ।

जा तनकी भ्काई परे श्याम हरित द्युति होय ।।

टीका । मेरी हमारी यो भववाधा जन्मस्वरूप दुःख सो राधा नाम नागरि हरो।

जा तनकी भ्काई प्रतिविम्व श्याम श्री कृष्ण की म्रङ्ग पडै सो श्री कृष्ण हरित द्युति होत हैं सानन्द होत है ।।

म्रन्त की पंक्तियाँ—वाल वेलि सूषी सुषद यह रुपेरुषधाम ।

केरिउहउही कीजिये सुरसमीचि घनश्याम ।। २८७ ।।

टीका ।। मानिनी नायक सो सखी की उक्ति है सुखद म्रागें सदा तुम सुखद म्रायो हौं तासौ तुम से कहि में म्रावत है किंबा सुख को दूरीकरे ताको नाम भी सुखद कहिए। वह बाला सों वे लिनता है यह तुमारोरुषो रुष रुच्छ तोर सो धाम धूप है फेरि बाको उहउही कीजिए पत्रवित कीजिए सानन्द कीजिए रस नामज.............।

पुष्पिका—x ।

विषयवस्तु— प्रसिद्ध।

६० (ग). सतसई : ग्रन्थकार—बिहारीलाल । लिपिकार—× । रचनाकाल—प्रसिद्ध। लिपिकाल—x। पत्र-सं०—३३ । प्र० पृ० पं० लगभग— ८६ । प्र० पं० म्र०—४२ । म्राकार— १२" × ४¼" । दशा— पूर्ण । भाषा— हिन्दी । लिपि— देवनागरी । विषय— काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान— पं० गङ्गाधर मिश्र, परसरामा (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— म्रो नमो श्री गणेशाय नमः ।। दोहा ।।

मेरी भव वाधा हरो राधा नागरी सोइ ।

या तन की भाँओ परे श्याम हरित दुति होइ ।। १ ।।

मुकुट वर्णन ।

शीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल ।

ए बालक मो मन वसो सदा बिहारीलाल ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– हुकुम पाय जयसाहि को हरि राधिका प्रसाद ।

कवि बिहारी सतसई भई ग्रनेकक स्वाद ।। ७११ ।।

पुष्पिका–इति श्री बिहारीलाल विरचितायां सप्तसतिकायां चतुर्थः परिच्छेदः ।।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

६०(घ). सतसई : ग्रन्थकार– बिहारीलाल । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१२४६ फ० । पत्र-सं०–२२ । प्र० पृ० पं० लगभग– ३६ । प्र० पं० ग्र०–२६ । ग्राकार– १३" × ८" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– बा० चिन्तामणि सिन्हा, सुखपुर (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–पूर्ववत् ।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–पूर्ववत् ।

पुष्पिका–पूर्ववत्।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

६०.(ङ). सतसई : ग्रन्थकार–बिहारीलाल । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१२६३ फ० । पत्र-सं०–३७ । प्र० पृ० पं० लगभग– ९ । प्र० पं० ग्र०–४२ । ग्राकार– १०½" × ४¼" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० पंचानन झा, सुखपुर (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रो नमो गणेशाय ।। दोहा ।।

मेरी भग्रो वाधा हरो राधा नागरि सोई ।

या तन की झाजी परे श्याम हरित दुति होई ।। १।।

मुकुट वर्णन ।।

शीश मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल ।

ए बालक मो मन वसो सदा बिहारीलाल ।। २।।

मोर मुकुट की चन्द्रिकनि जो राजत नन्दनन्द ।

मनोशशिशेखर की ग्रकस किम्रे शेखरचंन्द ।। ३।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—सोरठा।

मोहू दीजे मोषयो ग्रनेक ग्रधमनि दियो ।

यो वाघेहीं तोषतों वांधो ग्रपने गुनन ।।

हुकुम पाई जयसाहिको हरि राधिका प्रसाद ।

करि बिहारी सतसई भरी ग्रनेक स्वाद ।।

पुष्पिका—इति श्री बिहारीलाल विरचितायां सप्तशतिकायां चतुर्थ परिच्छेदः ।:

विषयवस्तु—प्रसिद्ध।

६० (च). सतसई : ग्रन्थकार— बिहारीलाल । लिपिकार—रूपनाथ । रचनाकाल—प्रसिद्ध। लिपिकाल—× । पत्र-सं०—४८ । प्र० पृ० पं० लगभग— ७ । प्र० पं० ग्र०—४४। ग्राकार— १४" × ४$\frac{१}{४}$" । दशा— पूर्ण । भाषा— हिन्दी । लिपि— मैथिली । विषय— काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान— बा० भैरोप्रसाद सिंह, सुखपुर (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—ग्रो नमो गणेशाय ।।

ग्रपने ग्रपने मत लगे वाद मचावत सोर ।

ज्यों त्यों सबंही सेइयौ एकै नन्दकिसोर ।। १ ।।

ग्रपने ग्रङ्गको जानिकै यौवन नृपति प्रवीन ।

स्तनमन नयन नितम्व को वडो ई जाफर कीन ।। २ ।।

ग्रधर धरत हरि के परत ग्रोठ डीटि पर ज्योति ।

हरित वांस की वांसुरी इन्द्र धनुष रंग होत ।। ३ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ— हंसि उतारि हियते दई तुम जूही दिन लाल ।

राखप प्राणकपूर ज्यो नही चूह चली माल्र ।।

हा हा वदन उधारि दुग सुफल करै सब कोई ।

रोज सरोजनि के परे दृसी शशी की होई ।।

पुष्पिका—इति श्री बिहारी मिश्रकृता सप्तसती दोहा समाप्ताः ।।

सरकार तिरहुत देशाभ्यन्तरे सुखपुर ग्रामे भाषापुस्तकं हरिहारासं लिखितं रूपनाथेन गनवार पूर सं० बाबू श्री चन्द्रमणि सिंहस्य पुस्तकम् ।। श्री कृणो विजयतेतराम्।।

विषयवस्तु—प्रसिद्ध।

६० (छ). सतसई : ग्रन्थकार— बिहारीलाल । लिपिकार— गंगानाथ । रचनाकाल—प्रसिद्ध। लिपिकाल—x । पत्र-सं०—३९ । प्र० पृ० पं० लगभग— ७ । प्र० पं० ग्र०—४२। ग्राकार— ११" x ४" । दशा— पूर्ण । भाषा— हिन्दी । लिपि— मैथिली । विषय— काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान— पं० गौरी मिश्र, लालगंज, झंझारपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रो नमो गणेशाय । बिहारी।।

मेरी भम्रो वाधा हरो राधा नागरि सोई ।

या तन की भ्काई परे श्याम हरित दुति होई ।। १ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–हुकुम पाय जय साहि को हरि राधिका प्रसाद ।

करी बिहारी शतशई भरी ग्रनेकक स्वाद ।। १०।।

पुष्पिका–इति श्री बिहारीलाल विरचितायां सप्तशतिकायां चतुर्थः परिच्छेदः समाप्तश्चार्य ग्रन्थः ।।

स्वार्थ लिषितमिदं पुस्तकं गङ्गानाथेन ।।

विषयवस्तु– प्रसिद्ध।

६०(ज). सतसई : ग्रन्थकार– बिहारीलाल । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१७१२ वि० । पत्र-सं०–१९ । प्र० पृ० पं० लगभग– ११ । प्र० पं० ग्र०–४० । ग्राकार– १०" × ४" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० ग्रनिरुद्ध भ्का, चिकरौता (मुजफ्फरपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रो नमो गणेशाय ।।

मेरी भव वाधा हरो राधा नागरी सोई ।

जा तन की भ्काञी परे श्याम हरितद्विति होई ।। १।।

शीश मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल ।

या वानिक मो मन वसो सदा । बिहारीलाल ।। २ ।।

मुकुट बर्णनम्।

मोर मुकुट की चन्द्रकनिभो राजतन नन्द नन्द ।

मनो शशि शेषर की ग्रकश किए शेषर शतचन्द ।। ३ ।।

कुण्डल वर्णनम् ।।

मकराकृति गोपाल के कुण्डल सोहत कान ।

मनो धरयो हिञधर समर भौटी लसत निसान ।। ४ ।।

अन्त की पंक्तियाँ–

सतरह से एकसिग्रा ग्रगहन पारे सेतु ।

लिखि पोथी पूरी करी पूरी रामकहेतु ।

धरयो कछुक श्रम जानि कें नायिकादि ग्रनुसारि ।

सहर जौनपुर में वसत हरजू सुकवि विचारि ।।

पुष्पिका–इति बिहारीलाल विरचिता सप्तशतिका समाप्त ।। ग्रो नमो गणेशाय ।। शाके २७१२ ।।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

६०(झ). सतसई : ग्रन्थकार– बिहारीलाल । लिपिकार–जपुराम । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१७४१ शकाब्द । पत्र-सं०–३० । प्र० पृ० पं० लगभग– १२ । प्र० पं० ग्र०–४८ । ग्राकार– ११" × ४½" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी। लिपि– मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० चिन्तामाणि झा, रानीटोला (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रो नमो गणेशाय ।। दोहा ।।

मेरी भग्रो वाधा हरो राधा नागरि सोई ।

या तन की झाञी परे श्याम हरित दुति होई ।। १।।

मुकुट वर्णन

शीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल ।

ए बालक मो मन वसो सदा बिहारीलाल ।।

मोर मुकुट की चन्द्रकनि ज्यो राजत नन नन्द ।

मानो शशि शेखर की ग्रकस किये शेखर शतचन्द्र ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–दोहा।।

हुकुम पाइ जे साहि को हरि राधिका प्रसाद ।

करि विहारी सतसई भरी ग्रनेकक स्वाद ।।७११।।

पुष्पिका–इति श्री विहारीलाल विरचितायां सप्तशतिकायां चतुर्थः परिच्छेद ।।

शाके १७४१ संवत् १८७६ ।।

ग्राश्विन सुदि तिथि पञ्चमी दिनकर दीन प्रशस्त ।

राम राम जपिराम एह पुस्तक लिखी समस्त ।।

श्रमज दुःख वेकल भये भूलो ग्रक्षर यो न ।

लषि रहि हो वुध बूझि के गुग निर्मल मन तों न ।।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध ।

६०(ञ). सतसई : ग्रन्थकार– बिहारीलाल । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–३३ । प्र० पृ० पं० लगभग– ८ । प्र० प्रं० ग्र०–५६। ग्राकार– १२" × ५" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र। प्राप्तिस्थान– पं० भैरौ पाठक, कारी, बालीपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रो नमो नरसिंहाय ।।

मेरी भग्रो वाधा हरो राधा नागरि सोइ ।

या तन की झाञी परे श्याम हरित दुति होई ।। १।।

मुकुट वर्णन

शीश मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल।

ए वालक मो मन वसो सदा विहारीलाल ।।२।।

मोर मुकुट के चन्द्रकनि य्रो राजत नननन्द।

मनो शशि शेषर की य्रकस किये शेषरशतचन्द ।।

य्रन्त की पंक्तियाँ–सोरठा ।।

मोहू दीजे मोषयो य्रनेक य्रधमनि दियो ।

यो वाधेही तोष तौ वाधौ य्रपने गुनने ।।

हुकुम पाइ जयसाहिसो हरि राधिका प्रसाद ।

करी विहारी शतसई भरी य्रनेकक स्वाद ।।७१२।।

पुष्पिका–इती श्री विहारीलालविरचितायां सप्तशतिकायां चतुर्थः परिच्छेदः ।।

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।।

नभसि शनैश्चर वार के ऊगें पूरनचन्द ।

पुरे विहारी सतशई भणियू भये य्रानन्द।।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

६० (ट). सतसई (टीकासहित) : ग्रन्थकार– बिहारीलाल । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–× । पत्र-सं०–३७ । प्र० पृ० पं० लगभग–९। प्र० पृ० य्र०–४८ । य्राकार– ११" × ४" । दशा– खण्डित । भाषा– हिन्दी। लिपि– मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० पुण्याक्षी पाठक, कैरॉव, बालपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।।

य्रपने य्रपने मत लगे वाद मचावत सोर ।

ज्यों ज्यों सवहि सेइवो एकै नन्दकिशोर ।। १।।

अपने य्रङ्गकें जानिकें योवन नृपति प्रवीन ।

तन मन नयन नितम्बकों वय्रो इजाका कौन ।। २।।

य्रधर धरत हरि के परत य्रोठ डीठि पर जोति।

हरित वांस की वांसुरी इन्द्र धनुष रङ्ग होति ।।३।।

य्रपतें हरत नवरपरे दई मरुक मथ मैन ।

होडा होडी वदि चले चित चतुराई नैन ।।४।।

य्रन्त की पंक्तियाँ–नाहि लयें पावत प्रवल लयें चलित वहु पास।

मानहु विरह वसन्त के ग्रीषम लेति उसास ।।३१।।

टी०।। नायिका विरहिनी हैं सो कहे हैं वसन्त के विरह सो ग्रीषम भी उसास लो हैं। लुयें नहीं ग्रौर नहीं तो ऋतुनि को काहे को काहू को विरह हैं पर इसे जो विरह है सो सवहीं को विरह जाने हैं क्यों कि वसन्त को ऋपति कहे हैं। ग्रलं हेतु उत्प्रेक्षा। ति० ल० न० ग्रहेतु विषें हेतु कहिये इहां ....।

पुष्पिका– x।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

६०(ठ). सतसई : ग्रन्थकार– बिहारीलाल । लिपिकार–दीनदयाल । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१८६० वि०=१७२४ श०=१२९० फ० । पत्र-सं०–४९ । प्र० पृ० पं० लगभग– ८ । प्र० पं० ग्र०–३४ । ग्राकार– $८\frac{3}{2}$" x $३\frac{1}{2}$" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय– काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० माधव झा, मझियामा, वारी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः श्री दुर्गादेव्यै नमः ।।

श्री राधा माधवौ जयतः ।।

मेरी भव वाधा हरो राधा नागरि सोई ।

या तनकी झांई परे स्याम हरित दुति होई ।। १।।

मोर मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल ।

इहि वानक मो मन वसौ सदा बिहारीलाल ।। २।।

मोहन मूरति श्याम की ग्रति ग्रद्भुत गति जोई ।

वसत सुचित ग्रन्तर तऊ प्रतिविम्वित जग होई ।।३।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–मनन गुणन गुणगुणि दिननिनि हुनिधनि हुनियन ग्रानि।

पुष्पिका–इति श्री लालबिहारी कृतं बिहारी सप्तशतिका समाप्त ।। सुभमस्तु । सिद्धरस्तु।। मास ग्रगहन संवत् १८६० शाके १७२४ सन् १२१० साल ।। लिखितमिदं श्री दीनदयालेन ।।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

६०(ड). सतसई (संस्कृत-टीका) : ग्रन्थकार– बिहारीलाल । टीकाकार–नान्हा व्यास[१]। लिपिकार– वेणीदत्त । रचनाकाल–प्रसिद्ध । लिपिकाल–१२४८ फ०। पत्र-सं०–१०० । प्र० पृ० पं० लगभग– १४ । प्र० पं० ग्र०–३८ । ग्राकार–

---

१. खोज में नवोपलब्ध; १८९८ वि० के पूर्व वर्त्तमान।

१२१/३" x ६"। दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र। प्राप्तिस्थान– पं० यदुनन्दन ठाकुर, सरिसव, झंझारपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ओ नमो गणेशाय ।।

मेरी भववाधा हरो राधा नागरि सोय।
या तनकी झांई परे श्याम हरित दुति होय ।।

अथटीका । सो राधा नागरी भववाघा संसार दुःखं आधिभौतिकादि-क्लेशे हरतु दूरीकरोतु संसारदुःख हरणेन निर्विघ्नग्रन्थपरिसमाप्ति-र्भवतु इत्याशीर्वादात्मक मङ्गलाकरणां व्यज्यते सा का यच्छरीरस्य झांजी गौरवर्ण प्रभाछाया वा कृष्ण शरीरे पतितासति श्याम वर्ण कृष्णस्य छविः हरिद्वर्ण भवतीति प्रसिद्धिः विलास समयं इत्यर्थः ।।

अन्त की पंक्तियाँ– विहारीदास सत्सैया टिप्पणां संस्कृतौ कृतं ।
तृप्यन्तु कवयस्तेन मम दोषी न दीयताम् ।।

पुष्पिका– इति श्री भामहदेवाज्ञाप्तो व्यासशुकदेव सूनु नान्हाव्यासेन कवि बिहारीदास सत्सैया संस्कृतटिनं श्रुतबोधाख्यं संपूर्णम् ।। सन १२४८ साल लिखितमिदं सत्सैया श्री वेणीदत्तेन ।। ३।। श्री रामकृष्ण।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध ।।

६१. सतसई : ग्रन्थकार– बुनीलाल शर्मा[१] । लिपिकार–x । रचनाकाल–१७७२ श०। लिपिकाल–x। पत्र-सं०–१५। प्र० पृ० पं० लगभग– ८ । प्र० पं० अ०–३८। आकार– १२" x ४" । दशा– पूर्ण, किन्तु मध्य में खंडित । भाषा– बँगला । लिपि– मैथिली । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– पं० सूर्यपालित पाठक, भपटियाही (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ओ नमः श्री सत्यनाराणय ।।

प्रणामो नारायण सत्य भगवान
जाहार प्रसादे लोक पाए परित्राण।
हेन हरि शिरे वन्दो जगतेर पति
तार दुइ भार्य्या वन्दो लक्ष्मी सरस्वती ।।
आदि अनादि वन्दो दश दिक पाल
ब्रह्मा विष्णु प्रणमो शनिराहु काल ।।

---

१. १७७२ शकाब्द=१८०७ वि० में वर्त्तमान। उपर्युक्त ग्रन्थकार के सम्बन्ध में खोज-विवरणों में चर्चा नहीं हुई है। नवोपलब्ध प्रतीत होते हैं।

इष्ट मित्र प्रणामो देव प्रजापति
सिंहवाहिनी वन्दो देवी भगवती ॥

अन्त की पंक्तियाँ–स्थिर मन भक्तिभावे सत्येर सेवन
अपुत्रेर पुत्र हय निर्धनेर धन ।
कलियुगे नारायणसत्य अवतरी
समाप्तकथा साधु वोलो हरि हरी।
द्विजं विश्वेश्वर वोले सुनो नारायण
अन्त काले पाइएन तु मम चरण।

पुष्पिका–इति भविष्यपुराणे नारद खण्डे श्री सत्यनारायणव्रतकथा समाप्ता ॥
यदक्षेरत्यादि ॥
शाके १७७२ सन १२५८ साल श्री वुनीलालशर्मण लिखितैषा पुस्तकीति।
विषयवस्तु–बँगला-भाष निबंद्ध सत्यनारायणकथा ॥

६२. सत्यनारायणव्रत कथा : ग्रन्थकार– विश्वेश्वर[१]। लिपिकार–× । रचनाकाल–१७८६ श०। लिपिकाल–× । पत्र-सं०–१४ । प्र० पृ० पं० लगभग– ११ । प्र० पं० अ०–५०। आकार– ११"" × ४½" । दशा– पूर्ण । भांषा– बँगला । लिपि– मैथिली । विषय– काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० जैसूर्य पाठक, भपटियाहि (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–कथारम्भः ।
प्रणमो नारायण सत्य भगवान
जहार प्रसाद लोक पाए परित्राण ।
हेन हरि सिरे वन्दो जगतेर पती
तार दूइ भार्या वन्दो लक्ष्मी सरस्वती ॥
आदि अनादि वन्दो दश दिक पाल
ब्रह्मा विष्णु प्रणमो शान्ति राहु काल ॥

---

१. खोज में नवोपलब्ध; १७८६ शा०=१९२१ वि०=१९६४ ई० में वर्त्तमान; इनके सम्बन्ध में अन्य कोई वृत नहीं मिलता । काशी-नागरी प्रचारिणी सभा को भी इनकी तीन रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ मिल चुकी हैं। दे० खो० वि० १९३८-४० (सत्रहवाँ त्रैवार्षिक विवरण), पृ० सं० ८०, कवि०-सं० १६२, ग्रं० सं० १३२ए-सी। सभा के खोजविवरणस्थ उद्धृत पाठ और प्रस्तुत पाण्डुलिपि के उद्धृत पाठ में अन्तर है। इनकी 'आम्नायस्तोत्र' रचना की दो पाण्डुलिपियाँ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग के संग्रहालय में हैं, जिनका लिपिकाल है १८४० वि० और १९९४ वि० । दे० 'पाण्डुलिपियाँ', पृ० सं० २०५, क० सं० ५२, ४३, (वेष्टन और ग्रं० सं० ७३२–८२२, ७६८–९२६)।

इष्ट मित्र प्रणमो देव प्रजापती

सिंहवाहनि वन्दो देवी भागवती ।।

अन्त की पंक्तियाँ– कलियुगे नारायण सत्य अवतरी

समाप्त कथा साधु वोलो हरी हरी ।।

द्विज विश्वेश्वर वोले सुनो नारायण

अन्त काले पाइयेन तुमार चरण ।।

पुष्पिका–इति भविष्यपुराणे नारद खण्डे श्री सत्यनारायण व्रतकथा समाप्ता । शाके १७८६ सन १२७२ साल इषासितैकादश्यां चन्द्रवारे समाप्तलिखितम् ।।

विषयवस्तु–बँगला-भाषा में लिखित सत्यनारायणकथा ।।

६३. सत्यनारायणव्रतकथा : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–नारायणदत्त । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१२३४ फ० । पत्र-सं०–१९। प्र० पृ० पं० लगभंग– १० । प्र० पं० अ०–४२ । आकार– १०$\frac{१}{३}$" × ४" । दशा– पूर्ण । भाषा– बँगला । लिपि– मैथिली नेपाली । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– पं० बलराम पाठक, रतवारा, मुक्तापुर (मुजफ्फरपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमः ।। अथ सत्यनारायणकथाविधिलिख्यते ।।

प्रणमहो नारायण सत्य भगवान् । जाहारे कृपाय लोकपाय परित्राण ।।

प्रणमहो धर्मराज महिषवाहन । गरुड़वाहन वन्दो देव पञ्चानन ।।

कूर्मपृष्ठ प्रणमहो देवी वसुमाती। नारायणनारी वन्दो लक्ष्मी सरस्वती ।।

गणपति प्रणमहो सर्वसिद्धिदाता । सची सावित्री वन्दो गायत्री देवमाता ।।

चन्द्र सूर्य प्रणमहो वरुण पवन । एक एक प्रणमहो यत देवगण ।।

ऋषि मुनि प्रणमहो पतेक ब्राह्मण । भूमिगत होञि वन्दो गुरु व्रे चरण ।।

सत्ये रे पाञ्चाली किछु कहि विवरण । हृदय धरिञा सुनो हरि वे वचन ।।

अन्त की पंक्तियाँ–सत्य यशे वा कवे करि जाने जेइ जन ।

अन्त विनु मरये सेइ पति भाजन।।

एकचित भक्ति करि सत्यनारायण ।

अपुत्रे पुत्र न्ये निर्धनेर धन ।।

कलियुगे नारायण सत्य अवतरि ।

सम्पद आनन्दभाग वोलो हरि हरि ।।

पुष्पिका– इति श्री स्कन्द पुराणो रेवाखण्डे भाषापरिच्छेद पांचाली प्रबन्धः श्री सत्यनारायण कथा समाप्तम् ।। श्री लिपितमिदं श्री नारायणदत्तेनेति व्याप्यानं ।।

यादृशं पुस्तकं दृष्टवा तादृशं लिषितं मया।

यदि शुद्धमशुद्धंवा मम दोषो न दीयताम् ।।

सन् १२६४ साल फाल्गुन शुक्ल द्वादश्यां शनै ।।

विषयवस्तु–सत्यनाराणव्रतकथा, वंगभाषा में।

६४. सत्यनारायणव्रतकथा : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१७२२ वि० । पत्र-सं०–१० । प्र० पृ० पं० लगभग– १० । प्र० पं० ग्र०–५० । ग्राकार– १०" × ४०" । दशा– पूर्ण । भाषा– बँगला । लिपि– मैथिली । विषय– भक्तिकाव्य। प्राप्तिस्थान– पं० रतिनाथ झा, एम्० ग्रार० विद्यालय (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ततो नैवेद्यं गृहीत्वा–ग्रो त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समपितम्।

गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद पुरुषोत्तम : ।।

इदन्नैवेद्यं श्री सत्यनारायणय नम:।।

इदं पानार्थ जलं इदमाचमनीयं ततो विष्णुपूजा ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–सत्यसेवा ग्रल्पज्ञान करे जे राजन अन्नविने मरे सेई नर के गमन् शुद्ध चित्त पूजे यदि सत्यनारायण ग्रपुत्रेर पुत्रद्वय दरिद्रेर धन कलियुगे नारायण सत्य ग्रवतरि समाप्त हई तो पोथी वोलो हरी हरी ।।

पुष्पिका– शाके १७२२ श्रावण शुदि नवमी बुधे ।।

विषयवस्तु– सत्यनारायण-पूजाविधि ग्रौर बँगलासत्यनाराणकथा की व्याख्या ।।

६५. सन्तप्रिया : ग्रन्थकार– भगवतनारायण[१] । लिपिकार–× । रचनाकाल–१६०६ वि० । लिपिकाल–× । पत्र-सं०–६२ । प्र० पृ० पं० लगभग– १२ । प्र० पं० ग्र०–१८ । ग्राकार– १३½" × ९½" । दशा– खण्डित । भाषा– हिन्दी। लिपि– देवनागरी । विषय– काव्यशास्त्र, नायिकादि-वर्णन । प्राप्तिस्थान– बा० ग्रयोध्यादास, कमतौल (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–

........मनहरगा ।।

रावण भुज मारे छिन एक मां उषारे सीता दुखहारे गजराजही उधारेजू ।

केशी को मारे तुग्र पूतना संघारे पुनि वकही को विहारे फिरि कंस की पछारेजू।

---

१. १६०६ वि० में वर्त्तमान, सन्तप्रिया के रचयिता ग्रौर नवोपलब्ध प्रतीत होते हैं। इनकी चर्चा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के खोज-विवरणों में नहीं हुई है।

शिला को तारे हेम नयन उर फारे प्रहलाद हरि उवारे पुनि जस को विस्तारेजू।
मंदमति गवारे कवि भगवत बेचारे को कृपा हग को करते काहेनै निहारेजू ।। ३।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

यौं विरची रस मानससी निज मानस की ग्रनुराग उधारी ।
ग्राषर घाट सोपान सुछन्दन ग्रर्थ मराल न पांति विथारी ।।
राम कथा भगवन्त मनोहर शीतल वारि सुधा रसकारी ।
भूलि परी हम तेजु कछू कवि राज सवै ग्रव लेहु सुधारी ।।

दोहा।।

भगवतनाराण करो सन्तप्रिया वखान ।
पढ़े सुने हरिपुर लहे सत्य सपथ परमान ।।
कवित एक सौ साठि है भगवत कवि एहि माहि ।
शंभु नयन शत दोहरा छप्पन कही सराहि ।।

पुष्पिका–इति श्री सन्त प्रिया काव्य वृतिगनादि मेद वर्णन नाम नवमो दरशनः ।। शुभमस्तु । श्रीरस्तु ।।

विषयवस्तु–संयोगवियोगश्रृंगारनायकवर्णन, भेदसहित नायिकावर्णन, विभावानुभावादिनिरूपण ग्रौर गणदिविवेचन ।।

६६. सहजरामचन्द्रिका (कबिप्रिया-टीका) : ग्रन्थकार–सहजराम नाजिर[१]। लिपिकार–×। रचनाकाल–× । लिपिकाल–×। पत्र-सं०–१०३। प्र० पृ० पं० लगभग– १७ । प्र० पं० ग्र०–५०। ग्राकार– १२½" × ५" । दशा– पूर्ण। भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय– काव्य । प्राप्तिस्थान– पं० मनमोहन मिश्र, बरौनी (मुँगेर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– श्री गणेशाय नमोनमः ।। ग्रथ कविप्रियाटीका सहज रामचन्द्रिका लिख्यते ।। कविता ।।

नाम के लिये तें होत कारज सकल सिद्धि रिद्धिनिकी वृद्धि वनी रहै बहुधाम मैं।
वन्दन किये तें डर उपजें ग्रनन्द महा करै भव कंद निश दिन ग्राठो जाम मैं ।।
ध्यान के धरे ते हटि जात हैं विघन वृंद टरैं दुष दंद मनलगैं शुभ काम मैं। शंकर
सुतन सुख संपति करना सदा ग्रैसे गनपतिजू कौं करना प्रनाम मैं ।। १ ।।

दोहा सोरठा ।।

गरुड़पाल गिरिपाल गौरि गिरा गए ग्रह पनुरु ।
ए जिहिंरूप रसाल वंदोप गतिहि जुगल के ।। २ ।।

---

१. केशवदास-कृत कविप्रिया के टीकाकार; किसी रियासत के नाजिर; नवोपलब्ध कवि।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– केसव सोरह भावशुभ भुवरनमय सुकुमार।

कविप्रिया जे जानियहु सो रहहु सिंगार ।। सुगमानि ।।

सहजरायकृत चन्द्रिका शशिचन्द्रिका समान ।

ताकतहीं संशय तिमिर प्रतिदिन करत प्रयान ।।

पुष्पिका–इति श्री नाजर सहजराम विरजितायां कविप्रियाटीकायां सहजरामचन्द्रिकायां चित्रालङ्कार विवरणं नाम षोडशः प्रकाश ।। १६।।

शुभं भवतु श्रीकृष्ण प्रसादात् ।।

विषयवस्तु– कविप्रियाटीका में राजवंश-वर्णन। कविवंश-वर्णन। कवित्तदूषण-वर्णन। कविव्यवस्था वर्णन । वर्णलङ्कार-वर्णन। वणर्यालङ्कार-वर्णन । भूमिभूषण-वर्णन । राज्यश्रीभूषण-वर्णन । विशिष्टालंकार-वर्णन । ग्राक्षेपालंकार-वर्णन। विभिन्न ग्रलंकार-वर्णन ।

६७. सामुद्रिक : ग्रन्थकार–लाल कवि[१] । लिपिकार–दयानिधि । रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–३ । प्र० पृ० पं० लगभग– १४ । प्र० पं० ग्र०–७२। ग्राकार– १२" × ३" । दशा– पूर्ण, परन्तु मध्य में जीर्ण-शीर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– शकुनशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० प्रभाकर ठाकुर, मेहसी, बरही (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रो नमः शिवाय ।। दोहा ।।

लोचन उनतीस ग्राठ भुज षट्पद श्रुति चौबीस ।

वारह मुखतें उत्तरा साहेब शेष ग्रशीश ।। १ ।।

दस्तगीर होए पीर सेव खएर करें रविचन्द ।

रोज रोज रोशन रहें दौलति वरत विलन्द ।। २।।

लखि सामुद्रक लाल कवि बूझि सकल को भाव ।

शेष महमदी हुकुमतें भाषा करत किताब ।।३।।

जहाँ ग्रायु वल देखि ग्रए नारी पुरूष को सार ।

तहाँ लक्षण कीजिये दक्षिण वाम विचार ।। ४ ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–मीन हथ्य सुभगा करहि कर खज्जनि धनवानि।

तिरिया लक्षण जमोदित समुद्द वखानि ।।

पीठि भाडरी पति हने नाभि भाडरी नारि ।

भगति करें पति को सदा मरें जरे कुल तारि ।।

पुष्पिका–इति स्त्री लक्षणनि दयानिधिना लिखत् ।।

विषयवस्तु–स्त्रीपुरुष-लक्षणादि ।

---

१. नवोपलब्ध ग्रन्थकार । इनकी चर्चा किसी खोज-विवरणिका में नहीं हुई है।

६८. सुकसागर : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–× । पत्र-सं०–१५७। प्र० पृ० पं० लगभग– २५ । प्र० पं० ग्र०–२१ । ग्राकार– १३" × ८" । दशा– खण्डित, जीर्ण-शीर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी। विषय– शकुनशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० दामोदर झा (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रो नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वर्णन करना हाल ग्रवतार धारन करने पर ब्रह्म परमेश्वर वेदव्यासजी ने चारश्लोक नारद जी से सुनकर व नाना पोथी श्रीमद्‌भागवत का ग्रौर शाप देनाशृंङ्गी ऋषि ने राजा परीक्षित को कि कारण प्रगट होने इस ग्रमृत-रूपी कथा का जगत में यही है।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– श्री कृष्ण जी के वंश में केवल वज्र नाम ग्रनिरुद्ध का वेटा जीता बचा था सो मथुरा वो इन्द्रप्रस्थ का राजा हुग्रा । उसके कुल में व्रतवाहु वो सत्यसेन ग्रादिक सब राज बड़े प्रतापी वो हरिभक्त वो धर्मात्मा हुए थे इतनी कथा सुन कर शुकदेव जी ने कहा हे परीक्षित जो मनुष्य दशम स्कन्ध की कथा सच्चे मन वो प्रीति से कहता वो सुनता है उसको बड़ा भाग्यवान समझना चाहिए। वह मनुष्य संसार में मनोकामना पाकर ग्रन्त समय मुक्ति होता है॥

पुष्पिका–× ।

विषयवस्तु–श्रीमद्‌भगवद्‌गुण-वर्णन ॥

६९. सुदामाचरित : ग्रन्थकार–हलधरदास[१] । लिपिकार–×। रचनाकाल–१२५५ वि०। लिपिकार–×। पत्र-सं०–६६। प्र० पृ० पं० लगभग– २० ॥ प्र० पं० ग्र०–१८। ग्राकार– १०" × ६$\frac{1}{4}$"। दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी, लिपि–मैथिली । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– पं० बेचन झा, पिलखबरा मधुबनी (दरभंगा)।

---

१. मुजफ्फरपुर (बिहार-राज्य) जिला के निवासी; १९वीं शती के प्रारंभ में वर्त्तमान। इनके सम्बन्ध की चर्चा पूर्व के खोज-विवरणों में भी हो चुकी है। दे० प्रा० ह० लि० पो० का वि०, खं० २, ग्रं० सं० २५; खं० ३०, ग्रं० १४६; खं० ४, ग्रं० सं० ३३१, ३३२, ३३३ । काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी खोज में ग्रंथकार की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। दे० ना० प्र० स० का खो० वि० १९०६-८ ग्रं० सं० ५९; खो० वि० १९२६-२८, ग्रं० सं० १६३। उनका रचनाकाल विवादास्पद है। 'हिन्दी-साहित्य ग्रौर बिहार' में इन्हें ग्रट्ठारहवीं शती का माना गया है। दुःखहरन नामक एक ग्रपूर्ण रचना भी प्रयागस्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को प्राप्त हुई है। दे० 'पाण्डुलिपियाँ, ग्रं० सं० ३१०, क० सं० ५० (वेष्टन ग्रौर ग्रं० सं० १३८९–२२६७)। ग्रापके द्वारा रचित संस्कृत 'शिवस्तोत्र', की पाण्डुलिपि भी मिली है। दे० 'हिन्दी-साहित्य ग्रौर बिहार', पृ० सं० ९५-९६।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्री गणेशाय नमः ।।

पूरन ब्रह्म समान किंचितो ग्रधिक ढरन हे।

सत्यलोक वैकुण्ठ धाम ते गरुप चरन हे ।।

रामचन्द्र जशचन्द्र खेत ताते जश उज्वल ।

द्वादश कला कलेन्द्र तेज ते तरुण तेज बल ।।

दया दिगम्बर ते ग्रधिक ब्रह्मज्ञान ते धवल हे ।

देव देव गुरु देव पद हल मधुकर को कवल हे ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ— महातेज रवि कृष्ण यश तदपि न काहू ते मरै।

तदपि कनीहु कहे ज्ञान भवन दीपक वरै।।

न्यास विचारि कै हलधर कछुक सुजश वरनन कियो ।

मानो महासमुद्र ते सुइ ग्रग्र जल भरि लियो ।।

ब्रह्म सहस रस रस विशद कुसुमाकर सुदि पञ्चदश ।

संपूरन पोथी नवीन दीन उद्धरन प्रेम रस ।।

पुष्पिका—इति श्री हलधर दास कवि विरचिते सुदामा चरित्र दीन उद्धरण प्रेम रस समाप्तः ।।

शुभमस्तु ।।

विषयवस्तु—श्रीकृष्णविषयक प्रेमवर्णन ।।

७०. सुदामाचरित : ग्रन्थकार—नरोत्तमदास[१] । लिपिकार—× । रचनाकाल—×। लिपिकाल—×। पत्र-सं०—१०। प्र० पृ० पं० लगभग— १८ । प्र० पं० ग्र०—१५। ग्राकार— ६½" × ६"। दशा— पूर्ण । भाषा— हिन्दी । लिपि— देवनागरी । विषय— भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान— चिन्तामणि सिन्हा, सुखपुर, परसरमा (भागलपुर)।

---

१. बाड़ीग्राम (सीतापुर)—निवासी; १६१० वि० में वर्त्तमान। इस ग्रन्थ की तीन पाण्डुलिपियाँ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग के संग्रहालय में सुरक्षित हैं, जिनमें दो ग्रपूर्ण हैं। एक का लिपिकाल १८९७ वि० है। दे० 'पाण्डुलिपियाँ', पृ० सं० ४३६, क्र० सं० १६८, १६९, १७० (वेष्टन एवं ग्रं० सं० १३२६-२०२९, १८६६, १३८८-२२६२)। इनकी एक 'नाम-संकीर्त्तन' नामक संस्कृत-रचना भी प्राप्त हुई है। दे० 'पाण्डुलिपियाँ', पृ० सं० ३१०, क्र० सं० ६१, (वेष्टन ग्रौर ग्रं० सं० १४६३८-२४६७)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—गनपति कृपानिधान, विद्याबुद्धि विवेकजुत।

देहु मोहि वरदान, भक्तिसहित हरगुन कहै ।।

हरचरित्र बहुभाँए सेस दिनेस न कहि सकै।

सुनो साधु चितलाए, विप्र सुदामा की कथा ।।

विप्र सुदामा वसत है, सदा ग्रापने ग्राम ।

भिष माङ्गी भोजन करै, हीए जये हरि नाम ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—मानव सत्य प्रमान भूठ जगु कहीव कृष्ण को।

ग्रन भौ फूल सौहै, कही जो चरित्र कृष्ण को।

पुष्पिका—इति श्री नरोत्तमी सुदामा नरोत्तमदास विरचिते सुदामा चरित्र संपूर्णम् ।। शुभमस्तु।।

विषयवस्तु—श्रीकृष्ण-सुदामा-मैत्रीवर्णन ।

७१. सवैया: ग्रन्थकार—सुन्दरदास[१]। लिपिकार—× । रचनाकाल— प्रसिद्ध। लिपिकाल—×। पत्र सं०—५०। प्र० पृ० पं० लगभग— ७ । प्र० पं० ग्र०—३४ । दशा— पूर्ण । भाषा— हिन्दी । लिपि— देवनागरी । विषय— भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान— राज लाइब्रेरी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— श्री गणेशाय नमः ।। नारि पुरुष क्लेश को ग्रंग ।

नारी पुरुष सनेह ग्रति देषे जैवे सोई ।

सुन्दर नारी विछुरै ग्रापु मृतक तव होई ।। १।।

नारी वोले ग्राकरि तव दुख पावै नाह ।

सुन्दर वोले मधुर मुख तब सुख सीर प्रवाह ।। २।।

नारी वोले प्यार सो तब कछु पीवें षाई ।

जब नारी क्रोधाई करै सुन्दर पिय मुरझाय ।।३।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ— जो कोउ ग्राई वश्रे कहैं घरै बड़ाइ सीस ।

तौहू ग्राप क्षमा करै सुंदर विश्वाविस ।।१८।।

सुंदलघु गाई रहै दूरि करै जब गर्व ।

गुरु ताहि को देत है वित्त आपनो सर्व ।।१९।।

---

१. दादूजी के शिष्य; शाह परमानंद के पुत्र; द्यौसा (जयपुर-राज्य)- निवासी; जाति के खंडेलवाल वैश्य; १६१३ वि० में वर्त्तमान । इनकी तीस रचनाग्रों की पाण्डुलिपियाँ ग्रबतक प्राप्त हुई है। दे० काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा का खो० वि० १९००, ग्रं० सं० २७ ए; खो० वि० १९०२, प्रं० सं० २५, एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, ग्राठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, १६५ ग्रौर २९०; खो० वि० १९०३, ग्रं० सं० ३४; खो० वि० १९०६-१९०८, ग्रं० सं० २४२ ए.बी, सी; खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० ३११ ए, बी, सी, डी।

जो गुरु के पीछे रहै तौं लघु दीर्घ होई।

ग्रागे लघु को रघु रहै सुन्दर पुस्तक जोय ॥ २० ॥

२८। साखी ॥ ४२॥

पुष्पिका–ग्रानुभव को ग्रंग संपूर्णम् ॥

विषयवस्तु– स्तुतिपरक रीति काव्य ।

७१(क). सवैया : ग्रन्थकार–सुन्दरदास । लिपिकार–×। रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–१२०। प्र० पृ० पं० लगभग– ८ । प्र० पं० ग्र०–३४। ग्राकार– ११" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा– खण्डित । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी। । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– राज लाइब्रेरी, दरभंगा ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रथ श्री सुन्दरदास जी का सवैया लिख्यते ॥

प्रथम गुरुदेव को ग्रंग ॥ प्रंदव छन्द ॥

मौजकरी गुरुदेव दया करि सवद सुनाई कह्यौ हरि नेरौ ।

ज्यौं रवि के प्रगट्यें निसजात सुदूरि कियौ भ्रमभानि ग्रन्धेरौ।।

काईक वाचक मानस रुकटिहै गुरुदेवहि वंदन मेरौ ।

सुन्दरदास कहै करजोरि जु दारुदयाल को हूँ नित चेरौ ॥ १ ॥

ग्रन्त की पंक्तियाँ–वेद थके कहि तंत्र थके कहि ग्रन्थ थके निसवासर गातें।

सेस थके सिव इंद्र थके पुनि षोज कियौ बहु-भांजि विधातें ॥

पीर थके ग्ररु मीर थके पुनि घीर थके बहुं वोलि गिरातैं ।

सुन्दर मौन गही सिध साधक कौन कहै उसकी मुष वातैं ॥१४॥

जोगी थके कहि जैंन थके ऋषि तापस थाकि रहे फल षातैं ॥

संन्यासी थके बनवासी थके जु उदासी थके बहु फेरि फिरातैं।

सेषम साइ कह्यौ रउलाक थाकि रहे मन मैं मुसकातैं।

सुंदर मौन गही सिध साधक कौन कहै......।।

पुष्पिका–× ।

विषयवस्तु–सवैयों में भक्तिपरक रचना ।

७२. सुन्दरशृंगार : ग्रन्थकार–सुन्दरकवि[१] । लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–३१ । प्र० पृ० पं० लगभग– १२ । प्र० पं० ग्र०–२२। ग्राकार– २७" × ७" । दशा– खण्डित । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी। विषय– काव्यशास्त्र, नायिकादिभेद निरुपण । प्राप्तिस्थान– बा० चिन्तामणि सिन्हा, सुखपुर परसरमा (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेसाए नमः ।। ग्रथ सुन्दरशृङ्गार लिख्यते ।।

देवी पुजि सरस्वती पुजौ हरि को पाई।
नमस्कार कर जोरि के कहै महा कवि राई।।
नगर ग्रागरो वसतु है यमुना तट सुभ थान ।
तहाँ पाद साही करै वै थो शाहजहांन ।।
साह वड़ो कवि मुख तनक क्यों गुन बरनने जाई।
ज्यौं हरि तारे गगन के मुठी मैं न समाई ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–नायिका को बिरहनिवेदन यथा :

कहू वनमाल कहूं गुजनि की माल कहूं संगसखा ग्वाल ऐसे हाल भूलि गई है।
कहूं संगसखा ग्वाल ऐसे हाल भूलि गई है।
कहू मीरचन्द्रिका लकुट पीतपट कहू मुरली मुकुट............
पुष्पिका–× ।

विषयवस्तु–उदाहरण सहित नायिकाभेद-निरुपण।

७२(क). सुन्दरशृंगार : ग्रन्थकार–सुन्दर कविराज । लिपिकार–दयाराम मिश्र । रचनाकाल–१७७६ वि० । लिपिकाल–× । पत्र-सं०–८७ । प्र० पृ० पं० लगभग– २७ । प्र० पं० ग्र०–८ । ग्राकार– ९" × ५" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय– काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान– पं० मनमोहन मिश्र, बरौनी (मुँगेर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः ।।

देवी पूजि सरस्वती पूजौ हरि के पाई
नमस्कार कर जोरि कै कहै साहकविराय ।।

---

१. ग्वालियर–निवासी; १६८८ वि० के लगभग वर्त्तमान; जाति के ब्राह्मण; बादशाह शाहजहाँ ग्रौर ग्रौरंगजेब के ग्राश्रित; शाहजहाँ के दरबार में कविराय ग्रौर महाकविराय की उपाधि से सम्मानित इनकी 'बारहमामी' नामक रचना की पाण्डुलिपि भी खोज में मिली है। दे० का० ना० प्र० स० का खो० वि० १९०६-द, ग्रं० सं० २४१ बी। इस ग्रंथ की १७९५ वि० में लिखित एक पाण्डुलिपि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग के संग्रहालय में भी सुरक्षित है। दे० 'पाण्डुलिपियाँ', क्र० सं० १७१ (वेष्टन एवं ग्रं० सं० १३०९-१९८३)।

नगरु आगरो वसतु है जमुनातट सुभथानु ।।२।।

साहिब औ कवि मुषु तनिकु क्यौ गुन वर ते जाहि ।।

ज्यौं तारे सब गगन के मुठी मैं न समाहि।।३।।

जिन पुरिषनि के वंस मै उपजो साहि जहानु।

तिन साहिन के नाम को अब कवि करत वषानु।।४।।

प्रथम मीर तैंमूर लियो साहिब किरान पटु।

ताको मीरा साहिब हुरि सुलतान महंमदु ।।५।।

अबू सैद पुनि ओमर सेष वावर जूहिमाउ ।

साहि अकव्वर साहि जहांगीरहि जुगनाउ ।

तिहि अस वंस कविराज भनि साहिजहा वहिमवषत ।।

धरि छत्र वयव्यो अटलु मुद पातिसाहि दिल्ली तखत ।।६।।

अन्त की पंक्तियाँ—सुपानी याते करी तर वानी मै लाइ ।

जा मैं मगु रस रीति को सब पै समुझौ जाई ।

यह सुन्दरश्रृंगार की पोथी रची विचारी।

चूको होई कहूं कछु लीजौ सुकवि सुधारि ।।

पुष्पिका—इति श्री मन्महाकविराज विरचितः सुन्दरश्रृंगारः समाप्तः । सुभमस्तु । संवत् १७७६ श्रावने मासे कृष्णपक्षे द्वितीयायां गुरुवसरे कः पुस्तकः समाप्तम्। लिखितं मिश्रा दयारामेन ।। इह पुस्तक सुंदरसिंगार की रामचंद साहु पठनार्थ।।

विषयवस्तु—समेद और उदाहरण-सहित स्त्री-पुरुषलक्षण, विभावानुभावादि-वर्णन ।

७३. सुन्दरश्रृंगार : ग्रन्थकार—साहकवि[१] । लिपिकार—×। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×। पत्र-सं०—२५ । प्र० पृ० पं० लगभग— १४ । प्र० पं० अ०—४०। आकार— १०" × ४" । दशा— पूर्ण । भाषा— हिन्दी । लिपि— मैथिली । विषय— काव्यशास्त्र । प्राप्तिस्थान— पं० गौरी मिश्र, लालगंज, झंझारपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ— ओं नमो गणेशाय ।।

देवी पूजि सरस्वती पूजों हरि के पाय ।

नमस्कार कर जोरि कें कहे साह कवि राय ।।

---

१. १७०७ वि० के लगभग वर्त्तमान कवि सुन्दरदास के पिता साह कवि से भिन्न; नवोपलब्ध ग्रन्थकार ।

नगर श्रागरी वसतु है यमुना तट सुरथान ।

तहां पाति साही करे बैठ्यौ साह जहान ।।

श्रन्त की पंक्तियाँ—सुरवाणी यातें कही नरवाणी में लाई ।

जैसे सागर सरीतिकौ सबकौ समभ्कौ जाई ।।

यह सुन्दरशृङ्गार की पोथी रचि विचारि।

चुक्यो होई कहुं कछु लीज्यौ सुकवि सुधारि ।।०।।

पुष्पिका—इति श्रीमन्महाकविराजविरचितं सुन्दरशृङ्गारकं संपूर्णमिति ।। शुभमस्तु ।।

श्रीस्तु ।। श्रीस्पर्शमरोरिति ।।०।। श्रोंन्तत्सत् । श्रों नमस्तस्यै ।। श्री भवानी विश्वेश्वराभ्यान्नम:।।

विषयवस्तु—पूर्ववत्।

७४. सूर्यपुराण : ग्रन्थकार—× । लिपिकार—×। रचनाकाल—×। लिपिकाल—१२७२ फ० । पत्र-सं०—१०। ग्र० पृ० पं० लगभग— ९ । प्र० पं० श्र०—२२ । श्राकार— ६" × ३½"। दशा— पूर्ण । भाषा— हिन्दी । लिपि— मैथिली । विषय— भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान— पं० भुवनेश्वर भ्का, मेहसी, बरही (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—नम: श्री गणेशाय ।। श्री सूर्यपुराणविधार्लिख्यते ।।

श्री सूर्यदेवता सुमिरहु तोही, सुमरत ज्ञान बुद्धि देहु मोही ।

ज्योतिसरुप श्रादित बलमाना, तेज प्रताप तुम श्रग्नि समाना ।

तुम्ह श्रादित परमेश्वर स्वामी, श्रलख निरुष्न श्रन्तरयामी ।

वरनि न जाए जोति के लीला, धर्म धुरन्धर परम सुशीला ।

ज्योतिकला चहु श्रोर विराजे, जगमग कानन कुण्डल छाजे ।

नीलवर्न छवि तुरए सवारी, ज्ञान ध्यान धर्म व्रतधारी ।

कथा यासु मे कहो वखाना, सो इह पुरुष हञें श्रग्नि समाना ।

महिमा आदित श्रगम श्रपारा, तिनि लोक छवि जोति उजियारा ।

श्रन्त की पंक्तियाँ—दोहा ।।

गुरगण्ड हो जाहि तन, सुनिलहि जाय विलाए।

हरिषत ज्ञान मन दीप के, कथा सुनहु दुख जाए ।।

कहो कथा शुभ कर्म के मन वचत्र विचारि,

यो सुने कथा मन लाइ ।

काया कलेश छुटे रक्त विकार छुटे पुलकित प्रेम पुनि तते शिवशंकर गुन गाए।।

पुष्पिका–शुभमस्तु । श्रीसूर्यपुराणसमाप्त ।। मार्गशुक्ल नवम्यां वुधे सन १२७२ साल।

विषयवस्तु–सूर्यस्तुति ।

७५. हठयोगमंजरी : ग्रन्थकार–× । लिपिकार–× । रचनाकाल–×। लिपिकाल–× । पत्र-सं०–४३ । प्र० पृ० पं० लगभग– १५ । प्र० पं० ग्र०–२० । ग्राकार– ८$\frac{3}{4}$" × ६" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– योगशास्त्र । प्राप्तिस्थान– राज लाइब्रेरी, वरबरिया, पसरामा (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–ग्रो नमः शिवाय ।। ग्रथ हठयोग मञ्जरी ।। श्री गुरु गोरषनाथ जी के शिष्यकृतिः ।। चौपाई।।

प्रथम धरु श्री गुरु के ध्याना। ग्रध्यात्म उप उपजय ज्ञाना ।।
हृदय कमल में होय प्रकाशा । गुरु समर्थ पूरे सब ग्रासा ।। १।।
योग शास्त्र ग्रगम ग्रपारा । शर्व सिन्ध मथि काधो सारा ।।
हठ प्रदीप का ताको नाम । योगी जन के पूरन काम ।। २।।
संस्कृत सोये ग्रन्थ कहावे । ता को ग्रर्थ कहो कैसे पावें।।
पण्डित ग्रर्थ कहे समझाय । सतगुरु बिना न जानो जाय ।। ३ ।।
ताते हौ शरणागत श्री गुरुनाथ । करो कृपामम पकड़ो हाथ ।।
विष सागर तें मोहि निकारों। सकल जीवन के हेतु विचारो ।।४।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–यह जिह्वा इन्द्री दो निरधार । सब इन्द्री में यह सरदार ।।

इन को जीते जोगी जेही । जाके वस रहा वैदेही ।।
काया जी ते ध्यान चित्त लावे ।। ताके सिद्ध विघ्न क्यों ग्रावे ।।
भांत भांत के लोभ देखाय । योगी का मन देय विचलाय ।।

पुष्पिका–इति श्री गोरष योग मञ्जरी संपूर्णम्।।

विषयवस्तु–योग के स्वरुप तथा क्रियाग्रों का विवेचन ।

७६. हनुमानबाहुकः ग्रन्थकार–तुलसीदास । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–× । पत्र-सं०–९। प्र० पृ० पं० लगभग– ८ । प्र० पं० ग्र०–४२ । ग्राकार– १०$\frac{1}{4}$" × ३$\frac{1}{2}$" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली। विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– पं० देवेन्द्रनारायण चौधरी; बालीपुर देवरति, बालीपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः ।। श्री हनुमते महावीराय नमः ।। छापा ।।

सिन्धु तरण सिय शोच हरण रविवाल वरण तनु।
भुज विशाल मूरति कराल कालहू को कालजनु ।।

गहन दहन निर्दहन लङ्क निःशंक वङ्क भव ।

जातुधान वलवान मान मद हवन पवनसुर ।।

कह तुलसिदास सेवत सुलभ सेवक हित सन्तत निकट।

गुन गन तन मत स्वामिरत जपत शमन सकल संकट विकट ।। १।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– कहा हनुमान सो सुजान राम राई सोक (१) पा निधान संकट सो सावधान सुनिये ।

हरष विषाद राग रोष मुई विरचे विरञ्चि सब देखियत दूनिये ।।

माया जीव काल के करम के सुभाय के करैया रामवेद कहें साची मन गुणिये।

तुम ते कहा न होई हाहा सो बुझाय मोहि होहु रहौ मौनही वयो सो जानि लूनिये ।।

पुष्पिका–इति श्री गोसाई तुलसीदासकृतं श्री हनुमान बाहुकं सम्पूर्णम् ।।

यदक्षरेत्यादि ।।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

७६(क). हनुमानबाहुक : ग्रन्थकार–तुलसीदास । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–× । पत्र-सं०–८ (१३० श्लोक) । प्र० पृ० पं० लगभग– १० । प्र० पं० ग्र०–३२ । ग्राकार– ११" × ४$\frac{3}{4}$" । दशा– खण्डित । भाषा– हिन्दी। लिपि–देवनागरी । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– राज लाइब्रेरी, दरभंगा।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– सी प्रताप जाको प्रवल ग्रनल भो

भीषम कहत मेरे ग्रनुमान हनुमान सारिषो।

त्रिकालन त्रिलोक महावल भी ।। ७ ।।

दूत राम राय को सपूत पूत पोन को ।।

तूं ग्रजंना को नन्दन प्रताप भूरि मानु सो ।

सीय सोच समन दुरित दमन सरन ग्राये ।।

ग्रवन लखन प्रिय प्रान सो।

दसमुख दुसह दरिद्र दारिवेको ।।

भयो प्रगट त्रिलोक ग्रोक तुलसी निधान सो ।

ज्ञान गुण वान वलवाल लेवा सावधान ।।

साहेव सुजान उर ग्रान हनुमार सो ।। ८।।

अन्त की पंक्तियाँ– कहे हनुमान सो सुजान राम राय सो

कृपा निधान संकर सो सावधान सुनिये हर विषाद

राग दोष मई–

विरची विरंचि सव देखियति दुनियै।

माया जीव काल के करम के सुभाय के कटैया राम वेद कहैं सोचो मन गुनिये तुम से कहा नहीं ईहा हासो बुझयै मोति हौहू रहौ मो नहीं क्या सो जानि .... नियै ।।४४।।

पुष्पिका–इति श्री हनुमानवाहुक गुसाई तुलसीदासकृत समाप्त ।।

विषयवस्तु– प्रसिद्ध।

७६(ख). हनुमानबाहुक: ग्रन्थकार–तुलीदास । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–× । पत्र-सं०–२९ । प्र० पृ० पं० लगभग– १२ । प्र० पं० अ०–१३। आकार– ११½" × ५" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी। लिपि– देवनागरी । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– बा० चिन्तामणि सिन्हा, सुखपुर (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री मते रामानुजाय नमः ।। श्री हनुमते नमः ।।

स्वर्ण शैल संकास कोटि रवितरुण तेज धन ।

उर विशाल भुजदण्ड चराडनख वज्र वज्रतन ।।

पिंग नैन भश्कुटी कराल रसनादसनानन ।।

कपीस केस् कर्कस लंगूर खलदलवलमानन ।

कह तुलसीदास वसजासु...............मारुत सुत मूरतिविकट ।

संताप ताप तेहि पुरुष-कह सपनेहु आवत निकट ।।१।।

अन्त की पंक्तियाँ–दोहा।

भौमवार आदिकपढ़ै जो नर सहित सनेह ।

रुज संकट व्यापे नहीं बाढ़े सुखघनगेह ।। १।।

पुष्पिका– इति श्री गोसाई तुलसीदास जी कृत हनुमान बाहुक संपूर्णम् संवत् १९०९ मिति आषाढ़मांस शुक्लपक्षे तिथ्थौ रविवासरे की समाप्तम्। लिषितं श्रीमद्राम धरमान्वितं इदं पुस्तकम् ।।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

७६(ग). हनुमानबाहुकः ग्रन्थकार–तुलीदास । लिपिकार–× । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१९०९ । पत्र-सं०–६ । प्र० पृ० पं० लगभग– १४ । प्र० पं० ग्र०–३८। ग्राकार– १४" × ७" । दशा– पूर्ण । भाषा– हिन्दी। लिपि– देवनागरी । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– बा० भैरोप्रसाद सिंह, सुखपुर (भागलपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री जानकी वल्लभाय नमः ।।

ग्रथ गोस्वामी तुलसीदास कृत हनुमान बाहुक लिख्यते ।।

ग्रतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं

दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगणयम् ।

सकलगुणनिधानं वानराणमधीशं

रघुपतिवरदूतं वाताजातं नमामि ।।

छप्पै।।

स्वर्न शैल संकासकोटि रवि तरुन तेजधन ।

उर्विशाल भुजदंड चणडनख वज्र वज्रतन ।।

पिंगनयन भ्रुकुटीकराल रसना पम्रानन ।

कपिल केश कर्कस लगुर खल्दल्वल भावन ।।

कह तुलसिदास वस जासु उर मारुत सुत पूरति विकट ।

संतोप ताप तेहि पुरुष कह सपनेहु नहि ग्रावत निकट ।। २।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–विनैके सुनेते पुलकाने हरिनाथ स्वर्न शैलसम देह कियो प्रगट प्रतापजू । करसीस लायो वरं क्रुदि मोहि कह्यौ प्रभु के ग्रनुभूहतै मिटौ तिहू तापजू ।

वार वार पद गहो पुनि हौं कृपाल कहो

करिहै कवित याद मन वच काय जू।

पाय है तुरित रुख ग्रा शिषा कपीस मुख

तुलसी के एक सीताराम मायबापजू ।।

पुष्पिका–इति श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत हनुमानबाहुक संपुरनं

शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ।

विषयवस्तु–प्रसिद्ध।

७७. हरिप्रकाश (बिहारी सतसई-टीका): ग्रन्थकार—हरिचरनदास[१]। लिपिकार— × । रचनाकाल—×। लिपिकाल—× । पत्र-सं०—१३८। प्र० पृ० पं० लगभग— १३। प्र० पं० ग्र०—६० । ग्राकार— १४" × ५½" । दशा— पूर्ण । भाषा— हिन्दी। लिपि— मैथिली। विषय— काव्य । प्राप्तिस्थान— पं० धरणीघर पाठक, बालीगढ़ टोली, रुन्नी-सैदपुर (मुजफ्फरपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्री राधाकृष्णो जयति।।

ग्रथबिहारी सतसई टीका हरिप्रकाश लिखौं हौ।।

तुलसीदलमालतमाल सो श्याम ग्रनङ्ग ते सुन्दर रूप सोहाहीं।
श्रुति कुण्डल के मानिकी झलके भुखमण्डल पै वरनी नहि जाहीं।।
सखि देखि पियूष हुतें सुषमा ग्रति ग्रानन की सरसाहीं ।
विहरे हरि गोप सुता सङ्ग कान्ह निशीथिनि में वनवीथिनि माहीं।।१।।
मूरति को भेद ग्ररु सूरति को भेद नहि मोहन सौ भेद मत वेदनि ग्राम को ।
नेह परिपूर वृषभान नन्दिनी नूर देषि जातरुप को गरूर काम वाल को ।।
ग्रानन ग्रनूप वारिजात को है भूप किधौ भासैन समान उपमान सुधा नाम को।
कारुणा ग्रगाधा हरै सन्तन की वाधा ऐसी कहै विन राधा फल ग्राधा कृष्ण नाम को ।।२।।
श्री को निवास सुगन्ध को वास ग्रौ रुप ग्रनूपमता पहिचानी।
राधिका की चरन छवि कंज कही मैं लही विधि सो यह वानी ।
धूरि सौ पूरि पराग मिसे करतार दियो रिस की रुप ठानी।
पानी गयो लजि वारिज को ठहरे फिरि वारिज पै नहि पानी ।।३।।

---

१. सारन-जिला (बिहार-राज्य) के चैनपुर-ग्राम-निवासी ; १७६६ वि० में वर्त्तमान; रामधन के पुत्र ग्रौर वासुदेव के पौत्र; बढ़िया (नावापुर, सारन) के जमीन्दार विश्वसेन के ग्राश्रित; जाति के सरयूपारीण ब्राह्मण; कृष्णगढ़ (मारवाड़) के महाराजा राजसिंह द्वारा सम्मानित; १८३५ वि० में दिवंगत; रसिकप्रिया, कविप्रिया, बिहारी-सतसई ग्रौर महाराज यशवन्त सिंह-कृत भाषा-भूषण के टीकाकार; 'सभाप्रकाश', 'बृहत्कविवल्लभ' ग्रौर 'कर्णभरण' के कर्त्ता। 'कर्णभरण' का यथादर्श-चित्र (फोटो-स्टॉट कॉपी) परिषद्-संग्रहालय में है। इसकी ग्रन्तिम प्रशस्ति में कवि ने ग्रपना परिचय दिया है। प्रथम तीन टीका-ग्रन्थ की पाण्डुलिपि श्री उदयशंकर शास्त्री (हिन्दी-विद्यापीठ, ग्रागरा-विश्वविद्यालय) के संग्रहालय में सुरक्षित है। इनके सम्बन्ध के विशेष विवरण के लिए दे० 'साहित्य-सन्देश' (ग्रागरा), २ जनवरी, १९५४ ई०, पृ०सं० ३०६; 'राजस्थानी भाषा ग्रौर साहित्य', प्रथम संस्करण, पृ० सं० १८६, द्वितीय संस्करण, पृ० सं० २४८; 'सम्मेलन-पत्रिका', पौष-फाल्गुन, शका० १८७९, पृ० सं० ५-६; ना० प्र० स०, खो० वि० १९०४, ग्रं० सं०, ४०५८; खो० वि० १९०६-८, ग्रं० सं० ५५ ए-बी; वि० १९०९-११, ग्रं० सं० १९०८। ग्रं० सं० ५१ के भी ग्रन्थकार ये ही हैं।

दोहा ।

मो हिय राधा कान्ह को निस दिन वसौ विहार ।
जेहि सुमिरत प्रत्यूह के विन सत जूह अपार ।।४।।
तीरथ सेवन करत हरि प्रेम भक्ति को मूल ।
धन्य कालिन्दी कूल लषि लोभे परित दुकूल ।।

अथ कवि की स्थिति ।।

राजत सुवे विहार में है सारनि सरकार।
सालग्रामी सुर सरित सरजू सोभ अपार ।।६।।
परगन्ना गोआल से गाम चैनपुर नाम ।
गंगा सो उत्तर तरफ सो हरि कवि को धाम ।।७।।
सरयूपारी द्विज सरस वासुदेव श्रीमान्।
ताको सुत श्री रामधन ताको सुत हरिजान ।।८।।
नवा पार में ग्राम है वढ़या अभिजन जास ।
हरि सु विहारी सतसई टीका करत प्रकास ।।९।।
फेरि विहारी सतसई टीका करत प्रकास ।।९।।
फेरि बिहारी अढ़न को परै न काहू पास।
ऐसी टीका करत है हरि कवि हरि परकास ।।१०।।
अन्त की पंक्तियाँ–पूरो हित श्री नन्द के मुनि साण्डिल्य महान्।
हम हैं ताके गोत में मोहन मो जजमान।।
मोहन महा उदार तजि और जगठि एकाहि।
सम्पत्ति सुदामा को दई इन्द्र लही नहि जाहि ।।
गही अकस मनु तात तें विधि को वंश लपाय।
राधा नाम कहैं सुनै आनन कान बढ़ाय ।।

पुष्पिका–इति हरिचरनदास कृतायां हरि प्रकाशाख्य सप्तसती टीकायां सप्तमोपाख्यान-ग्रन्थ समाप्तिः
।। शुभमस्तु ।। श्रीरस्तु ।।

विषयवस्तु–बिहारी-सतसई की टीका।।

७८. हितोपदेश (हिन्दी-पद्यानुवाद): ग्रन्थकार–नारायण[१] । लिपिकार–छकौड़ी सिंघ। रचनाकाल–× । लिपिकाल–१८८९ वि० । पत्र-सं०–६३। प्र० पृ० पं० लगभग– २७ । प्र० पं० अ०–२४ । आकार– ९½" × ६¼" । दशा–

---

१. हितोपदेश के रूपान्तरकार के रूप में नारायण कवि की चर्चा अन्य खोज-विवरणों में भी हुई है। इनकी 'हरिचंद कथा' नामक मौलिक रचना भी काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली है। दे० खो० वि १९०४, ग्रं० सं० ६० और खो० वि० १९०६-८, ग्रं० सं० ३०३ ।

पूर्ण, जीर्ण-शीर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– देवनागरी । विषय– नीतिशास्त्र।

प्राप्तिस्थान– बा० चिन्तामणि सिन्हा, सुखपुर (भागलुपर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गनेशाय नमः ।। दोहा ।।

सिंधि साधु के काज में सो हर करें कृपाल ।
गंग फेन की लीक सिर शशिकला विशाल ।।
सुन हित हित उपदेश येह देत वचन रचनानि ।
देवन्हि की वानी लहै राजनीति पहिचानि।।
ग्रमर ग्रजर की भांति सो विद्या धनहि बढ़ाउ।
मीतु मनहु झोटी गहे देत न बार लगाउ।।
विद्या धन सव धनन में संत कहत सरदारु।
मोल बड़ो नहि घटत घर किये नयै ये मारु ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–जो लौ गौरी गिरिस के बढ़त जात नित नेह ।
राजनति यह चित धरे करे सुराज ग्रच्छेह ।।
जौं लौ लक्ष्मी राम उन वसत गंग नर विचद ।
तौं लो नारायेन कथा मुने सुजान ग्रनंद।।

पुष्पिका–इति श्री हित उपदेशे संघि कथा वरननो चतुर्थ कथा संपूर्न ।।४०।।

मी० पुस सुदी २ दुईजी रोज सोमार संमत् १८८९ समे नाम पुस सन् १२४० साल पोथी लिखावल वाक छकौड़ी सींघ ।।

विषयवस्तु–हितोपदेश का हिन्दी-पद्यानुवाद।

०

मैथिली-लिपि की हस्तलिखित पोथियों का विवरण

१. आनन्दविजय : ग्रन्थकार–रामदास[१]। लिपिकार–हरिदत्त। रचनाकाल–×। लिपिकाल–१७६२ शकाब्द=१२४८ फसली। पत्र-सं०–९। प्र० पृ० पं० लगभग– १५। प्र० पं० अ०–५८। आकार– ८½" × ५"। दशा– प्राचीन। भाषा– मैथिली। लिपि– मैथिली। विषय– नाटक। प्राप्तिस्थान– पं० बलदेव झा, लोहट (दरभंगा)।

प्रारम्भ की पंक्तियाँ–औ नमो गणेशाय।

रोलम्बाकृति सुरतति दनुज मुनीन्द्रादि चिन्तितं तेजः।

आनन्द चिन्मयं वश्चययतु (?) दुरितं परबह्म॥

अपिच। रङ्गाडम्बर पूच्छदग्धिदहन ज्वाला कुलेन्दु.......... पीयूषोच्छ्वसिते-ऽपसृत्य नदति व्याघ्राजिनेवाससिः। मेघध्वानधियः कुमार शिखिनः संफुल्ल पिच्छच्छदैश्छन्नः प्रीतमना लुनातु भवतामाधिज्वरं धूर्जटिः॥ उद्दाम द्विवजञ्चुचञ्चु चरणास्यातावघात व्यथावस्तस्वादिपतेः पलायन विघो दत्तावकाशोत्सवः॥

श्री गौरी कवरीविलोकन कलोत्पन्नो भवेद्वैरिण

मुक्तापाय कुमारचक्रकपते भूयादसुयारसः॥

अन्त की पंक्तियाँ– आस्तामस्तमया प्रजापतिरतिप्रीताश्च भूमीभुजः। सन्तु ब्राह्मण पुङ्गवाश्च सुखिनो भुवस्तु (भुमिस्तु) शस्यान्विताः॥

आनन्दं कुरुवन्दनाय विलसन्यूनौजसा धन्यात्मनास्तु प्रस्तुतनाटिकापि नितरामाचक्रतारि भुवि॥ आनन्दकरः।

एवमस्त्विति सर्वे निष्क्रान्ताः॥ चतुर्थोङ्कः

१(क). दरभंगा (बिहार-राज्य) जिले के 'लोहना' नामक ग्राम में जन्म; पं० कृष्णदास झा के पुत्र; प्रसिद्ध मैथिल-कवि गोविन्ददास के अनुज; मिथिला के राजा सुन्दर ठाकुर के राजपण्डित; १६९८ वि=१६४१ ई० में वर्त्तमान। इनकी चर्चा 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' (सातवीं शती से अठारहवीं शती तक), पृ० सं० ८९ और 'मैथिली साहित्यक इतिहास', पृ० सं० १७८-१७९ में हुई है।

ख). इस पुस्तक के दो संस्करण-राज प्रेस (दरभंगा) और वैशाली प्रेस (मुजफ्फरपुर)–प्रकाशित हुए हैं।

पुष्पिका– इति समधिगतसमस्तप्रागल्म्यमहोपाध्याय श्रीरामविरचितानन्द विजया- भिधाननाटिका समाप्ता । लिखितमिदं भी हरिदत्तेन। शाके १७६८ कार्तिक धवल पञ्चदश्यां कुजे सन् १२४८ साल श्री राधाकृष्णाम्यां नमः श्रीमते विश्वनाथाय नमः।

विषयवस्तु–चार ग्रंको में सरल कथा। प्रथमांक में प्रेमिका के लिए माधव की ग्राकुलता ग्रौर ग्रन्तिमांक में राधामाधव-संयोग।

१(क). ग्रानन्दविजय : ग्रन्थकार–रामदास । लिपिकार–चन्द्रकवि । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१८१० शकाब्द । पत्र-सं०–१२। प्र० पृ० पं० लगभग– २४ । प्र० पं० ग्र०–१८ । ग्राकार– ९$\frac{3}{4}$" × ६$\frac{1}{4}$" । दशा– पूर्ण ग्रौर प्राचीन । भाषा– मैथिली। लिपि– मैथिली । विषय– नाटक । प्राप्तिस्थान– ग्रानन्द झा, कमतौल (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– पूर्ववत्।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– पूर्ववत्।

पुष्पिका– इति समाधिगत समस्त प्रागल्म्य महोपाध्याय श्री रामदास विरचितानन्द- विजयाभिधान नाटिका समाप्ता । शाके १८१० माघकृष्ण ७ बुधे लिखितं श्रीचन्द्र कविना ग्रधिदरभंगा राजधानि संस्कृतपाठशाला लक्ष्मीसागरोत्तरे लक्ष्मीपुरे।।

२. उत्तराचौरी : ग्रन्थकार–धर्मनाथ कवि[१] । लिपिकार–प्यारेलालदास । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१३०६ फ० । पत्र-सं०–३। प्र० पृ० पं० लगभग– १० । प्र० पं० ग्र०–३६ । ग्राकार– ३" × ५$\frac{1}{4}$" । दशा– पूर्ण ग्रौर ग्रस्तव्यस्त तथा त्रुटित। भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– नाटक । प्राप्तिस्थान– सुखदेवलतादास, टेकटारी, कमतौल (दरभंगा)।

प्रारम्भ की पंक्तियाँ–कहहि कन्त सो वचन कलपि कल जोरि मन्दोदरी ।

क्या चित धरहु ग्रभिमान कन्त सुनु विनय हमारी ।।
करुना करहु नि नाथ कष्ट को मेटनिहारा ।
को पावे पद पार कतेक जन सन्त उवारा ।।
कन्स मारि प्रद नाद कह (१) लिन्हेउ कठिन उवारि ।
कौन कुमति तुग्र कन्त भौ हरि लायहु प्रभुनारि ।।१।।

---

१. दक्षिण मिथिला (बिहार-राज्य) के 'परहटपुर' ग्राम-निवासी; पिता कवीन्द्र रघुनाथ ग्रौर 'माता गुणवती के पुत्र । रचना में केवल 'ग्रानन्द' नाम का भी प्रयोग करते थे। दे० 'मैथिली साहित्यक इतिहास', पृ० सं० १८९, १९० तथा 'हिन्दी-साहित्य ग्रौर बिहार' (प्रथम खण्ड), पृ० सं० ७९।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–क्षमा करहु कटु वचन क्षनहि क्षनमति भ्रमरानी ।

छवि निशि लिखा लिलाट सोकि है को ग्रास प्राणी ।।

क्षिति लङ्का को नृपति क्षण दिन्हा सिवसङ्कर।

सो किसको नहि तपसी छूटे जब वान भयङ्कर ।।

छाडि सको नहि जनकसुता छुटि जात वरु प्रान ।

क्षेत्र उनौ धर्मनाथ इति छपै चौतिसौ भानु ।।३४।।

पुष्पिका–ककहारा कवर्न का चौतीसा रावन मदोदरी क उत्राचौरी समाप्त । माधवदि ग्रष्टमी ८ सुक सन १३०६ साल लिखित श्री प्यारे लाल दास धर्मनाथ कवि वनाग्रोल ।।

विषयवस्तु–मन्दोदरी ग्रौर रावण का वर्णमालानुसारी उत्तर-प्रत्युत्तररुपात्मिका नाटिका।

३. उषाहरण (तालपत्र): ग्रन्थकार–देवानन्द । लिपिकार–×। रचनाकाल–×। पत्र-सं०–४५। प्र० पृ० पं० लगभग– ६ । प्र० पं० ग्र०–४४ । ग्राकार– ११" × ४" । दशा– प्राचीन, खण्डित । भाषा– मैथिली । लिपि– मैथिली । विषय– नाटक । प्राप्तिस्थान– श्री रघुनन्दन दास, सुखलाहा, मनीगाछी, (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ....न्ति जयं सदा।

ग्रसुरा स.......... प्राप्ता नूनं क्षयमयन्तिते ।

पुनराकाशे कर्ण दत्वा लिखनार्थ भव घेहि ।

नटी– 'ग्रज्ज कि उणा तंण ग्राणो।

सूत्र०–ग्राय्यें शृणु लिखनार्थपत्रिकामनो ग्रायासेन समुद्र मध्य-

वंचिता कष्टातिकष्टेन या स्रष्टुर्द्वारवती परैरपि नया दृष्ढा कुतो

लङ्घिता।

तस्यां सप्तमसौधमध्यवसतिष्याध्यस्थिरास्ते कृती।

यस्यां यादव वेष्टितस्य हरणी तस्यास्त्रिया .... कथम्।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– या नानागुणपूरिता बहुरसा प्रस्तारसर्वस्वरा ।

जातीग्राम विशोभिता पुलकभू .... द्विकृतिः ।।

तालप्राश्चिछमूर्च्छना सरभसं तानानुरागस्थली ।

पुस्तीवा रसिकापि वा ननु समासङ्गति विधापिवा

।।ग्रपिच।।

पुष्पिका– x ।

विषयवस्तु–श्रीमद्भागवत पर ग्राधृत उषाहरणकथानुपूर्वी नाटिका ।।

४. उषाहरणा : ग्रन्थकार–हर्षनाथ[१] । लिपिकार–x। रचनाकाल–x। पत्र-सं०–१४। प्र० पृ० पं० लगभग– ९ । प्र० पं० ग्र०–५६ । ग्राकार– ११ $\frac{१}{२}$" x ४" । दशा– प्राचीन, पूर्ण । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय– नाटक । प्राप्तिस्थान– श्री राधानाथ झा, सरौध रा-उजिग्राँव, लोहनारोड (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रो नमः सरस्वत्यै ।।

जय जय कुमति विनाशिनि देवि। सम ग्रभिमत पुर तुग्र पद सेवि ।।
तनु रुचि निन्दित कुन्दक भास। ग्रानन रुचि ससि बिम्ब उदास ।।
ग्रासन धवल कमल शशि भाल । श्वेंत वसन लस नयन विशाल ।।
वीणदण्ड कलश धरु हाथ । जयमाला वर पुस्तक साथ ।।
हर्षनाथ कवि मनदय भान । भगवति करिअ ग्रभय वरदान ।।
गीतार्थे श्लोकः ।।
या शुक्लाब्म्बु सदासना पूर्णेन्दु बिम्बानना ।
कुन्देन्दूज्जवल विग्रहानिजकरैस्संविभ्रती पुस्तकम् ।।
वीणमक्षगुणं सुधाद्यकलशं ब्रह्माद्रिदेवार्चिता ।
सर्वाभीष्टफलप्रदा वितरतु श्रेयांसि या सारदा ।।१।।
नान्द्यन्ते सूत्रधारः ।। ग्रलमतिविस्तरेण। ग्रादिष्टोस्मि खण्डवलाकुलरत्नाकर-सुधाकरेण कविपण्डितकुलहृदयसरसीरुह भृङ्गायमाणेन सकलराजकुलमुकुट-रत्नायमानचारणकमलेन मिथिलामहीमहेन्द्रेण महाराज श्री श्री श्री लक्ष्मीश्वर सिंह देवदेवेन यथा समस्तसभापाणिडतेन कवि पण्डितकुल तिलकायमानेन सकराठीकुल-नन्दनेन श्रीहर्षनाथ शर्मण विरँचितमभिनवमुषाहरणनाटकमभिनीयतामिति ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

कृष्णः-ग्रतः परमपि प्रियमस्ति । तथापीदमस्तु ।।
राजानः परिपालयन्तु वसुधा धर्मेण सर्वे जना ।।
स्वीयं कर्म समाचरन्तु समये वर्षन्तु धाराधराः ।।
एतद्दलनिबद्ध नाटक रसास्वानुरत्माश्चिरं ।
भूयासुर्निरुपद्रवास्सहृदया भूरस्तु शस्यान्विता ।।

---

१. दरभंगा (बिहार-राज्य)-जिला के 'उजान' ग्राम के शारदापुर टोलावासी; पं० व्रजनाथ झा के पुत्र; १७७३ वि०=१८३० ई० में वर्त्तमान; नंदन कवि के वंशज ग्रौर हरिनाथ के सम्बन्धी; 'हिन्दी-साहित्य ग्रौर बिहार' (प्रथम खण्ड), पृ० सं० १३६, प्रसिद्ध विद्वान राजाराम शास्त्री ग्रौर बालशास्त्री के शिष्य; श्रोत्रिय ब्राह्मण महाराजा लक्ष्मीश्वर सिह के दरबारी पण्डित । इनके द्वारा रचित 'माधवानन्द' नामक नाटक ग्रन्थ भी खोज में मिला है। विस्तार के लिए दे० 'मैथिली साहित्यक इतिहास', पृ० सं० २००-२०२ ग्रौर 'हिन्दी-साहित्य ग्रौर बिहार' (दूसरा खण्ड), पृ० सं० ९५।

नार: एवमस्त्विति निःक्रान्तास्सर्वे ॥

द्वारवती प्रत्यागमोनाम पञ्चमोङ्कः ॥५॥

पुष्पिका– इति श्री हर्षनाथ कवि विरचितभुषाहरणनाम नाटकं परिपूर्णम् ॥ शुभमस्तु।

श्रीरस्तु ॥ श्री महिषमर्दिन्यै नमः । श्री सरदायै नमः ॥ ग्रो नमो भगवति चण्डिके मुण्ड खण्डनमण्डिते ॥

विषयवस्तु–श्रीमद्भागवताश्रित उषाहरण नाटिका । पाँच ग्रंकों में सम्पूर्ण।

४(क). उषाहरण: ग्रन्थकार– हर्षनाथ। लिपिकार–मुक्तिनाथ । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१८०६ शकाब्द । पत्र-सं०–१९। प्र० पृ० पं० लगभग– ९ । प्र० पं० ग्र०–४८ । ग्राकार– १९" × ४½" । दशा– पूर्ण ग्रौर स्पष्ट । भाषा– संस्कृत। लिपि– मैथिली । विषय– नाटक । प्राप्तिस्थान– बा० उमेश मिश्र, चतरिया (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

पुष्पिका–इति श्री हर्षनाथकविविरचितमुषाहरणं नाम नाटकं परिपूर्णम् । शुभमस्तु। श्रीरस्तु॥

रस गगनवसुसमा संमितेब्दे च शुभे ग्रसित गणपतीशे शीतकान्तौ लिलेख।

वर तर वलिग्रासं वंशजो मुक्तिनाथो बुधवरपठनीयं पुस्तकं नाटाकाख्यम् ॥

विषयवस्तु–उपरिवत् ।

४ (ख). उपाहरण: ग्रन्थकार–हर्षनाथ। लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–१४। प्र० पृ० पं० लगभग– १० । प्र० पं० ग्र०–५२ । ग्राकार– १४" × ४" । दशा– पूर्ण, प्राचीन ग्रौर स्पष्ट। भाषा– संस्कृत । लिपि– मैथिली। प्राप्तिस्थान– बा० चन्द्रशेखर मिश्र, उपनाम महन्थ मिश्र, दामोदरपुर, बेनीपट्टी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

पुष्पिका–उपरिवत्।

विषयवस्तु–उपरिवत्।

४(ग). उषाहरण: ग्रन्थकार–हर्षनाथ। लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–२०। प्र० पृ० पं० लगभग– ७ । प्र० पं० ग्र०–३८ । ग्राकार– ११" × ४" । दशा– पूर्ण, प्राचीन । भाषा– संस्कृत । लिपि– मैथिली । प्राप्तिस्थान– पं० यदुनन्दन ठाकुर, सरसमा, झंझारपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

पुष्पिका–उपरिवत्।

विषयवस्तु–उपरिवत्।

५. कन्दर्पीघाट की लड़ाई : ग्रन्थकार– लालकवि[१] । लिपिकार–×। लिपिकाल–१२३२ फ०। पत्र-सं०–९। प्र० पृ० पं० लगभग– ७ । प्र० पं० ग्र०–३० । ग्राकार– ९$\frac{1}{4}$" × ३$\frac{1}{2}$" । दशा– प्राचीन, पूर्ण ग्रौर सादा कागज । भाषा– हिन्दी । लिपि– मैथिली । विषय–कीर्त्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– पं० ग्रनन्तलाल पाठक, करियन, बलहर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रो नमः श्री कृष्णाय।।

राम नराएन भूप तें कही मोखालिफ जाय।
हाकिम की मिथिलेश ने दीन्हों ग्रदल उठाय ।।१।।
सीर करो तीरहुति को ताकी रची उपाय।
फौजीदार महथा भये संग सलावति राय ।।२।।
बखत सिंह कुल उद्धरण रोड मल्ल दिलपूर।
चौभान भागु सु कुल एक एक ते सूर ।।३।।
याही सभते नाथ करि फौजे पाँच हजार ।
दिगसुल सम्मुख योगिनी महथा उतरें पार ।।४।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– पीछे लगे हैं सभे राग्रो राने लुटे पोल खाने नगारा निशाने।

कहूं लाल की पालकी कोटि हीरा लुटे पोसदाने भरे खास बीड़ा।
तम्बू कनातें लुटे ऊंट गाड़ी लुटे हैं कोउ काहू को पीछाड़ी। वरच्छी धमाका कहू लागिने जा गाये रहै काहु तें करेजा।
कहूं वाज हाथी लुटे वयस धाई महराजजू के पडी है दोहाई ।।

।। दोहा ।।

लूटि कूटि लौट्यौं सभाहि लिघुर लपेटे ग्रङ्ग।
लाल सुकवि ए होति भग्रो समर भिखारी भङ्ग ।।

---

१. दरभंगा-जिले के मँगरौनी-ग्रामनिवासी; मिथिला के महाराज नरेन्द्र सिंह के ग्राश्रित; १६८७ वि० (१७४४ ई०) में वर्तमान; मैथिली में 'गौरी-स्वयंवर' नाटक के रचयिता। डॉ० ग्रियर्सन के मतानुसार ग्रापके ग्राश्रयदाता महाराज नरेन्द्र सिंह ने ग्रापको पुरस्कार में 'करनौल' नामक ग्राम दिया था । दे० डॉ० ग्रि०, पृ० २०८ । इनके ग्रन्थ (गौरी-स्वयंवर) की एक हस्तलिखित प्रति पटना-विश्वविद्यालय के संग्रहालय में संकलित है। 'मिश्रबन्धु-विनोद' में भी इनकी चर्चा हुई है। दे० मिश्रबन्धु -विनोद, द्वि० भा०, द्वि० सं० १९८४ वि०, पृ० सं०८१९।

पुष्पिका– सन १२३२ साल फाल्गुन शुक्ल सप्तम्यां शुभे ।। शुभमस्तु ।। श्रीरस्तु ।।

विषयवस्तु–महाराज दरभंगा-नरेश श्रीमन्नरेन्द्र सिंह ग्रौर राजा रामनारायण के मध्य युद्ध में विजयी श्रीनरेन्द्र सिंह का कीर्त्ति वर्णन ।

६. कृष्णकेलिमाला : ग्रंथकार– नन्दीपति शर्मा।[१] लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–१२२७ फ०। पत्र-सं०–३४। प्र० पृ० पं० लगभग– ९। प्र० पं० ग्र०–४०। ग्राकार– ११" × ४"। दशा– प्राचीन, पूर्ण, पीला कागज। भाषा– संस्कृत-मैथिली। लिपि– मैथिली। विषय– नाटिका। प्राप्तिस्थान– प्रारंभ की पंक्तियाँ–नमो गणेशाय।

सानन्द गिरिजानन्दं श्रुति गीतं गजाननम् ।
वन्दे वन्द्य सुरावद्य .... देव देवं जगद्गुरुम् ।।१।।
श्लोकार्थे गीतम्
हे भव तनय भजल छिय तोहि । गजमुख समुख संतत रहु मोहि ।।
गिरजानन्दन गणनायक । जगत भगत ग्रभिमतदायक ।।
विषम विलोचन जटारे मटुक । सङ्ग प्रथम शिशु बाल वटुक ।।
ग्राखु चढल शिर चकमकचन्द। विघ्नविनाशन ग्रति सानन्द ।।
कए करकमल ग्रभय वर लेह । सोदर सहित लम्बोदर देह ।।
नन्दी पति कवि मङ्गल गाय। शम्भुतनय रसमय बुझ भाव ।।१।।

।। दोहा ।।

गिरिजानन्दन गजवदन विघ्नविनाशन हेतु ।
लम्बोदर ग्रशरण शरण भवसागर सुखसेतु।।
तोहहि तोहर सन ग्रान नहि एहिकारज एहिनाम ।।
करिय सम्पूरण नाटिका ते तुग्र करिग्र प्रणाम।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–दुष्टानां हननैः समस्त जगतां प्राप्तैर्यशो निर्मलम् ।
भूभारोद्धरणय येन हरिणा लब्धावहारा भुवि।
उच्चैरेव वदामि तेन सहसा सर्व कृतं कि कृतम् ।
त्यक्तायां यदि राधिकां प्रणयिनां रीतिरू दूरीकृता।

---

१. मिथिला (दरभंगा-जिला, बिहार-राज्य)-निवासी; राजा माधव सिंह (१७१९–१७५१ वि०) के समकालीन; कवि कृष्णपति झा के पुत्र; 'वादरि' ग्रौर 'कलानिधि' उपनाम से प्रसिद्ध। 'मिश्रबन्धु-विनोद' (तृतीय भाग, द्वि० सं०, १९८५ वि०, पृ० सं० ९८१) में भी इनकी चर्चा हुई है।

यज्ञेनैव जयैन कोटितपसा निर्मानमिच्छत्यपि।

श्री नन्दीपति निर्मिता मधुरिपोः क्रीडावर्ली सर्वथा।

रम्यां भागवती कथा समुकृती सर्वाङ्करोतु स्फुटाम् ।।

पुष्पिका—द्वादस नामान्वित महा कवि नन्दीपति विरचित कृष्णकेलि मालायां जरासिन्धु- जामातृवधोनाम चतुर्थोङ्क ।। ४।।

सन १२२७ साल शुक्र त्रयोदश्यांशुभे श्री देवनारायणस्य लिपिरियम् ।।

विषयवस्तु—प्रथमाङ्क में कृष्णावतार, द्वितीय में तरुणबामलरलोचन (१) तृतीय में राधिकाकृष्णमानमोचन ग्रौर चतुर्थ में जरासन्ध जामातृवध ।

६(क). कृष्णकेलिमाला: ग्रन्थकार—नन्दीपति । लिपिकार—× । रचनाकाल—×। लिपिकाल—×। पत्र-सं०—३५। प्र० पृ० पं० लगभग— १० । प्र० पं० ग्र०—२५। ग्राकार— ८½" × ३½" । दशा— प्राचीन, पूर्ण ग्रौर बादामी कागज । विषय— भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान— पं० मंत्रेश्वर भा, लालगंज, भंभारपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—उपरिवत्।

ग्रन्त की पंक्तियाँ—विभ्राजद्व्रजनागरी जनरता नन्दादिकर्तुः पुनर्विश्लेषाकुल-गोकुलालय मनोवैकल्प पीडाकृतः । श्री नन्दीपति निर्मिता यदुपतेः क्रीडावली राजिता पुस्तीथं समगात्सुपूर्तिमचिरात्संलेखिता मोददा ।।

पुष्पिका—उपरिवत्।

विषयवस्तु—उपरिवत्।

७. कृष्णजन्मरहस्यम् : ग्रन्थकार—श्रीकान्त[१] । लिपिकार—× । रचनाकाल—×। लिंपिकाल—×। पत्र-सं०—७। प्र० पृ० पं० लगभग— ११ । प्र० पं० ग्र०—४४। ग्राकार— ११" × ४½"। दशा— प्राचीन, पूर्ण, सफेद कागज, ग्रत्यन्त जीर्ण-शीर्ण । प्राप्तिस्थान— पं० गरीबनाथ भा, खाजपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—ग्रौ नमः शिवाय ।।

सुरेन्द्र रक्षणतिदक्ष खण्डितारिपक्षलक्ष, रक्षित स्वभक्तपक्ष बाहुवचलयधारिणी।

हरार्धदेहहारिणी स्वभक्त भव्य कारिणी, मुनीन्द्रवृन्दतारिणीसदा तनोतु वो मुदम्।।

---

१. मिथिला (दरभंगा, बिहार-राज्य)—निवासी; १६८८ वि० में वर्त्तमान; महाराजा नरेन्द्र सिंह के ग्राश्रित कवि । इनके रचित गति 'मैथिली-गीत-रत्नावली' में भी मिलते हैं। दे० पृ० ३७-३८ ग्रौर ८१ इनकी चर्चा 'हिन्दी-साहित्य ग्रौर बिहार' (प्रथम खण्ड) में हुई है। दे० पृ० सं० १६८।

तदेवार्थ दृढयति । मालवरागे गीतम् ।।

जयजय भगवति जय जगदम्बे । तव पद मोर परमहित लम्बे ।।

करतल कृत करवाल विशाले । नवशशिभूषित सुललित भाले ।।

समर समितरिपुनिकर कराले । चण्डमुण्ड खण्डन जयमाले ।।

भुजगविभूषित लोहित वसने । विकट दशन लम्बित वर रसने ।।

सजल जलद इब पूरित तारे । वह........... कलित शतमाणिमय हारे ।।

सुकवि गणक इह गायति गीतं । तब चरणे मानसमुपनीतम् ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–रचितं जन्म रहस्यं गणकाधिपेन रामरसिकेन ।

भवतु सुखाय जनानां संदसि सभानृपुत्यकालेषु ।।

पुष्पिका–इति भी भड़ूलाप्रसिद्ध श्रीकान्त विरचितो कृष्णजन्मरहस्यं समाप्तां। यदक्षरेत्यादि।।

विषयवस्तु–कृष्णजन्म-वर्णन ।

७(क). कृष्णजन्मरहस्यम् : रुक्माङ्गदचरितम् । ग्रन्थकार– श्रीकान्त । लिपिकार– ×। रचनाकाल–×। लिपिकार–×। पत्र-सं०–१९। प्र० पृ० पं० लगभग– ७ । प्र० पं० ग्र०–३७ । ग्राकार– १२" × ४½" । दशा– प्राचीन, पूर्ण, सफेद कागज, जीर्ण । भाषा–संस्कृत-मैथिली । लिपि– मैथिली । प्राप्तिस्थान– पं० चन्द्रेश्वर ठाकुर, चेतरिया (दरभंगा)।

प्रारम्भ की पंक्तियाँ–उपरिवत् ।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–मन लाल कयल नेहाल गोकुल मेल सकल सनाथ यो।

तुग्र तुनु पुज्य प्रसाद बालक मेल त्रिभुग्रन नाथ ग्रो ।

प्रसब भवनेत्यादि । राधाकृष्णाभ्यां नमः ।

पुष्पिका–इतिकृष्णजन्म समाप्ता । यदक्षरेत्यादि ।

विषयवस्तु– कृष्णजन्म–वर्णन।

८. गीतगोविन्दटीका : ग्रन्थकार– रतिपतिभगत[१] । लिपिकार– हलधरसिंह दास । रचनाकाल–×। लिपिकाल– ११३० फ० । पत्र-सं०–६१। प्र० पृ० पं० लगभग– ९ । प्र० पं० ग्र०–३० । ग्राकार– ८" × ४" । दशा– जीर्ण, प्राचीन, पूर्ण, सफेद कागज । भाषा– संस्कृत-मैथिली । लिपि– मैथिली । प्राप्तिस्थान– बिहार-रिसर्च सोसायटी-लाइब्रेरी, पटना।

---

१. मिथिला (दरभंगा, बिहार-राज्य)–निवासी; रामचन्द्र मिश्र के पुत्र ग्रौर लालगंज-निवासो महामहोपाध्याय शंकर मिश्र के वंशज; गीतगोविन्द (जयदेव-रचित) के मैथिली-रूपान्तरकार ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—श्री कृष्णाय नमः ।।

प्रणावि सब सवै लक्ष हारि गुरु गौरीस गणेश ।
भाषा गीत गोविन्द कियम्रो रतिपतिभगत उदेश ।।
जो सब मह जाहि मह सिरिज पाल हरि सव्व ।
जाको म्रादि म्रनन्त हए करउ सदा सो भव्व।।
हरिहि म्रनुजतनु विलम्ब देखि सोतिनिसम किम्रो रोस ।
जानि म्रर्द्धङ्गसिर थापिम्रा गौरि कहत सन्तोस ।।

म्रन्त की पंक्तियाँ—यद्‌गन्धर्वकलासु कौशलमनुध्यानश्च यद्वैष्णवं,
यच्छङ्गारविवेकतन्त्ररचना काव्येषु लीलायितं ।
तत्सर्व्वं जयदेव पण्डितकवेः कृष्णौकतानात्मनः,
सानन्दः परिशोधयन्तु सुधियः श्री गति गोविन्दतः ।।
इति श्री गीत गोविन्दे महाकाव्ये सुप्रीत पीताम्बरो कृष्ण वैकुण्ठो नाम द्वादशसर्गः ।।१२।।

पुष्पिका—द्वादशम सरग जयदेव किम्र जहि केशव म्रकलेश ।
सेवक सबके देउ सुख हरउ कलेश कलेश ।।१२।।
मिदं पुस्तकी करण वीम्रर श्री हलधरसिहदास्य लिखित्वा । इति गीत गोविन्द संपूर्णम् ।। सन ११३० साल वैशाष वदि ९ गुरौ ।।

विषयवस्तु—मैथिली-भाषा में गीतगोविन्द की पद्यमयी टीका ।

९. गीतगोविन्दटीका : ग्रन्थकार— लालकवि । लि्पिकार— × । रचनाकाल—× । लिपिकाल— × । पत्र-सं०—७ । प्र० पृ० पं० लगभग— १० । प्र० पं० म्र०—५०। म्राकार— ११" × ४" । दशा— पूर्ण, प्राचीन, सफेद कागज । भाषा—मैथिली। लिपि— मैथिली । प्राप्तिस्थान— बा० चन्द्रशेखर मिश्र, उपनाम— महन्थ मिश्र, दामोरपुर, बेनीपट्टी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—म्रो नमः सरस्वत्यै ।।

स्फुरच्चन्द्रखण्डं ललच्छण्डदण्डं रणद्‌भृङ्गराडं विराजत्रिपुराडम् ।
समस्तारिमुराडप्रणशातिशौण्डं भजे मञ्जुकाण्डं गणेशं प्रचण्डम् ।।१।।

म्रन्यच्च ।

मौलौ भाति तरङ्गरङ्गसहिता मन्दाकिनी पावनी ।
भाले चन्द्रधनञ्जयौ च हृदये व्यालावली मञ्जुला ।
म्रर्धाङ्गे गिरिजा सुपद्मनयना मुक्तागणैर्भूषिता।
सत्वां रक्षतु सादरं पशुपतिर्यस्यास्ति विश्वेश्वर : ।।२।।

निशाधिनाथभूषण महामृगेन्द्रवाहना,

त्रिनेत्रहंसवाहनादिमिः सदैव वन्दिता ।

कपालमालधारिणी सुरारिदुष्टहारिणी,

सुरौध भव्य भारिणी सदा तनोतु वो मुदम् ।।३।।

प्रणम्य शंकर देव शाङ्करीञ्च गजाननम् ।

कवि लालः करोत्येनां गौरीस्वयंवरनाटिकाम् ।।४।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

ग्राङ्गुरिलाल लेल त्रिपुरारि, चललि कोवर गिरिराज कुमारि।

गाण मङ्गल सखि हुई चारि, हर देखि कौशल नयन निहारि ।।

सिन्दुर दय एक नारि, कोवर गेल हर हरखि विचारि ।।

सुकवि गणक भन ग्रापद कारि, हरथु दुरित गौरि हरखि निहारि ।।

ततः कौतुकलीलयानिर्वचनीयाद्द्रु तसुखमासाद्य कैलासपुर-गमनोत्सुको बभूव ।।

पुष्पिका– इति श्री कविलाल विरचिता गौरीस्वयंवर नाटिका समाप्ता ।।

श्रीरस्तु ।। शुभमस्तु ।। गणेशो जयतु ।।

विषयवस्तु–प्रणय कथा पर ग्राधृत मैथिली में मौलिक नाटिका ।

९(क). गौरीपरिणय नाटिका : ग्रन्थकार– लालकवि । लिपिकार– × । रचनाकाल–×। लिपिकाल– × । पत्र-सं०–७। प्र० पृ० पं० लगभग– १० । प्र० पं० ग्र०–४८। ग्राकार– ११" × ४" । दशा– प्राचीन, पूर्ण, सफेद कागज । भाषा–मैथिली। लिपि–मैथिली । विषय– भक्तिनाटिका । प्राप्तिस्थान– तारकेश्वर झा, सौराठ, मधुवनी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– उपरिवत्।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–ग्राङ्गुरिलाए लेल त्रिपुरारि, चललि कोवर गिरिराजकुमारी ।

लघु लघु पग देअ पथ सुकुमारि, गावए मङ्गल सखि दुई चारि ।।

वर देखि कौसल मञनी न वारि, सिन्दुर धार देग्र नारि।

कोवरा गए हर हृदए विचारि,पाग्रोलहि गौरि पदाराथ चारि ।।

सुकवि लाल कह ....।

पुष्पिका–इति गौरी परिणो समाप्तः।।

९(ख). गौरीस्वंवर नाटिका : ग्रन्थकार– लालकवि । लिपिकार– × । रचनाकाल–×। लिपिकाल– × । पत्र-सं०–७। प्र० पृ० पं० लगभग– १० । प्र० पं० ग्र०–४२।

आकार– १०½" × ४" । दशा– खण्डित, प्राचीन,सफेद, कागज । भाषा– हिन्दी। लिपि– मैथिली । विषय– भक्तिनाटिका । प्राप्तिस्थान– श्री राघव झा, माधवपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–उपरिवत् ।

अन्त की पंक्तियाँ–गौरी शङ्कर मण्डप गेला, बड़ कठिन पुरोहित की मेला ।

बाप पितामह नाम नहि जान, कोन परि होएत कन्यादान।
तीन नाम वसहिक कहि देला, ते विधि गातें उचारन मेला।
पुरोहित कैलन्हि अपन छुटानि, महा हरखभए मेल कलपानि।
सुकवि लाल एहो अचरज मान, एहनो देखल विम्राह विधान ।
सिन्दूरदान तिनि इन्दु पओलन्हि घोघटा बाधरि छाल ।
आ ओर विविक विधान कएल हर एक कपाल कमाल ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश वेद भनि दुनिअ सतशिर देला ।।

पुष्पिका–× ।

विषयवस्तु–उपरिवत्।

१०. नलचरित (तालपत्र): ग्रन्थकार-गोविन्द[१]। लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–२६ । प्र० पृ० पं० लगभग– ४ । प्र० पं० अ०–४२। आकार– १३" × १½" । दशा– प्राचीन, खण्डित, तालपत्र पर लिखित । भाषा– मैथिली । लिपि– मैथिली । प्राप्तिस्थान– पं० आनन्द झा, कमतौल (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–वशररि (१) जीवदत्तः।

सुतमजनय देख लेषतुल्यं विमलमति स्थितिदत्तमत्युदारेः ।
स च सकल गुणास्पदं जनानामलभत लक्ष्मणदत्तमिष्टमक्ष्णोः ।।
तनयवर उदित्वरस्यभानोः सदृशरुचिः सुकृतेन तेन जज्ञे ।
श्रीकरो भवदमुष्य नन्दने नन्दनोदित इबामरद्रुमः ।।
राजहंसकमनीयमूर्तिभिः पूरयन्दशदिशोपि कीर्तिभि : ।
हरिहरचरणपरायशः प्रियश्री सुहृदरविन्दविनोदभानुः ।
रविकर कविरेतदात्मजोभूद्यमभिदधुर्य्य .... ।

---

१. मिथिला (दरभंगा, बिहार-राज्य)–निवासी; रविकर के पुत्र और श्रीकर के पौत्र; यादवराम के आश्रित कवि; १५८२ वि० में वर्तमान; अनुसन्धेय ग्रन्थकार । ग्रन्थ खण्डित होने के कारण पुष्पिका के अभाव से अन्य सूचनाएँ अनुपलब्ध । 'मैथिली साहित्यक इतिहास' में पृ० सं० १९७७ का आपका उल्लेख हुआ है।

ग्रयञ्च गोविन्दमविन्दतापि सुतं जयानोमुरसिन्धुसूतं ।

यस्यानुजा माधव्र वासुदेव गोपालनामानउपान्तविद्याः ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– सुदे०– मा विषीद। ग्रविलम्बितमहं ते समीहितं सम्पादयिष्यामि।

दम०–महाभाग्र । ता एहि करेहि खणपि जीविदु' धारिदुं ना सक्कणोसि।

सुदे०–देवि गस्मते भवद्भिमतसिद्धय इति निष्क्रान्त ।

तत०– प्रविशति सुदेवोपदिश्यमानमार्गो विभासः ।।

का ल–ग्राएल नैषघकुल ग्ररविन्द । सममस्वभावमलिनमुखचन्द ।

पुष्पिका–x ।

विषयवस्तु–नल दमयन्ती से सम्बद्ध नैषधचरितानुरुप नाटिका । संस्कृत-प्राकृत में कथोपकथन।

११. पारिजातहरण : ग्रन्थकार-उमापति[1] । लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–१६ । प्र० पृ० पं० लगभग– ९ । प्र० पं० ग्र०–४०। ग्राकार– ११" × ४$\frac{३}{४}$" । दशा– जीर्ण, प्राचीन, पूर्ण सफेद कागज । भाषा– मैथिली । प्राप्तिस्थान– पं० धरणीध र पाठक, बालीगढ़, टोला मननपुर, रुन्नी-सैदपुर (मुजफ्फरपुर)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रो नमो महागणेशाय ।। ग्रथपारिजातहरणाख्य नृत्यारम्भो लिख्यते ।

तत्र प्रथमं मङ्गलगीतम् ।।

जय जय मधुकैटभ ग्रर्दिनि, जय जय महिषासुरमर्दिनि।

धुमर नयन भसममण्डिनी, चण्डमुण्ड ।

धुमूर नयन भसममण्डिनि, चण्डमुण्ड दुहुशिरखण्डिनि ।

रक्तबीजासुर संधारिणि, शुम्भनिशुम्भहृदयविदारिणि।

अनुपमरूप सिहवाहिनि, सवहि समय रहिय दाहिनि।

सुमति उमापति ग्राशिखवानी, सकल सभा जय करथु भवानी ।

(नान्दीश्लोकं पठति सूत्रधारः प्रविश्य)

क्षोणी यस्य रदे मृडालशकलं मूलार्णवः पल्वलं स्वर्गङ्ग वसनं विभाति गगनं कस्तूरिकालेपनं। चन्द्रश्चारुललाटचन्दनमुडुश्रेणीगतामाल्यताम् तेन श्रीधरणीध रेणा हरिणा हिन्दूपतिः पाल्यताम् ।।१।।

---

१. दरभंगा (बिहार-राज्य)–जिले के 'भौर' परगना-स्थित 'कोइलख' ग्राम-निवासी; रत्नपति उपाध्याय के पुत्रः हरिहरदेव नामक राजा के ग्राश्रित। इनका ग्रावासस्थान तथा ग्राश्रयदता दोनों विवादस्पद हैं। पर्याप्त ग्रनुसन्धानेन्मुख निबन्धों के प्रकाशन के बावजूद कवि से सम्बद्ध ग्रनुसन्धान की ग्रपेक्षा है।

ग्रन्त की पंक्तियाँ– श्रीकृष्णः श्लोकं पठति ।।

उर्वीं शस्येन गुर्वीं विलसतु सुखिनः सन्तु सन्तः सदैव ।
क्षीणेभ्यः क्षोणिपालः प्रवितरतु गुणां भावयित्वा वसूनि।
साधूनां सन्निवासः यह पिशुनजनैरेकलोकेपि मा भू–
दासूद्रान्तं कवीनां भ्रमतु भगवती भारतीभङ्गभेदैः ।।

ग्रस्यार्थः । उर्वीं शस्यैन गुर्वीं विलसतु सन्तः सदैव सुखिनः सन्तु दरिद्रेभ्यः क्षोणीपालः भावयित्वा गुणं वसूनि प्रवितरतु । साधूनां सन्निवासः पिशुनजर्नस्सह एकलोके माभूत कबीनां भारतीभगवतीभङ्गीमेदैरासूद्रान्तं माभूत् ।।

पुष्पिका–इति महामहोपाध्याय कवि पण्डितमुख्य श्रीमदुमापतिविरचिता नवपारिजात- हरणाख्यनाटिका परिपूर्णा।

विषयवस्तु–संस्कृत-प्राकृत-मैथिली मिश्रित पुराणख्यानाश्रित नाटक ।

११(क). पारिजातहरण : ग्रन्थकार– उमापति । लिपिकार–×। रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–× । पत्र-सं०–७ । प्र० पृ० पं० लगभग– ९ । प्र० पं० ग्र०–५० । ग्राकार– १०½" × ४" । दशा– प्राचीन, पूर्ण, सफेद कागज । भाषा– मैथिली । लिपि– मैथिली । प्राप्तिस्थान– बा० सत्यदेव मिश्र, रहिका (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–उपरिवत् ।

अन्त की पंक्तियाँ–उपरिवत् ।

पुष्पिका–उपरिवत् ।

विषयवस्तु–उपरिवत् ।

११(ख). पारिजातहरण : ग्रन्थकार– उमापति । लिपिकार–हरदत्त । रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१२४८ फ० । पत्र-सं०–९। प्र० पृ० पं० लगभग– १८ । प्र० पं० ग्र०–४६। ग्राकार– १०" × ५" । दशा– प्राचीन, पूर्ण, सफेद कागज । भाषा– मैथिली। प्राप्तिस्थान– पं० बलदेव भा, लोहट (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

विषयवस्तु–उपरिवत् ।

पुष्पिका–इति महामहोपाध्यायकवि पण्डितमुख्य श्रीमदुमापति विरचितं पारिजाताहरणाख्य- समाप्तः ।। सन् १२४८ साल कार्तिकशुदि पंचम्यां गुरौ लिखितमिदं ।। लिखित-मिदं भी हरदत्तेन स्वार्स्थमिति ।। शुभं भूयात् ।। श्री इष्टदेवतायै नमः।।

विषयवस्तु–उपरिवत् ।

११(ग). पारिजातहरण : ग्रन्थकार– उमापति। लिपिकार–×। रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–१२। प्र० पृ० पं० लगभग– ७। प्र० पं० अ०–४६। आकार– ११" × ३½"। दशा– प्राचीन, पूर्ण, नेपाली कागज। भाषा– मैथिली। प्राप्तिस्थान– बा० जयराम झा, झंझारपुर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

अन्त की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

पुष्पिका–उपरिवत्।

विषयवस्तु–उपरिवत्।

११(घ). पारिजातहरण : ग्रन्थकार– उमापति। लिपिकार–×। रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–१२१५ फ०। पत्र-सं०–१२। प्र० पृ० पं० लगभग– १३। प्र० पं० अ०–४६। आकार– १२" × ४½"। दशा– प्राचीन, पूर्ण, बादामी कागज। भाषा– मैथिली। लिपि मैथिली प्राप्तिस्थान– पं० आद्यानाथ मिश्र मनी गाछी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

अन्त की पंक्तियाँ–उपरिवत्।

पुष्पिका–उपरिवत्।

विषयवस्तु–उपरिवत्।

११(ङ). पारिजातहरण : ग्रन्थकार– उमापति। लिपिकार–×। रचनाकाल–प्रसिद्ध। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–१०। प्र० पृ० पं० लगभग– ९। प्र० पं० अ०–४०। आकार– १२" × ४½"। दशा– प्राचीन, पूर्ण, सफेद क़ागज। भाषा– मैथिली। लिपि : मैथिली प्राप्तिस्थान– पं० राजनाथ मिश्र, सौराठ, मधुबनी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–अपिच।

यस्यायं पूर्णचन्द्रः सुवचनममृतं दिग्जयश्रीश्चलक्ष्मी–
दोंस्तम्भं पारिजातो भ्रुकुटि कुटिलिमातंगेर कालकूटः।
तीव्रं तेजोसि वाग्मी पदभजनपराराजराज्यस्तटिन्यः
पारावारो गुणनामयतुलरसः पातु हिन्दूपतिर्वः ।।२।।
नान्दीपाद्यसुसूत्रधार प्रवेशः।। नान्द्यन्ते सूत्रधारः। अलमतिविस्तरेण ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–ततः प्रविशति गरुड़ारुढ़ो पारिजातः । श्री कृष्णाः ग्राश्वारूढ़ी

धनञ्ज्यश्च । श्री कृष्णः सत्यभामां प्रति वदति हे प्रिये गृह्यतामर्थ पारिजाततरुः।

पुष्पिका–x ।

विषयवस्तु–उपरिवत्।

१२. पारिजातहरण : ग्रन्थकार– भानुनाथ[१] । लिपिकार–x। रचनाकाल–x। लिपिकाल–x। पत्र-सं०–२२। प्र० पृ० पं० लगभग– ७ । प्र० पं० ग्र०–३८। ग्राकार– ८½" × ३½"। दशा–प्राचीन, पूर्ण, सफेद कगज । भाषा– मैथिली । विषय– नाटक । प्राप्तिस्थान–श्रीबटहरि झा, पिलखबरा, मधुबनी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–श्री गणेशाय नमः ।।

जय जय त्रिभुवन सुन्दरि भगवति कृत बहुविधवररुपे।
सिन्दुर पूर रुचिर तुज ग्रम्बर त्रिनयनवलित ग्रनूपे ।।
हे जय इति ध्रुवम् ।।
ग्ररुण सरोरुह निहित चरण युग विहित शशिभाले ।
ललित चतुर्भुज कलित ग्रभयवर पुस्तक विरचितभाले ।। हे ।।
तरुण वयस शिशु दिनकर रुचि तनु सतत पुरित सुखहासे ।
सुरगुरु सुश्पति दुनुहु तुलित मेल ये जन तुग्र पगुदासे ।। हे।।
त्वरित उरित चय भार निकन्दिनि रचित मनोरम हारे ।
धरम करम उपगत रह ये नर तनिक परम सुख तारे ।। हे।।
ग्रागम विलिखि तनुग्र गुन गाग्रोल विमल नृत्य दिग्र दाने।
सकल सभा जय करु परसनि जय भानुनाथ कवि भाने ।। हे ।।
ग्रन्त की पंक्तियाँ– ततः कवेर्भक्तिसूचकं श्लोकं सूत्रधारः पठति ।।
ब्रह्मा यत्र विदूषकः कमलया युक्तोभिनेता हरि-
र्वादित्रञ्च सरस्वती कलयति श्री चण्डिका नायिका ।

---

१. मिथिला (दरंभाग, बिहार-राज्य)–निवासी; महाराज महेश्वरसिंह (१८५०-१८६०) के राजदरबार में प्रख्यात ज्योतिषी; खौल-परिवार में भाना झा नाम से प्रसिद्ध महामहोपाध्याय दीनबन्धु झा (नेमन झा, नन्दन झा नाम से भी विख्यात) के पुत्र; प्रसिद्ध नैयायिक बबुजन झा के ज्येष्ठ भ्राता। इनके पिता को विद्वत्ता के पुरस्कारस्वरूप नेपाल में एक ग्राम मिथिला-नरेश से मिला था। विस्तार के लिए दे० 'मैथिली साहित्यक इतिहास', पृ० सं० १९९, २०० इनकी एक नई रचना-'वाताह्वानम्'–खोज में मिली है।

त्रैलोक्यस्थलमेव रङ्गरचना यस्मिन्विभोस्ताण्डवे

दासाय द्रुतपारितौषिकमहं स्वात्मानमप्यर्पये ।।

इति निष्क्रान्ताः सर्वे।। चतुर्थोङ्कः ।।

पुष्पिका–इति श्री भानुनाथदैवज्ञविरचितप्रभावतीहरणनाटकं सम्पूर्णम् ।। शुभमस्तु ।। श्रीरस्तु ।।

विषयवस्तु–संस्कृत-प्राकृत-मैथिली भाषाओं में निर्मित नाटक।। श्रृंगार रस में युद्ध-सम्बन्धी वर्णन ।

१३. भाषा-चमत्कारः ग्रन्थकार–वैद्यनाथ[१] । लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–४३७ । प्र० पृ० पं० लगभग– २२ । आकार– ८" × ६$\frac{1}{4}$" । दशा– जीर्ण-शीर्ण, खण्डित, प्राचीन, सफेद कागज । भाषा– मैथिली । विषय– पुराणाधृत कथा । प्राप्तिस्थान–बा० इन्दीवर झा, डीहटोला, पंडौल (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ–

रचल सभक विधि मुनि सभकें न्योत पठाए ।
यह छल वसुधा सुनिक गण पहुँचहिं ऋषिसंग धाए ।।२२।।
शौनक राधा कृष्ण की हिय्र में राखि धेयान ।
तनु मन वचन सुभाजि करि देलष जन मुनि ठानि ।।२३।।

अन्त की पंक्तियाँ–

तषन कहल समुचित कथा गिरि कें नारद मूनि ।
ये मेल गिरी कैलास पर शंकार सँओ सभ सूनि ।।
तषन महीधर कहल कथा ज्योतिर्विद संबुझाए ।
ऋक्ष लग्न तिथि दिवस शुभ विवाहक देहुवनाए ।।
से सुनि कयलन्हि ज्योतिषि विवाहक दिवस विशेष ।
विवाहक दिवस के नियमकरि मुनि सँओ कहल अशेष।।
से सुनि जायकें विधिकहुत शंकर सँओ कह पाए।
दिवस नियम विवाह की कयलन्हि सूनि उपाए ।।

पुष्पिका–इति दन्तवक्त्रवद्य शङ्करविवाहप्रबन्धकथन ....।

विषयवस्तु– मैथिलीभाषानिबद्ध पौराणिकी कथा।

---

१. नवोपलब्ध और अज्ञात । इनके सम्बन्ध में सूचनाएँ अनुल्लिखि हैं।

१४. माधवानन्द : ग्रन्थकार–हर्षनाथ[१] । लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–६ । प्र० पृ० पं० लगभग– ९। प्र० पं० ग्र०– ३४ । ग्राकार– १०½" × ४½"। भाषा–संस्कृत मैथिली । लिपि–मैथिली । विषय– नाटक। प्राप्तिस्थान–पं० ऋद्धिनाथ झा, सारदापुर, लोहनारोड (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रो नमः सरस्वत्यै ।।

जय जगजननी जप जगजननी देहु सुमति मृगपति गमनी ।
सरसि सहासन विपदविनाशन कारिणिमधु कैटभ दमनी।
दिति सुतरंजन सुञ्जन गञ्न महिष महासुर बलदलनी ।
त्रिभुवन तारिणि महिषविदारिणि धूमरनयनभसमकरनी ।
चण्डमुण्डशिरखण्डनकारिणि उन्मदरकत वीजशमनी ।
ग्रतिबलशुम्भनिशुम्भविनाशिनि निजजनसकल विपदहरनी ।
तुग्र गुण ग्रगम निगमचतुरानन कहिन सकत कम सहस्त्रफनी ।
त्रिदश तपोधन दनुज मनुजशिरचिकुरकलित जितरकतमनी ।
तुग्र पद युगल सरोरुह मधुकर हर्षनाथकवि सरस भनी ।
चन्द्रार्धमौलिश्शरदिन्दु वत्र्या हंसादिरूढ़ादधतीस्वहस्तैः ।
वीणच्छमाले कलशं च पुस्तं ....कर्पूर रुचिर्ददातु ।।
नान्द्यन्ते सूत्रधारः । ग्रलमतिविस्तरेण। इयंहि खण्डबलाकुल-
कमलदिवाकरस्य महाराजरुद्रसिंहात्मजने त्रेश्वरसिंहतनुजन्मनः श्रीम-
देकरदेश्वरसिंहस्य गुणिजनालङ्कृतापरिषत् । तदत्र केनापि नवेन
रूपकेणोपस्थातव्यम्। पुनः स्मृतिमभिनीय । ग्रस्ति किलास्मासु
सफराठी कलनन्दनेन श्री हर्षनाथ शर्मण विश्वत्य समर्पितं
माधवानन्द नाम नवीनं नाटकं तद्द्यावधिनं प्रयोगेण परीक्षितमिति
तदभिनयेन रसिकारञ्जनीयः ।।

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

खलजन राजसदन नहिं ग्रावे, ऊनु............ गुणिजनं सत्कृति पावे।।
धरणी सस्य भरलि सभकाला, धरमपालथु धरणि क्षितिपाला ।।

---

१. मिथिला (दरभंगा, बिहार-राज्य)–निवासी; मिथिला-नरेश एकरदेश्वर सिंह के ग्राश्रित; कविवर श्रीहरिनाथ के वंशज; पं० ब्रजनाथ झा के पुत्र; वाराणसी में राजारामशास्त्री ग्रौर बालशास्त्री से विद्याध्ययन; १७९० वि० में जन्म ग्रौर ५१ वर्ष के वय में देहावसान । विस्तार के लिए दे० 'मैथिली साहित्यक इतिहास' पृ० सं० २००-२०२। इनके रचित ग्रन्य–माधवानन्द ग्रौर कृष्णमिलनलीला–दो ग्रन्थ खोज में प्राप्त हुए हैं। गीति-कवि के रूप में ज्ञात । 'गोसाम्रनिक गीत', 'सोहर', 'उचिति ग्रो तिरहुति' नामक रंचनाएँ भी मिलती हैं।

हर्षनाथ कवि मनदय गावे, एकरदेश्वरसिंह बुझावे ॥

श्री कृष्णः । एमवस्त्विति निःक्रान्ताः सर्वे ॥

पुष्पिका–इति माधवानन्दनाटकं परिपूर्णम् ॥ श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

विषयवस्तु–पौराणिक ग्राख्यान पर ग्राधृत पाँच ग्रंकों में भक्तिनाटक ।

१५. मानचरित्र : ग्रन्थकार–गोकुलानन्द[१] । लिपिकार–×। रचनाकाल–×। लिपिकाल–×। पत्र-सं०–११। प्र० पृ० पं० लगभग– २०। प्र० पं० ग्र०– १९। ग्राकार– १०½" × ८½"। दशा–पूर्ण, प्राचीन, बादामी कागज । भाषा–हिन्दी। लिपि–मैथिली । विषय– नाटक। प्राप्तिस्थान–पं० ग्रानन्द झा, पिदरिछिया, कमतौल (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– ग्रथ मङ्गलाचरणम् गीतेन।

जय जय भारती भगवति देवि, केन मुदित रहु तुग्र पद सेवि ।
चन्द्र धवल रुचि देह विकास, श्वेतकमल पर करहु निवास ।
वीणारव रसिता वर नारि, सतत मगन गिरिराजकुमारि ।
जन्म मरण नहि तोहि भवानि, त्रिदश दास तब त्रिगुण जानि ।
ग्ररुण ग्रधर बन्धूक समान, तीनि नयन विद्यावरदान ।
गीकुल तुग्र सुत सविनय भान, देहु परम पद दायक ज्ञान ॥

ग्रन्त की पंक्तियाँ–

ग्राढ़ति करल वनाय सकल व्रजसखि ग्राये०। ध्रुव ॥
कनककलस पुर हरकरि मणिमय सुन्दरदीपवनाय ।
मङ्गलगान करति नीराजन निज निज ग्रारति लाय ।
बैठ कनक सिंहासन दोउ ग्रङ्गहि ग्रङ्ग मिलाय ।
नन्दकिशोर संग व्रजनन्दिनि ग्रतुलित वेश वनाय ।
दहिन श्याम मुख मुरलि बजावत प्यारी तन लिपटाय ।
वाम भारा दामिनी रुचि कामिनि मन्दहसित मुखछाय ।
प्रभु गोकुलपति सहित नारिनिज.........मुख सखी गण वाय ।
करति निराजन विविध शंतिते (१) ग्रानन्द उर न समाय ॥
इति निष्क्रान्ताः सर्वे ॥ इति सप्तमोङ्क ॥

पुष्पिका–इति श्री गोकुलानन्दकवि विरचितं मानचरितं नाम नाटकं परिपूर्णम् ॥
यवनिकापतनम् ॥

---

१. 'उजान' या 'सरिसब' (दरभंगा, बिहार-राज्य)–निवासी; १७१९ वि० में वर्त्तमान; मिथिला के राजा माधवसिंह के समकालीन । इनके सम्बन्ध में ग्रधिक ग्रनुसंधान नहीं हुग्रा है। नवोपलब्ध-कवि।

विषयवस्तु—भक्ति (राधाकृष्णा-संयोग)—विषयक सात अंकों में निबद्ध पौराणिक नाटक।

१६. रुक्माङ्गद : ग्रन्थकार—जयकृष्ण[१] । लिपिकार—×। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।
पत्र-सं०—१६। प्र० पृ० पं० लगभग— ११। प्र० पं० अ०— ३०। आकार— ६$\frac{1}{4}$" × ३$\frac{1}{2}$"।
दशा—प्राचीन, खण्डित, सफेद कागज । भाषा—प्राकृत, संस्कृत,मैथिली । लिपि—मैथिली।
विषय— नाटक । प्राप्तिस्थान—पं० अनन्तलाल पाठक, करान, बलहर (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—ओ नमः सरस्वत्या नमः ।।

य: पूर्व कवलीचकार मदनं भालोद्भवेनाग्निना ।
कन्तुं किन्तु महत्तपः पशुपति योगेन्द्र वृन्दाग्रणिम् ।
सोद्यर्धङ्गता दधातितिशैलाधिपस्यात्मजा-
मैश्वर्यकमणीय केलिरसिक शम्भो शिवायस्तु व ।।१।।

अन्त की पंक्तियाँ—राजा तं दृष्ठ्वा प्रदक्षिणां करोति ईश्वस्य शंखनादेन सा मोहिनि
अन्तहिता बभूव । राजा धर्माङ्गदस्याभिषेकं अनेन मङ्गलेन कृतम् ।
गीतं गायति ।।
आज सुदिन हरिदरसन पूरल मनोरथ मोरा,
हरषि निधान धाम सुखे आएल पुलकित नयन चकोरा रे ।
चानन कुङ्कुम अगर उणारल अनुपम देहा रे ।
आनन्द मुदित स........... ।।

पुष्पिका—× ।

विषयवस्तु—रुक्माङ्गदचरित्रानुपूर्वी नाटिका।

१७. वाताह्वानम् : ग्रन्थकार—भानुनाथ। लिपिकार—×। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×। पत्र-सं०—१६।
प्र० पृ० पं० लगभग— ४० । आकार— ८$\frac{1}{4}$" × ३$\frac{1}{2}$"। दशा—प्राचीन, पूर्ण, सफेद कागज ।
भाषा—मैथिली । लिपि—मैथिली। विषय— काव्य । प्राप्तिस्थान—बा० मुन्शी मिश्र, चतरिया
(दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—

कल कौशल वह कोइलख गले, कटहर चढ़ि कुरसा एक लेल।
कमलाजल पिवि मेल सन्तोष, कदुरि गाछ पर सितुआ चोष।।

---

१. नवोपलब्ध कवि। इनके सम्बन्ध की सूचनाएँ अप्राप्त हैं। 'मैथिलोगीत-रत्नावली' (पृ० सं० ११) और 'राजतरंगिणी' (पृ० सं० ८७–८८) में भी इनकी चर्चा हुई है। 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' (पृ० सं० १८५) में इन्हें ईसा की सत्रहवीं शती का कवि लिखा गया है।

कमलनयन सं कयल परिहास, करथुगमन वक वहथु वतास ।

खसाक छोकड़ी मुशाक कान, भरि भरि छोकड़ी पवन कें म्रान ।।

तें भर छोकड़ी गेल पुनुकारि, दशदिश तखन पवन गेल पारि ।

कमलवदन करुकेलि कलापं, त्यज ममदूषण जनित विलापम् ।।

म्रवलोकयपिक कूजित कुञ्ज्म्, सरस कुसुमगत मधुकरपुञ्ज्म् ।।

म्रन्त की पंक्तियाँ–

क्षरपि क्षुरपि वक क्षपरा-जाथि सुतहरिणीजलसुहिम्रा खाथि ।

क्षुद्रवृद्धि चढ़ि धयलन्हि खाट क्षुटल घोड भुसभुस वहिठाढ़ ।।

सितिपति से वक कयल परिहास करथु गमन वक वहथु वतास ।

क्षेमं भवतु सदा कवि सूनोर्भणति कथामनुमोदितयूनीः ।।

भानुनाथ इह बहुगुणशाली बहतु सदा गति रटतु वकाली ।।३१।।

पुष्पिका–इति वाताह्वानम् ।।

विषयवस्तु–रति-सम्बन्धी रचना ।

१८. हरिचरित्र : ग्रन्थकार– मनबोध[१] । लिपिकार–महेशदत्तदास । रचनाकाल–×। लिपिकाल–१२०६ फ० । पत्र-सं०–२१। प्र० पृ० पं० लगभग– ८ । प्र० पं० म्र०–३६ । म्राकार– १०" × ४" । दशा– प्राचीन, पूर्ण, सफेद कागज । विषय– भक्तिकाव्य । प्राप्तिस्थान– पं० शशिनाथ मिश्र, तरौनी, सकरी (दरभंगा)।

प्रारंभ की पंक्तियाँ– प्रनवञो हेमगिरि कुमविरेचन, जेंवले कविसभ त्रिभुवनवरन ।

हमद्र कएल म्रछि मनवउ गोट, कृष्णजनम परिनए नहीं छोट ।

कोने परि होए ततकर निखाह, एषन लगिऽम्रछि म्रगम म्रथाह ।

होइतें कदाचिल होम्र पुननीक, नहि को म्रतकरो शंका थीक ।

तें डरे पुनपुन मङ्गल करीम्र, हरिपद कमल हृदए हमे धरिम्र ।

म्रन्त की पंक्तियाँ–मानबोध कवि मन गुनीहरा म्रोल,

कंसक मरन गावि सुनाम्रोल ।

---

१. मिथिला (दरभंगा-जिला, बिहार-राज्य) के 'जमसम-ग्रामनिवासी; १७३१ वि० में वर्तमान; सम्पूर्ण 'हरिवंश' के मैथिली-रूपान्तरकार, भोलन झा नाम से भी ख्यात । विस्तृत सूचना के लिए दे० 'मैथिली गीत-रत्नावली', पृ० सं० ७८,'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (डॉ० ग्रियर्सन), पृ० सं० २०८, 'हिन्दी-साहित्य म्रौर बिहार', प्रथम खण्ड, पृ० सं० १४७-१४८ । यह ग्रन्थ प्रकाशित है। इनके सोहर मिथिला में प्रसिद्ध हैं। दे० 'मैथिली साहित्यक इतिहास', पृ० सं० २४२ ।

हरिक चरित्र नित जे जन गाव,
सुत संपति नानाविध पाव ।
राधाकृष्ण काँ ग्रधिक पिग्रारी,
भक्ति सुमति गति देथु मुरारी ।

पुष्पिका—इति श्री हरिचरित्रे श्री भागवते भाखा नवमो ऽध्यायः ।।९।। दसखत महेशदत्त- दास मोकाम पवरा प्रगना जखलपुर पोथी मीतनमीग्रक वास रोसड़ा प्रगन्ना कसमानगरवासी । लीखापनलेल ग्राना ग्राठ । जो देखा सो लीखा । मम दोष न दिग्रते पण्डीतजन सौं विनती मोरि टुटल ग्रक्षर पढ़व जोरि ।। ग्राश्विन २ कृष्ण त्रितिग्रायां चन्द्र पुस्तक तैयार त्रिति प्रहरे सन् १२०६ साल ।।

विषयवस्तु—नौ ग्रध्यायों में श्रीकृष्णजीवन-चरित-काव्य ।

०

* अज्ञात ग्रन्थकारों के ग्रन्थों की अनुक्रमणिका
** ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका ।
*** विक्रम-शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों के रचनाकाल और लिपिकाल ।
**** महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण।

परिशिष्ट–1

अज्ञात ग्रन्थकारों के ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थों के आगे कोष्ठकों में अंकित संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं।)

क्र० सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचनाकाल	लिपिकाल	विशेष
१	अनवरचन्द्रिका (२, २-क)	अलंकारशास्त्र			
२	अलङ्कारकरणभरण (४)	अलंकारशास्त्र			
३	केरलभाषा-प्रश्नावली (११)	पाशाकेवली			
४	गीता (हिन्दी-टीका) (१४)	दर्शनशास्त्र			
५	गीतासार (१५)	दर्शनशास्त्र			
६	ब्रह्माण्डलीला (१७)	भक्तिकाव्य			
७	भाषापिङ्गल (२९)	छन्दःशास्त्र			
८	भाषाभूषणम् (३२)	अलंकारशास्त्र			
९	मथुरावर्णनम् (३३)	इतिहास			
१०	रससारस (४०)	अलंकारशास्त्र			
११	वेदान्तसार-टीका (५३)	दर्शनशास्त्र		१८२५ वि०	
१२	वैद्यक (५४)	आयुर्वेद		१८८४ वि०	
१३	वैद्यक-ग्रन्थ (५५)	आयुर्वेद	१७८७ वि०		
१४	सत्यनारायणव्रतम-कथा (वंगभाषा) (६३, ६४)	भक्तिकाव्य		१२६४ फ०;	
१५	सुकसागर (६८)	शकुनशास्त्र		१७२२ वि०	
१६	सूर्यपुराण (७४)	भक्तिकाव्य			
१७	हठयोगमंजरी (७५)	योगशास्त्र		१२७२ फ०	

(२) ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थकारों के नामों के आगे की संख्याएँ विवरणान्तर्गत ग्रन्थों की क्रम-संख्याएँ हैं।)

मैथिली-लिपि की हस्तलिखित पोथियों के ग्रन्थकार

०

परिशिष्ट—३

(विक्रम-शताब्दी के ग्रनुसार ग्रंथों के रचनाकाल ग्रौर लिपिकाल)

शताब्दी	इस शताब्दी में रचित पोथियो की संख्या	इस शताब्दी में लिपिबद्ध पोथियो की संख्या
सत्रहवीं	२	x
ग्रट्ठारहवीं	५	५
उन्नीसवीं	२	३२
बीसवीं	3	१५

परिशिष्ट–४

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा ग्रन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाग्रों में उनके उल्लेख का विवरण

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१.	अग्रदास	१. ध्यानमंजरी	१६३२ वि०	१८९४ वि० १८५९ वि० १८५० वि० १९०२ वि०	४०	ना० प्र० स० का १९०० ई० ना० प्र० स० का १९०६–८ ई० ना० प्र० स० का १९२०–२२ ई० ना० प्र० स० का १९२३–२५ ना० प्र० स० का १९२६–२८ ना० प्र० स० का १९२९–३१	७७ १२१ ए० १ बी० ४ ४ ए,बी,सी, ३ ए,बी,सी,	१--इनकी ग्रन्य दो रचनाएँ–कुंण्डलिया या हितोपदेश ग्राख्याना (१६९६ वि०)–भी खोज में मिला है। दे० ना० प्र०स० का खो० वि० १९०३ ई०, ग्रं० सं ६०; खो० वि० १९०६–८, सं०१२१ ए (लि०का० १८३४ वि०), खो०वि०-१९२०–२२, सं०१ए, बि० रा० भा० प० (पटना) खा० वि०, खं० २, ग्रं० सं० १०४ ।

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
						विन्ध्य खा०वि० (ना०प्र०स० का)		*सरस्वती-भंडार, किला,
						(विन्ध्य-शिक्षा, वर्ष-४, ग्रंक-३)	७८०	रीवाँ में संकलित
						,, १९०६–८ ई०	१२१ ए	
						,, १९२६–२८ ई०	४ सी	
						,, १९२६–२८ ई०	१६७, १९४	
				१८९१ वि०		हि० सा० स० पं०–पांडु-		
				१९०४ वि०		लिपियाँ, प० ४१२	३५९४, १९६९	
				१९१५ वि०		ह० लि० ग्रं० सू० (रा०	१९३९–१९४१,	
				१८६४ वि०		प्रा० वि० प्र०, जोधपुर)	१८५५, २७२४	
				१९२२ वि०		भाग २, पृ० सं० २११, २३३	४१५० ५४५५	
						वि० यू० ग्रं० सं० सू०	(१) ६०८८	
						(रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर)	६३६४, ७७५१	
						पृ० सं० १०५, ११, २१, ९८;	(१) १६० (५)	
						रा०हि०ह०लि०ग्रं० खो०, भाग ३,	पृ० सं० १८	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
						ख० ह० लि० ग० स०	पृ० सं० १६०,	
						(रा० प्र० म०) भाग- 1	२६३, २६९, २७१	
							२७९, २८२, २८४	
				१८६२ वि०		वि० रा० भा० प० (पट०)		
						ख० ४	३६२	
						६	२२, २२ (क)	
२.	ग्रानन्द कवि	१. कोकसार		१७३४ ई०	४७	ना० प्र० स० का० १९०२	५	२ (क) ग्रन्थकार की ग्रन्य रचनाग्रों
				१७४८ ई०		ना० प्र० स० का० १९०६	८	–कोकमंजरी, कोकविलास ग्रौर
				१७६५ ई०		ना० प्र० स० का० १९१७-१९	९७	ग्रासनमंजरीसार–की बारह
				१७८१ ई०		ना० प्र० स० का० १९२३-२५	१३ डी ई,जी,	प्रतियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा
				१८४६ ई०			एच, ग्राइ, जे	(काशी) को खोज में मिली है।
				१८४३ ई०				
				१८५३ ई०				
				१८८४ ई०				
				१९०१ ई०				
				१८१७ ई०		ना0 प्र0 स0, का १९१९-३१	१० सी.डी.ई.	
				१८३५ ई०			एफ.जी. एच.	
				१८६९ ई०			ग्राई. जे.	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
४.	केशवदास	१. कविप्रिया		१९०४ वि०	२७	ना० प्र०, का० १९००	५२	निर्भयज्ञान, हनमानबोध, निरंजना-गोष्ठी, मूलग्यान, जंगीसमाज, सरवंगसार, ग्यानसागर, धरमदास-बोध, सेख तकी के गोष्ठी, लोकपांजी (कबीर ग्रौर धर्मदास की गोष्ठी) कबीर के भक्तमाल की टीका, पुष्प महातम —की पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। विवरण के लिए दे० खो० वि०, खं० १-२३ (क), २३ (ख), ८०; खं० ३-१४१; (ख) ४, ग्रं० सं० १५१, १६१ क, १६२-ग, १६४, १५२, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६० क, ख, ग, १६१ क, ख, ग, १६२-क, ख, ग, १६३, १३५, १५३, । दे०
						ना० प्र०, का० १९०२	१८३	
						ना० प्र०, का० १९०४	१२५, १२६	
				१७६९ वि०		ना० प्र०, का० १९०७	९६ ए	
						ना० प्र०, का० १९२०-२२	८२ ए, बी	
						ना० प्र०, का० १९२३-२५	२०७	
				१८२२ वि०		ना० प्र०, का० १९२३-२८	२३३ बी, सी, डी	
						ना० प्र०, का० १९३०-३२	१९२ जी, ई	
				१७६९ वि०		पाराडुलिपियाँ (पृ० सं० २९७)	१९३१	
				१९३१ वि०		पाराडुलिपियाँ (पृ० सं० २९७)	२०१८	
			१६५८ वि०			पाराडुलिपियाँ (पृ० सं० २९७)	२९७६	
						पाराडुलिपियाँ (पृ० सं० २९७)	१२८६	
						पाराडुलिपियाँ (पृ० सं० २९७)	१६१०	
				१७४० वि०		रा० में० हि० ग्रं० की खो (पृ०-१२१) २४		

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
						(अनताणी संग्रह-३ प्रतियाँ)		खं० ४ की पृ० सं० ६१, ६२ बि० रा० भा० प० (पटना) के खं० ६ में एक पाराडुलिपि-'कबीरपदावली'- का विवरण द्रष्टव्य है। दे० पृ० सं० १०, ग्रं० सं० ९ । हि० सा० स० (प्रयाग) के संग्रहालय में भी कवि की पाण्डुलिपियाँ-कबीर का तान, कबीर-गोरख गोष्ठी, कबीर परम-हंस-संवाद, कबीर-रैदास-संवाद, कबीररवाणी (लि० का १८५५ वि०), ३ प्रतियाँ; कबीर साहब का चौतीसा, चितामणि, चेतावनी, निरभैज्ञान (१२५३ फ०, बीजक रमैनी (१८९९ वि०), विज्ञानस्तोत्र, रेखता (१९२७ वि०) शब्दसाखी
				१८८३ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना)		
						बि० रा० भा० प० खं० २	१०	
				१९०० वि०		बि० रा० भा० प० खं० २	११	
						बि० रा० भा० प० खं० ४	५००, ५०१, ५०२	
						बि० रा० भा० प० खं० ६	८	
		२. रसिकप्रिया		१८१४ वि०	२१	ना० प्र० स० का० १९०३	८९	
						ना० प्र० स० का० १९०४	१२८	
						ना० प्र० स० का० १९१७-१९	९६ बी	
				१९१७ वि०		ना० प्र० स० का० १९२०-२२	८९ बी	
						ना० प्र० स० का० १९२३-२५	२०७	
				१९०८ वि०		ना० प्र० स० का० १९२६-२८	२३३ एफ, जी	
						ना० प्र० स० का० १९२९-३१	१९२ एफ	
				१७३० वि०		रा० के जे० शा० भं० की ग्रं० सू० (पृ० १००) गु० २२२/९१० (१०२) वेष्टन नं० ३२५		

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१८४८ वि०		पाण्डुलिपियाँ पृ० सं० २९६	१६३५	ग्रंग, सुमिरन कौ ग्रंग (१९१२ वि०) -सुरक्षित हैं। दे० 'पाण्डुलिपियाँ', पृ० सं० ४-३९४ ।
				१८६७ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना)	८६, १००	
						बि० रा० भा० प० खं० १		
				१९१६ वि०		बि० रा० भा० प० खं० २	५६, ५७	
				१८५४ वि०		बि० रा० भा० प० खं० ४	४९७, ४९८, ४९९	
			१६४८ वि०			बि० रा० भा० प० खं० ६	४१, ४१(क), ४१(ख), ४१(ग)	
४.	केशवदास	३. विज्ञान गीता		१८९९ वि०		ना० प्रे० स०, का० १९००	५५	
				१८९१ वि०		ना० प्रे० स०, का० १९०४	१२७	
						ना० प्रे० स०, का० १९२०-३२	८९ सी	
						ना० प्रे० स०, का० १९२३-२५	२०७	
						ना० प्रे० स०, का० १८२९-२८	२३३ ए	
				१८४९ वि०		ना० प्रे० स०, का० १९२९-३१	१९२ जी	
						बि० रा० भा० प० (पटना)		
						बि० रा० भा० प० खं० १	७३, ९७	
				१२६५ फस०		बि० रा० भा० प० खं० ६	४९	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामचरित-मानस		१६४७ वि०		ना० प्र० स० का० १९००	१	
				१६०४ वि०		ना० प्र० स० का० १९०१	२२	
				१६७४ वि०		ना० प्र० स० का० १९०१	२८	
				१७६७ वि०		ना० प्र० स० का० २९०३	१६७, १६८, १६९	
				१८१८ वि०		ना० प्र० स० का० १९०४	१४४	
				१३०४ वि०		ना० प्र० स० का० १९२०–२२	१९८ ए	
				१८१३ वि०		ना० प्र० स० का० १९२३–२५	४३२	
				१८७८ वि०		ना० प्र० स० का० १९२६–२८	४८२ ए-जेड तक	
				१८७९ वि०		ना० प्र० स० का० १९२९–३१	३२५ ए-जेड ग्रौर	
				१७९० वि०			३२५ ए २ से ग्रो २ तक	ग्रर्थात्, कुल ४१ पाण्डुलिपियाँ
				१८५६ वि०				
				१७६० वि०				
				१८८३ वि०				
				१८८७ वि०				
				१९०४ वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१८६२ वि०				
				१९०२ वि०				
				१७९० वि०				
				१७५६ वि०				
				१७६० वि०				
				१८८३ वि०				
				१८८७ वि०				
				१९०४ वि०				
				१८६२ वि०				
				१९०२ वि०				
				१७९० वि०				
				१८५६ वि०				
				१८७९ वि०				
				१७६० वि०				
				१८७९ वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामचरित-मानस		१८८३ वि० १८८७ वि० १९०४ वि० १९०६ वि० १८६२ वि० १८७९ वि० १८८७ वि० १९०२ वि० १९०४ वि० १७९० वि० १८२५ वि० १८७२ वि० १८७९ वि० १८८३ वि० १८८२ वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामचरित-मानस		१८७८ वि०				
				१८८७ वि०				
				१९३२ वि०				
				१७६० वि०				
				१८७२ वि०				
				१८७८ वि०				
				१८८७ वि०				
				१९०६ वि०				
				१७६० वि०				
				१९०२ वि०				
				१८५५ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	१९९४	
				१९०६ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	३०८७	
				१९१७ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	२२३२	
				१९२६ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	१५६४	
				१९२६ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	२१४८	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामचरित-मानस		२७२७ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	१९४५	
				२७२९ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ०० ३९९-४०५)	१२७५	
				१७३८ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ०० ३९९-४०५)	१६५४	
						पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	१७५, ९९८,	
						पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	१२८८, १६०६,	
						पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	१६६८, २१७४,	
						पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	३०४१, ३३६८,	
						पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	३३८६, १८१७ वि०	
						पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	३७२१, ३७२४,	
						पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	२०४६	
				१८५९ वि०		पाण्डुलिपियाँ (पृ० ३९९-४०५)	१९४४	
				१८८५ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	१६०२	
				१८९० वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२२५४	
				१९०३ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२७३, २५४०,	
						पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२०८६, २२५५	बालकांड
				१८२७ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	१८९९	अयोध्याकाण्ड
				१७९१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	१८९०, २२६० ३०१५, ३०२४	अयोध्याकाण्ड

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
				१८२७ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२०४४	अराण्यकांड
				१८८१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	३२६५	अराण्यकांड
				१८९० वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२१८२	अराण्यकांड
				१९४९ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२०८२, २०८३	अराण्यकांड
				१८६० वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	३७९२	किष्किघाकांड
				१८६६ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२१८०	किष्किघाकांड
				१८८१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	१९०६	किष्किघाकांड
				१८९४ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२०२०	किष्किघाकांड
				१८९५ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२०८५	किष्किघाकांड (कैथी लिपि)
				१९३१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	१८४८	किष्किघाकांड
				१८६० वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२२८३	किष्किघाकांड
				१८६६ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२९६१, २०४८	किष्किघाकांड
				१८६६ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२१५३, २६८४	किष्किघाकांड
				१८६६ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	४२५२, २७००	सुन्दरकांड
				१८६९ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२१८१	सुन्दरकांड
				१८९५ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	१९०५	सुन्दरकांड
				१९५० वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२२५३, १४०८	सुन्दरकांड (कैथी लिपि)

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामचरित मानस		२८६१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२८४९	सुन्दरकांड
				२८९२ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२०५०	सुन्दरकांड
				१९०९ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२१५१, १६२३, ११४७	सुन्दरकांड
						पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२१८३	लंकाकांड
						पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२२३७	लंकाकांड तथा बालकांड
						पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	३३४५	लंकाकांड तथा (कैथी-लिपि)
						पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२१४२, ३३६८, २२८२	लंकाकांड तथा (कैथी-लिपि)
						पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	३७०५	उत्तरकांड
						पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२१८४	उत्तरकांड
				१८३५ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	३७२३	उत्तरकांड
				१८६१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	१४०९	उत्तरकांड (कैथी-लिपि)
				१९६६ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	१८९३	उत्तरकांड
				१८७४ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	३७२४	उत्तरकांड
				१९०५ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	३३५१	उत्तरकांड
				१९०९ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४०१)	२२५७, १४१७, ३३४३	उत्तरकांड
							३३५०	उत्तरकांड (कैथी-लिपि)

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामचरित मानस		१८५१ वि०		रा० में हि० के ह० लि० ग्र० की खो० (तृतीय भाग)	पृ०सं० १०२, ग्रं०१०	पृ० सं०– बाल० १११, अयो० ९१, अराणय० २३, किष्किन्धा० २०, सुन्दर० १९, लंका० ४४, उत्तर० ४४।
				१८५८ वि०			पृ०सं० १०२, ग्रं०१०	बालकांड का लिपिकाल १८०५ वि०;
				१९२२ वि०			२, ३, ७, ५, १	दोनों प्रतियाँ उदयपुर-निवासी
				१९०२ वि०		बि० रा० भा० प० खं० १	८, ४ १, ९९	केवलराम दादूपंथी के पास सुरक्षित।
				१९२२ वि०				
				१८४७ वि०				
				१८८२ वि०				
				१८५९ वि०				
				१८६४ वि०				
				१८३६ वि०				
				१९०९ वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामचरित मानस		१८८७ वि०; १८७१ वि०; १८५८ वि०; १९१७ वि०; १८८८ वि०; १९०३ वि०; १९१७ वि०; १९२२ वि०; १८९३ वि०; १९६९ वि०; १९१७ वि०; १९४१ वि०; १८५१ वि०; १८८१ वि०; १८५५ वि०; १९२१ वि०;		बि० रा० भा० प० (पटना) बि० रा० भा० प० खं० ३ बि० रा० भा० प० खं० ४	१०४, १२१, ११८, १२७ १२९, १३०, १३८ १९७ से २६३ तक	ग्रर्थात्, कुल ६६ पाण्डुलिपियाँ

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामचरित मानस		१९०५ वि०;				
				१९०५ वि०;				
				१८८५ वि०;				
				१२२५ वि०;		बि० रा० भा० प० (पटना) खं० ३	४६	उत्तरकांड
				१८५४ वि०;		बि० रा० भा० प० (पटना) खं० ३	४६ (क)	उत्तरकांड
				१९०० वि०;		बि० रा० भा० प० (पटना) खं० ३	४६ (ख)	उत्तरकांड
		२. रामगीतावली		१८०२ वि०;		ना प्र० स० का० १९०४	६०	
				१८९७ वि०;		ना प्रा० स० का० १९०९-११	३२६ जी	
				१८२४ वि०;		ना [illegible] स० का० १९१७-१९	१९८ सी	
				१९०७ वि०;		ना प्रा० स० का० १९२०-२२	४३२ एच	
				१८८० वि०;		ना प्रा० स० का० १९२३-२५	४८२	
				१८८४ वि०;		ना प्रा० स० का० १९२६-२८	३२५ ग्रार, एस	
				१७८८ वि०;		ना प्रा० स० का० १९२९-३१	३२५ एस २	
				१९१० वि०;			३२५ टी २	
				१८८३ वि०;			३२५ यू २	
				१९२१ वि०;			३२५ बी २.	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
५.	तुलसीदास	१. रामगीतावली		१९०५ वि०,		बि० रा० भा० प० (पटना)	२७, ८७, ९४	गीतावली नाम से भी यह रचना अभिहित हुई है।
				१९७६ वि०,		ब० रा० भा० प० (पटना)खं० २		
						बि० रा० भा० प० (पटना)खं० ४	२७५, २७६,	
						बि० रा० भा० प० (पटना)खं० ६	२७९,२८१,४४	
				१२४१ वि०,		बि० रा० भा० प० (पटना)खं० ६	४४ (क)	
		२. हनुमान बाहुक		१८०२ वि०,	१९	ना प्र० स० का० १९०२	६०	
						ना प्र० स० का० १९०३		
				१८७१ वि०,		ना प्रा० स० का० १९०६-८	१७०	
				१८६० वि०,		ना प्रा० स० का० १९०९-११	२४५ वी, सी	
						ना प्रा० स० का० १९२०-२२	२२३ डी, ८५०	
						ना प्रा० स० का० १९२३-२५	१९८ डी	
						ना प्रा० स० का० १९२६-२८	४२२	
						ना प्रा० स० का० १९२९-३१		
						बि० रा० भा० प० (पटना)खं० ४	४८२ टी,यू,वी	
						बि० रा० भा० प० (पटना)खं० ६	२२५ जेड २	
				१९२४ वि०,		बि० रा० भा० प० (पटना)खं० ६	२६८,२६९,२७०	
						बि० रा० भा० प० (पटना)खं० ६	७६,७६(क),७६(ख)	
				१९०९ वि०,		बि० रा० भा० प० (पटना)खं० ६	७६ (ग)	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
६.	दूलह	१. कंठाभरण			७	ना० प्र० स० का० १९०३	४३	कविरचित 'दूलहविनोद' (अभय
				१८७६ वि०		ना० प्र० स० का०१९०६-८	१६२	जैन ग्रन्थालय में सुरक्षित) रचना
				१८९७ वि०		ना० प्र० स० का०१९०९-११	७७	भी खाज में मिली है। दे०-
				१९१५ वि०		ना० प्र० स० का०१९२०-२२	४५ ए, बी	रा० में हि० के ह० लि० ग्रं० की
						ना० प्र० स० का०१९२३-२५	१०७	खो० (द्वतीय भाग), पृ० सं० २०,
				१९०९ वि०		बि०रा० भा० प० (पटना) खंड ६	७	ग्रं०सं० ११।
७.	नन्दास	१. अनेकार्थ-मंजरी	१६२४ वि०	१८०२ वि०	३८	ना० प्र० स० का० १९०२	५८	यह ग्रंथ 'अनेकार्थनाममाला'
				१८०६ वि०		ना० प्र० स० का०१९०३	१५३	नाम से भी उल्लिखित हुआ है।
				१८०१ वि०		ना० प्र० स० का०१९०९-११	२०८ डी०	
				१८४९ वि०		ना० प्र० स० का०१९२०-२२	११३ डी, ई	
						ना० प्र० स० का०१९२६-२८	३१६ ए से जी तक	७ प्रतियाँ
				१८९४ वि०		ना० प्र० स० का०१९२९-३१	२४४ ए,बी,सी	
				१९०१ वि०		पा०लि० (पृ० सं० २००)	२०१७	
				१९२२ वि०		पा०लि० (पृ० सं० २००)	९०२	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
७.	नन्ददास	१. अनेकार्थ-	१६२४	१८०६ वि०	३८	रा० के जै० शा० भं० की	पृ०सं०२९, ग्रं०सं०१६	उदयपुर-निवास कविराव मोहन-
		मंजरी	वि०	१९०० वि०		ग्रं० सू० (भाग २)	प्रति-१३५, वेष्टन-११	सिहजी के पास प्राप्य।
						रा० में ह० कि० ग्रं० की	प०सं०उ०; प्र०-३१६	
						खो० (भाग ३)	पृ०सं०८, ग्रं०सं०१६	
						पृ०सं०२१, ग्रं०सं०२८ खो०(भाग ३)	पृ०सं० १५०, ग्रं०सं०६१	(दो प्रतियाँ)
				१८६१ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना)	पृ०सं० २५०, ग्रं०सं०६१	पद्य-संख्या ११९; उदयपुर-
				१८५२ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० १	६	निवासी कविराव मोहनसिंह तथा
						बि०रा०भा०प० (पटना) खं० २	८८, १२४	केवलराम दादूपंथी के पास प्राप्त।
				१८५८ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ३	१२३, १३१	
				१८४१ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ४	५३०	
				१८९३ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ६	३, ३ (क)	
				१८१२ श०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ६	३ (ख)	
				१७५७ श०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ६	३ (ग) २४,	
						बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ६	२४ (क), २४ (ख)	
				१७७१ श०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ६	२४ (ग)	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
८.	नरोत्तमदास	१. सुदामाचरित	१६१० वि०	१८१४ वि०	१३	ना० प्र० स० का० १९००	२२	
				१८३० वि०		ना० प्र० स० का० १९०६-८	२०१	
						ना० प्र० स० का० १९१७-१९	१२४	
						ना० प्र० स० का० १९२०-२२	११७	
						ना० प्र० स० का० १९२३-२५	३००	
						ना० प्र० स० का० १९२६-२८	३२४ ए,बी,सी २४८	आगरा जिले के खैरागढ़-स्थित भैसन-ग्रामवासी मुंशी भोला-रामजी के पास प्राप्य।
				१८६० वि०		ना० प्र० स० का० १९२९-३१		
			१६१० वि०	१८९७ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ४३६)	१३२६, १२६१ १३८८	इनकी एक 'नाम-संकीर्त्तन' नामक संस्कृत-रचना भी प्राप्त हुई है।
९.	पद्माकर	१. गङ्गालहरी	१७५३ ई०	१८५३ वि०	८	बि०रा०भा० प० (पटना) खं० ६	७०	
						ना० प्र० स० का० १९२०-२२	१२३	
						ना० प्र० स० का० १९०९-११	२२० बी	
						ना० प्र० स० का० १९२६-२८	३३८	
				१९०८ वि०		ना० प्र० स० का० १९२९-३१	२५७ ए	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
९.	पद्माकर	१. गङ्गालहरी			८	ना० प्र० सं० का० १९२९-३१	२५७ बी	
				१९३२ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३६७	१६७२	
				१९२० वि०		बि० रा० भा० (पटना)		
						बि० रा० भा० (पटना) खं० २	१५	
						बि० रा० भा० (पटना) खं० ६	१३	
१०.	बिहारीलाल	१. बिहारीसतसई		१७१८ वि०	७८	ना० प्र० सं० का० १९०१	२७, ५२, ७५	
				१७८० वि०		ना० प्र० सं० का० १९०२	८	
				१७६६ वि०		ना० प्र० सं० का० १६०३	१३३, १३५	
				१७८२ वि०		ना० प्र० सं० का० १९०६-८	३ ए, ९९ ए	
				१७९३ वि०		ना० प्र० सं० का० १९२०-२२	२० ए, बी	
				१७१७ वि०		ना० प्र० सं० का० १९२३-२५	६२ ए-जे=१० प्रतियाँ	
				१८०५ वि०		ना० प्र० सं० का० १९२६-२८	६८ ए-ई=९ प्रतियाँ	
				१७६२ वि०		ना० प्र० सं० का० १९२९-३१	५ ए, बी सी प्रतियाँ	
				१८९० वि०		ना० प्र० सं० का० १९३८-४०	११९	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१०.	बिहारीलाल	१. बिहारीसतसई		१७८० वि०	७८	पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	३०६०, २१६६	
				१८२५ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	२१९९	
				१८३१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	३७३५	
				१८४९ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	११३९	
				१८७५ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	२०७३	
				१९१७ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	२२०८	
				१९२९ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	९६४, २५५०	
						पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	२०११, २९३०, ११३,	
						पा० लि० (पृ० सं० ३१७)	१६११, २०५६, २१६०	
						रा० के जै० शा० भं० की	२६२	वेष्टन-सं० २४७
						गं० सू०	९६४	गुटका-सं० १२६, वेष्टन-सं० ३४७
						(द्वितीय भाग), पृ० सं० २५	१४६२	वेष्टन-सं० १६४३
				१८३४ वि०		(द्वितीय भाग), पृ० सं० १०३	४२ (प्रति १)	उदयपुर के जगदीश चौकवासी
						(द्वितीय भाग), पृ० सं० २५४	४२ (प्रति १)	श्री स्वरूपलाल से प्राप्त
				१७४३ वि०		रा० में० हि० के० ह० लि०	४२ (प्रति २)	उदयपुरवासी दादूपंथी स्वामी
						ग्रं० की खो०		के वलराम से प्राप्त।

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१०.	बिहारीलाल	१. बिहारीसतसई				(तृतीय भाग) पृ० सें० १३४	४२ (प्रति ३)	उदयपुर के भींडरवासी जगन्नाथ
				१७३८ वि०	७८	(तृतीय भाग) पृ० सें० १३४	४२ (प्रति ४)	वैरागी से प्राप्त।
				१८६५ वि०		(तृतीय भाग) पृ० सें० १३४	४३	उदयपुर-निवासी राव मोहनसिंह
				१८१६ वि०		(तृतीय भाग) पृ० सें० १३४	७२	के पास संकलित ।
				१८४४ वि०		(तृतीय भाग) पृ० सें० १३४	४२,४३, ४५२,	हरिचरणदास-कृत टीका-सहित
				१८६५ वि०		(तृतीय भाग) पृ० सें० १३४	४५३, ४५४,	उदयपुर निवासी राव मोहनसिंह
				१७१२ वि०		(तृतीय भाग) पृ० सें० १३४	४५५, ४५६,	से प्राप्त ।
						बि० रा० भा० प० (पटना)	६०, ६०(क), ६०(ख)	
				१७१३ वि०		खं० १	६० (ग), ६० (घ),	
				१८१३ वि०		बि०रा०भा० प० (पटना) खं० २	६० (ङ), ६० (च),	
				१८५७ वि०		बि०रा०भा० प० (पटना) खं० ३	६० (छ), ६० (ज),	
				१८७९ फ०		बि०रा०भा० प० (पटना) खं० ४	६० (झ), ६० (ञ),	
				१२४६ फ०		बि०रा०भा० प० (पटना) खं० ६	६० (ट), ६० (ठ)	
				१२६३ फ०		बि०रा०भा० प० (पटना) खं० ६		
				१७१२ श०		बि०रा०भा० प० (पटना) खं० ६		
				१७४१ श०		बि०रा०भा० प० (पटना) खं० ६		
				१८६० वि०		बि०रा०भा० प० (पटना) खं० ६		

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१०	बिहारीलाल	१. बिहारीसतसई		१२४८ फ०	७८	वि० रा० भा० प० (पटना) खं० ६	६० (ड)	नान्हाव्यास (१८७८ वि०)-रचित संस्कृतटीका-सहित।
११	मोतीराम	१. रसराज			२१	ना० प्र० स० का १९००	४०	कवि की अन्य चार-
						ना० प्र० स० का १९०१	६७	लखनशृंगार, ललितललाम,
						ना० प्र० स० का १९०६-८	१७६ ए	वृत्तकौमुदी और सहित्यसार-
						ना० प्र० स० का १९२०-२२	१०५ बी	ग्रन्थों के हस्तलेख काशी-नागरी-
						ना० प्र० स० का १९२३-२५	२७६	प्रचारिणी सभा को खोज में
						ना० प्र० स० का १९२६-२८	३०० डी० से जे तक=७ प्रतियाँ	मिले हैं।
				१९२१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० २७६)	२८६२,१	
				१९२५ वि०		पा० लि० (पृ० सं० २७६)	११०२, १८९७, १६५६	
				१८८० वि०		रा० में हि० के ह० लि० ग्रं०	५०	उदयपुर-निवासी राव मोहन-
				१९२१ वि०		की खो० (तृतीय भाग)	५४	सिंह के पास संकलित।
				१८८१ वि०		(पृ० सं० २४१)	४५९	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
११	मोतीराम	१. रसराज			२१	वि० रा० भा० प० (पटना)	३८	
						वि०रा०भा० प० (पटना) खं० २	३८ (क)	
						वि०रा०भा० प० (पटना) खं० ४	६१	
				१८१४ वि०		१७६७ श०भा०प०(पटना) खं०६	२१७ ए	
१२	भिखरीदास	१. काव्यनिर्णय		१६६२ वि०		१८७६ श०भा०प०(पटना) खं०६	१७ बी०	
				१८९६ वि०	१४	ना० प्र० स० का० १९०३	५५ डी० ई०	
						ना० प्र० स० का० १७२०-२२	६१ई० से आई	
						ना० प्र० स० का० १७२०-२२	तक=५ प्रतियाँ	
						ना० प्र० स० का० १७२३-२५		
						ना० प्र० स० का० १७२६-२८		
				१८९९ वि०	१४	ना० प्र० स० का० १९२९-३१	४४	
				१९०४ वि०		पा० लि० (पृ० सं० २८९)	४२३८, १६३७, ३४८९	
				१८०८ वि०		वि०रा०भा० प० (पटना) खं० ६	१०	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१३	सबलसिंह	१. महाभारत-टीका	१७२७ वि०		१०	ना० प्र० स० का० १९०६-८	६६	
						ना० प्र० स० का० १९२३-२५	६३, ३२४ ए,बी	
						ना० प्र० स० का० १९२६-२८	४११ बी,सी,डी	
				१९२९ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना) खं० ३	१३४	
				१२११ वि०		खं० ४	३८८	
						खं० ६	३४	
१४	सुखदेव मिश्र	१. नखसिख	१८२८ वि०	१८८५ वि०	२	ना० प्र० स० का० १९०९-११	३०७ सी	कवि की अन्य छह रचनाएँ-वृत्तविचार, छंदविचार, अध्यात्म-प्रकाश, फाजिल अली-प्रकाश, रसार्णव और पिंगल-भी खोज में मिली हैं।
						बि० रा० भा० प० (पटना) खं० ६	२३	
		२. वृत्तविचार		१६३१ वि०	७	ना० प्र० स० का० १९५६-८	२४० ए	
				१७९३ वि०		ना० प्र० स० का० १९१७-१७	२८३ बी	
						ना० प्र० स० का० १९२०-२२	१८७ ई	
						ना० प्र० स० का० १९२३-२५	४१२	
						ना० प्र० स० का० १९२६-२८	४६४	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१४	सुखदेव मिश्र	२. वृत्तविचार		१८९१ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३०३)	२१६०	
				१८८० वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ६	५८	
१५	गुन्दरदास	१. सवैया	१७४६ वि०	१८७० वि०	१०	ना० प्र० स० का १९०२	२५, २६	
						ना० प्र० स० का १९०६-८	२४२ ए	
						ना० प्र० स० का १९१२-१६	१८४ बी	
						ना० प्र० स० का १९२३-२५	४१५	
						ना० प्र० स० का १९२६-२८	४६९ बी,सी,डी	
				१९०७ वि०		पा० लि० (पृ० सं० ३९५)	१८२२-१०	
						बि०रा भा प० (पटना) खं० ६	७१, ७१ (क)	
१६	हरिचरण-दास	१. हरिप्रकाश (टीका-बिहारी सतसई)	१७६६ वि०	१८२४ वि०		ना० प्र० स० स० का १९०४	४	
						ना० प्र० स० स० का १९१७-१८	७१	
						ना० प्र० स० स० का १९२३-२५	१५३	
				१८६५ वि०		रा० में हि० के ह० लि० ग्रं० की खो० (तृतीय भाग पृ० सं० १३५, १३६	४३	उदयपुर-निवासी राव मोहनसिंह के पास संकलित।

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
					५	बि० रा० भा० प० (पटना) खं० ६	७७	
१७	हलधरदास	१. सुदामाचरित		१९११ वि०		ना० प्र० स० का० १९०६-८	५९	
						ना० प्र० स० का० १९०९-११	१०४	
				१८८२ वि०		ना० प्र० स० का० १९२६-२८	१६३	
				१८०० वि०		बि० रा० भा० प० (पटना) खं० २	२५	
				१८४० वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ३	१४६	
				१८८४ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ४	३३१, ३३२, ३३३	
				१८६७ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ६	६८	